

**TEXT PROBLEM
WITHIN THE
BOOK ONLY**

UNIVERSAL
LIBRARY

OU_182997

UNIVERSAL
LIBRARY

OUP—23—44—69—5,000.

OSMANIA UNIVERSITY LIBRARY

Call No. **H81**
C54D Accession No. **P. G. H2029**

Author **चौपडा, हीराकाळ**

Title **डा. इकबाल और उनकी शायरी.**

This book should be returned on or before the date
last marked below. **1956**

डा० इकबाल

और

उनकी शायरी

हीरालाल चोपड़ा

हिन्दी प्रचारक पुस्तकालय

बनारस ।

प्रकाशक :

श्रीमप्रकाश बेरी

हिन्दी प्रचारक पुस्तकालय

पो० बक्स नं० ७०, ज्ञानकपी,

बनारस ।

प्रथम संस्करण : ११००

१९५६

मूल्य : साढ़े तीन रुपये

आवरण :

कांजिलाल

मुद्रक :

श्री कृष्णचन्द्र बेरी

विद्यामन्दिर प्रेस (प्राइवेट) लि०,

मानमन्दिर, बनारस ।

६६. अलीगढ़ विद्यालय के छात्रों

के नाम ... १५१

६७. गजलियात ... १५२

६८. गजलियात (क्रमशः) ... १६०

६९. मार्च १९०७ ई० ... १६५

७०. गजलियात ... १६६

७१. जरीफाना (हास्य-रस) ... १७२

७२. जर्ब कलीम से ... १७८

गजल, जमानए हाजिर का इन्सान, तालिब-इल्म
(विद्यार्थी) ।

७३. जावीद से ... १८०

गजलें. एक सवाल, आजादिए निसवाँ, इबलीस का
फ़रमान अपने सियासी फ़रज़िदो के नाम ।

७४. बाले जबरील ... १८३

७५. फरिश्तों का गीत ... १८८

७६. फ़रमाने खुदा (फ़रिश्तों से) ... १८३

७७. एक नौजवान के नाम ... १८४

७८. साक्नीनामा ... १८४

७९. जमाना ... २०१

८०. फ़रिश्ते आबम को जन्नत से

दखसत करते हैं ... २०२

८१. रुहे-अर्जी आदम का इस्तक़बाल				
करती है	...	...	...	२०३
८२. अपने पुत्र जावीद के नाम लन्दन				
से एक पत्र	...	...	...	२०४
८३. अरमुगाने हिजाज़ से	...	...	...	२०४
एक वृद्ध बलोच की शिक्षा अपने पुत्र को ।				
८४. रुबाइयात	...	...	...	२०५
८५. सर अकबर हैदरी, (मुख्य-मंत्री				
हैदराबाद दक्कन) के नाम	...	...	...	२०८

विषय-सची

पृष्ठ संख्या

१. संक्षिप्त जीवनी	...	...	...	१
२. इक़बाल की शायरी	...	...	...	५
शायरी इक़बालकी नज़र में, मनुष्य भी एक स्रष्टा है, अक्ल और इश्क़, इक़बाल की शायरी का ध्येय, इक़बाल की काव्य-कला, नवयुवको से, इक़बाल की आत्म-जिज्ञासा, इक़बाल का आत्म-समर्पण दर्शन, पश्चिमी विज्ञान के बारे में इक़बाल का मत, भारतवर्ष, हज़रत मुहम्मद साहब के साथ इक़बाल का प्रेम, इक़बाल का प्रेमसंदेश : व्यक्ति और समाज के लिये, डा० इक़बाल का राम प्रेम ।				
३. प्राक्कथन	...	...	...	३३
अल्लामा इक़बाल (स्वर्गीय शेख सर अब्दुलकादिर, बैरिस्टर एट-लॉ, की नज़र में) ।				
४. हिमालय	..	...	...	४६
५. भारतीय बच्चों का राष्ट्रीय गान	...	...	...	५२
६. तरानए हिन्दी	...	...	...	५३
७. नया शिवाला	...	...	...	५४
८. वतनीयत (देशभक्ति वाद)				

६. तस्वीरे दर्द	...	...	...	५६
१०. स्वामी रामतीर्थ	...	...	...	६३
११. राम	...	...	...	६४
१२. नानक	...	...	...	६४
१३. गुलाम क़ादिर रूहैला	...	...	...	६५
१४. फ़ल्सफ़ाए ग़म (शोक-दर्शन)	...	...	...	६६
१५. वालिदा मर्हूमा की याद में	...	...	...	७०
१६. हुमायों (मि० जस्टिस शाह दीन मर्हूम)	...	...	...	७८
१७. कवि दाग़	...	...	...	७९
१८. मिर्जा ग़ालिब	...	...	...	८१
१९. शेक्सपियर	...	...	...	८३
२०. नालए फ़िराक़ (आर्नल्ड की याद में)	...	...	...	८४
२१. सर सय्यद का समाधि शिला-लेख	...	...	...	८५
२२. अब्दुलक़ादिर के नाम	...	...	...	८७
२३. मोटर	...	...	...	८९
२४. गुले रंगीन	...	...	...	८९
२५. अह्मदेतिफ़ली (शिशुकाल)	...	...	...	९१
२६. अब्बे कोहसार (पर्वत मेघ)	...	...	...	९१

२७. बच्चे की दुआ	...	...	...	६३
२८. परिन्दे की फ़रियाद	...	...	...	६३
२९. आफ़ताब (सूर्य-गायत्री का अनुवाद)	...	...	...	६४
३०. एक आज़ू	...	...	...	६५
३१. माहे नौ (नव-शशि)	...	...	...	६७
३२. शायर	...	...	...	६८
३३. मौजे दरिया	...	...	...	६९
३४. रुस्त ए बज्मे जहाँ !	...	...	...	६९
३५. जुगनू	...	...	...	१०१
३६. सुबह का सितारा	...	...	...	१०३
३७. रावी-तट	...	...	...	१०५
३८. इस्लाम	...	...	...	१०६
३९. आत्म-ज्ञान	...	...	...	१०७
४०. जनतंत्रवाद	...	...	...	१०८
४१. मुहब्बत	...	...	...	१०८
४२. हक्कीकते हुस्न (जर्मन भाषा से अनुवाद)	...	...	...	११० ११०
४३. आशिके हर्जई	...	...	...	१११
४४. नवाए गम (शोकालाप)	...	...	...	११३
४५. तन्हाई (एकान्त)	...	...	...	११४
४६. पयामे इश्क (प्रेम-संदेश)	...	...	...	११५

४७. पेंवस्ता रह शजर से उमीदे

बहार रख	...	...	...	११६
४८. साक्री	...	...	...	११६
४९. फूल	...	...	...	११७
५०. में और तू	...	.	.	११८
५१. सितारा	...	..	..	११९
५२. पुष्पोपहार प्रदान होने पर	...	...	...	१२०
५३. रात और शायर	...	..	.	१२१
५४. बज्जे अंजुम (तारों की सभा)	...	...	...	१२२
५५. नसीहत (उपदेश)	...	...	...	१२४
५६. इन्सान	...	...	...	१२५
५७. शिकवा	...	...	...	१२६
५८. जवाबे शिकवा	...	...	..	१३३
५९. खिताब ब जवनाने इस्लाम				१४२
(इस्लाम के जवानों से)...	...	...	...	१४२
६०. तरानाए मिल्ली	...	..	...	१४४
६१. दुआ (ईश्वर प्रार्थना)	...	...	...	१४५
६२. क़ता	...	...	...	१४६
६३. गरंए शब्वाल या ईद का चाँद	...	...	...	१४७
६४. सिक्लिया (सिसिली द्वीप)	...	...	...	१४८
६५. बर्यज़ए खिलाफ़त	...	..	...	१५०

संक्षिप्त जीवनी

शेख मुहम्मद इक़बाल २२ फ़रवरी १८७३ ई० को सियालकोट (पंजाब) में पैदा हुए। उनके पूर्वज कश्मीर से आए थे। इक़बाल की आरंभिक शिक्षा सियालकोट ही में हुई आपने इन्टरमीडियेट तक की परीक्षाएँ भी वहीं के मर्रे (Murray) कालेज से पास की थीं। बी० ए० और एम० ए० की शिक्षा के लिए आप को १८९५ ई० में लाहौर जाना पड़ा। आपने १८९९ ई० में गवर्नमेन्ट कालेज से दर्शन में एम० ए० की डिग्री प्राप्त की। इसके बाद ही आप को ओरियंटल कालेज लाहौर में प्रोफ़ेसरी की जगह मिल गई। १९०५ ई० में आप उच्च शिक्षा-प्राप्ति के लिए यूरोप गए और केमब्रिज युनिवर्सिटी से बी० ए० और म्यूनिक युनिवर्सिटी जर्मनी से पी० एच० डी० की उपाधि प्राप्त की एवं लन्दन में बैरिस्टरी पास की। पी० एच० डी० के लिए आपने एक महत्त्वपूर्ण लेख लिखा था जिसका शीर्षक था—“ईरान में आध्यात्मिक विद्या वृद्धि का इतिहास।”

यूरोप से वापस आने के बाद इक़बाल ने लाहौर हाईकोर्ट में एडवोकेट के रूप में वकालत शुरू की और साथ ही अपने पुराने कालेज के प्रोफ़ेसरी के काम को भी दोबारा जारी किया। उर्दू कविता लिखने की ओर बहुत पहले ही से आप की रुचि थी। अपने विद्यार्थी जीवन में ही आप उर्दू के एक अच्छे कवि समझे जाने लगे थे। सबसे पहले आप ने ‘हिमालय’ शीर्षक अपनी कविता उर्दू के प्रसिद्ध मासिक पत्र ‘मरुजन’ लाहौर में प्रकाशित कराई थी, जिससे काव्य-क्षेत्र में आप की धूम मच गई। इसके पश्चात् हर महीने उक्त पत्रिका और अन्य पत्रिकाओं में आप की कविताएँ प्रकाशित होने लगीं। विद्यार्थीगण विशेष रूप से आपकी काव्य-कला से प्रभावित थे।

इक़बाल फ़ारसी कविता की ओर यूरोप ही में आकृष्ट हो गए थे उनकी पहली फ़ारसी कविता-पुस्तक ‘असरारे खुदी’ (‘आत्म-रहस्य’) के नाम से १९१५ ई० में प्रकाशित हुई थी। इस पुस्तक का केम्ब्रिज के

अरबी-फ़ारसी के प्रसिद्ध अध्यापक डॉक्टर निकलसन ने अंग्रेजी में भी अनुवाद किया था। 'असरारे खुदी' के बाद 'रूमूजे बेखुदी' के नाम से फ़ारसी कविता की उनकी दूसरी पुस्तक छपी और फिर 'पयामे मशरिक' (एशिया का सन्देश) प्रकाशित हुई। यह पुस्तक जर्मनी के प्रसिद्ध कवि 'गैटे' के ख्याति प्राप्त कविता-ग्रन्थ के जवाब में लिखी गई थी।

इसके बाद 'जबूरे अजम' और 'जावेदनामा' के नाम से फ़ारसी में उच्चकोटि की दो और कविता पुस्तकें 'इकबाल' ने लिखीं।

इसी बीच में उनका ध्यान फिर उर्दू की ओर आकृष्ट हुआ और उन्होंने 'बाले जिब्रील' और 'जब्रै कलीम' के नाम से दो कविता ग्रन्थ उर्दू में लिखे, इसी के साथ उन्होंने एक छोटी-सी फ़ारसी कविता "पस चे बायद कर्द ऐ अक्बामे शर्क !" (ऐ एशिया की जातियो ! फिर क्या करना चाहिए ?) और दूसरी कविता 'मुसाफ़िर' शीर्षक लिखी। काबुल के शासक जाहिरशाह के निमंत्रण पर इकबाल काबुल की शिक्षा-प्रणाली के संशोधन के लिये वहाँ गए थे। 'मुसाफ़िर' शीर्षक उनकी कविता काबुल के उसी सफ़र से सम्बन्ध रखती है।

इकबाल की उर्दू कविताओं का प्रथम संग्रह १९२४ ई० में "बांगे दरा" के नाम से प्रकाशित हुआ था, इसके बाद दो उर्दू पुस्तकें 'बाले जिब्रील' और "जब्रै कलीम" निकलीं। उनकी मृत्यु के पश्चात् उनका एक काव्य-संग्रह 'अर्मुशाने हिजाज' छपा जिसमें आधी पुस्तक उर्दू में थी और आधी फ़ारसी में।

इकबाल ने अपना फ़्लस्फ़े की शिक्षा जारी रखी। उनके ६ लेक्चर थे जिनमें—“इस्लाम के धार्मिक विचार का पुनरुत्थान” बहुत प्रसिद्ध है, ऑक्सफ़ोर्ड विश्वविद्यालय ने इनका संग्रह भी प्रकाशित किया था। इकबाल राजनैतिक कार्यों में भी भाग लेते थे। १९२७ ई० में वह पंजाब विधान सभा के सदस्य हुए। १९३० ई० में अखिल भारतीय मुसलिम लीग के प्रधान चुने गए और १९३१ ई० और १९३२ ई० में आपने विलायत में राउण्ड टेबल की कान्फ़ेन्सों में भाग लिया और १९३३ ई० में मुस्लिम-कान्फ़ेन्स के अध्यक्ष चुने गये।

लम्बी बीमारी के बाद २१ अप्रैल १९३८ ई० को आप का देहान्त हो गया। आपकी उर्दू कविता के निम्नलिखित ४ संग्रह हैं—

१. बांगे दरा २. बाले जिब्रील ३. जर्बे कलीम ४. अर्मुगाने हिजाज ।

और फ़ारसी में छोटे बड़े कुल ६ काव्य ग्रन्थ हैं—

१. असरारे खुदी और रमूजे बेखुदी २. पयामे मशरिफ़ ३. जावेदनामा
४. प्रस चे बायद कर्द ५. अर्मुगाने हिजाज ६. मुसाफ़िर ।

आपकी गद्य पुस्तकें निम्नलिखित हैं—

१. इल्मुल इक़तिसाद (अर्थशास्त्र) २. ईरान में आध्यात्मिक विद्या-
वृद्धि का इतिहास ३. इस्लाम के धार्मिक विचारों का पुनरुत्थान ४. इक़बाल
के पत्र जिन्नाह के नाम ५. इक़बाल के भाषण एवं वक्तव्य ६. इक़बाल
के पत्र (दो भागों में) ।

खुदी को कर बुलन्द इतना
कि हर तकदीर से पहले,
खुदा बन्दे से खुद पूछे
बता तेरी रज्जा क्या है ?

इक़बाल की शायरी

इक़बाल को अपने भारतीय होने पर बड़ा गर्व था और विशेष कर अपने हिन्दू पूर्वजों से उन्हें जो फ़त्सफ़ा (दर्शन) की विरासत मिली थी, उस को उन्होंने इस प्रकार बयान किया है—

मैं अरब का खास सोमनाथी, आबा मेरे लातियो मनाती^१ ।

है फ़त्सफ़ा मेरी आबोगिल में, पोशीदा है रेशाहाए दिल में ॥

वह कहते हैं कि “मेरे पूर्वज मूर्तियों को पूजने वाले थे और इसीलिये फ़त्सफ़ा तो मेरी मिट्टी में सम्मिलित है और मेरे हृदय के कण-कण में रमा हुआ है ।” अपने कश्मीरी होने पर भी उनको बहुत अभिमान है—

तनम गुले जि खयाबाने जन्नते कश्मीर ।

दिल अज़ हुरीमे हिजाजो^२ नवाजि शीराज अस्त ॥

मेरा शरीर कश्मीर की स्वर्ग वाटिका का एक फूल है, और मेरा दिल ‘काबा’ के रहस्य से बना हुआ है और मेरी भाषा ईरानी है ।

मरा बीनी कि दर हिन्दुस्तां दीगर नमी बीनी ।

बरहमन जादए रम्ज आशनाए हूमो^३ तब्रेज अस्त ॥

मुझे देखो कि हिन्दुस्तान भर में मेरे जैसा कोई और नहीं है, जो ब्राह्मण का बेटा होकर मालाना हूँ और शम्स तब्रेज के मर्म का ज्ञाता हो ।

प्रकृति के रहस्य से परिचित और मानव स्वभाव का ज्ञाता ऐसा द्रष्टा विद्वान हर समय जन्म नहीं लिया करता जो अपने क्रांतिकारी विचारों से मानव समाज के पतन को उत्थान से बदल देते हैं, ऐसे महान् व्यक्ति युगों के बाद जन्म लिया करते हैं, वह कहते हैं—

हजारों साल नगिस^४ अपनी बेनूरी^५ पे रोती है ।

बड़ी मुश्किल से होता है चमन में दीदावर^६ पैदा ॥

१—मक्का की दो मूर्तियों के नाम जो इस्लाम से पहले वहाँ पूजी जाती थीं । २—अरब का वह प्रदेश है जिसमें काबा और मदीना है । ३—इस्लाम के प्रसिद्ध विद्वान और संत । ४—एक फूल जिसे कवि आँख से उपमा देते हैं । ५—नेत्रहीनता । ६—द्रष्टृवान ।

अपने सम्बन्ध में इकबाल ने कहा है कि उनको इसकी आशा नहीं कि वर्तमान काल में उनकी वाणी पर कोई कान धरेगा। वह तो भविष्य के कवि हैं और भविष्य ही उनका ठीक मूल्य आंक सकेगा। उन्होंने अपनी फ़ारसी की प्रथम कविता में कहा है—

बे नियाज़ अज़ गोशे इयरोज़ आमदम, मन सदाये शायरे फ़र्दोस्तम ।

असरे मन दान्दिए असरार नेस्ता, यूसुफ़े मन बहरे ई बाज़ारनेस्त ।

नमए मन अज़ जहाने दीगर अस्त, ईं जरस रा कारवाने दीगर अस्त ।

‘मैं वर्तमान काल से बिल्कुल बेपरवाह हूँ मेरी आवाज़ तो भविष्य की है; मेरा समाज मेरे भेदों को नहीं जानता, और मेरा यूसुफ़ आज कल के बाज़ार में बिकने के लिये नहीं है; मेरा गान किसी दूसरे ही संसार की वस्तु है और मेरे घण्टे की आवाज़ किसी भात्री क़ाफ़िने की है जो आज विद्यमान नहीं।

और उन्होंने यह भी कहा है कि यह समय साफ़-साफ़ कहने का है, परन्तु मैंने जो कुछ कहा है संकेत में कहा है। तुम्ही वताओ मैं साधियों को कहाँ ले जाऊँ, क्या करूँ ?

वे कहते हैं—

वक्ते बरहना गुफ़तन अस्त मन ब कनाया गुफ़ता अम ।

ख़ुद तू बुगो कुजा बरम हमनफ़साने ख़ाम रा ॥

वास्तव में डाक्टर इकबाल की शायरी निरुद्देश्य न थी। उन्होंने आरम्भ ही से अपनी शायरी का यह उद्देश्य ठहरा लिया था कि वह मनुष्य को उसके वास्तविक महत्त्व से परिचित कराएँगे। हिन्दुस्तान के लोग आम तौर पर और मुसलमान विशेष रूप से १८५७ ई० की पहली जंग-आज़ादी के बाद आत्मग्लानि के शिकार हो गए थे। इस घातक भावना को दूर करने के लिए यह समझना ज़रूरी था कि तुम कौन हो। किसी व्यक्ति को कोई हक़ नहीं कि किसी दूसरे व्यक्ति पर शासन करे। इसी भावना को जागृत करने के लिए डाक्टर इकबाल ने राष्ट्रीय कविताएँ लिखीं, जिनमें ‘हिन्दोस्तां हमारा’ को विशेष महत्त्व प्राप्त है। १९०२ ई० में भारत के प्रसिद्ध कान्तिकारी लाला हरदयाल एम० ए० और सर जोगेन्द्र सिंह ने लाहौर

में एक इंडियन एसोसिएशन बनाई थी, उसके उद्घाटन के समय जो कविता सब से पहले पढ़ी गई वह प्रोफेसर मुहम्मद इक़बाल की 'हिन्दोस्तां हमारा' थी और वह उसी दिन लिखी गई थी। इस कविता के बाद उसी बैठक में स्वामी रामतीर्थ एम० ए० का एक व्याख्यान भी पढ़ा गया, जिसे उन्होंने अमेरिका में दिया था और जिसकी एक कापी उन्होंने अमेरिका से यहाँ भेजी थी। उस समय यही चेष्टा की जाती थी कि किसी न किसी तरह भारतीयों के अन्दर यह भावना जागरित हो जाए कि वह अपनी मातृभूमि के बच्चे हैं और यह भूमि उनकी है, इसीलिए इक़बाल ने भी उस समय सारी कविताएँ राष्ट्रीय रंग में लिखी थी।

इक़बाल की शायरी का दूसरा उद्देश्य जिसके लिए उन्होंने सारी कोशिशें कीं किसी 'मर्दे कामिल' (सिद्ध पुरुष) की खोज है। उनका विश्वास है कि भगवान् का मिलना तो सरल है, परन्तु किसी सिद्ध पुरुष का मिलना सरल नहीं। वह एक ऐसे सिद्धि-प्राप्त व्यक्ति के लिए भगवान् से प्रार्थना करते हैं—

छाहम अज़ लुत्फे तो यारे हमदमे, अज़ रमूजे फ़ितरते मन् महरमे ।

हमदमे दीवानए ज़ानए, अज़ हयाले ईनो आं बेगानए ।

ता बजाने ऊ सपारम हुए ख़ेश, नाज़ बीनम दर दिले ऊ रूए ख़ेश ।

साज़म अज़ मुश्ते गिले ख़ुद पंफ़रश, हम सनम ऊरा शवम हम आज़रश^१ ।

अर्थात्—हे भगवान् ! मैं आपकी कृपा से एक ऐसा मित्र और साथी मांगता हूँ जो मेरी प्रकृति के भेदों से अवगत हो। यानी ऐसा साथी जो एक अर्थ में तो दीवाना हो और दूसरे अर्थ में बड़ा ही बुद्धिमान हो, जिसको इससे और उससे कोई सम्बन्ध न हो। जो सबसे अपरिचित हो और केवल मेरा होकर रहे। यह इसलिए ताकि मैं अपने उन्माद को उस पर निछावर कर दूँ, और उसके हृदय-दर्पण में अपना रूप देखूँ। मैं अपनी ही मिट्टी से उसकी काया बनाऊँ। मैं ही उसका देवता भी बनूँ और उस देवता का निर्माता भी।

इक़बाल को इसकी भी शिकायत है कि उनकी वास्तविकता को किसी ने भी नहीं समझा। हर व्यक्ति ने उनको शत्रु और विरोधी के रूप में देखा। उनके निकट उनका वास्तविक रूप क्या है? मानवता ! वह अपने इस दुख को इस तरह व्यक्त करते हैं—

जाहिदे तंग नज़र ने मुझे काफ़िर जाना,
और काफ़िर यह समझता है मुसलमां हूँ मैं ।
रिन्द कहता है वली मुझको वली रिन्द मुझे,
तुन के इन दोनों की तफ़रीर को हैरां हूँ मैं ।
देख ऐ चश्मे अद्व मुझ को हिक़ारत से न देख,
जिस पै ख़ालिक्को भी हो नाज़ वह इन्सां हूँ मैं ।

अर्थात्—मुस्लिम धर्म के ठीकेदार तो यह समझते हैं कि मैं धर्म से विमुख हो चुका हूँ और काफिर समझता है कि मैं बड़ा दीनदार मुसलमान हूँ । शराब पीने वाला मुझको सिद्ध पुरुष मानता है और सिद्ध पुरुष मुझको शराबी समझता है; मैं इन दोनों की बातों को सुनकर हैरान होता हूँ । ऐ शत्रु की आँख ! मुझे घृणा की दृष्टि से न देख; क्योंकि जिसकी सृष्टि पर भगवान् को स्वयं गर्व है मैं वही मनुष्य हूँ । इस से मालूम हुआ कि इक़बाल की दृष्टि में मनुष्य के लिए सब से बड़ी विशेषता उसकी मानवता है ।

शायरी इक़बाल की नज़र में

शायरी इक़बाल के जीवन का उद्देश्य नहीं, बल्कि उनके लिए शायरी लक्ष्य-प्राप्ति का एक साधन है; यदि वह शायरी से अपनी जाति, अपने देश और मनुष्य मात्र को कोई रास्ता दिखा सकें तो शायरी काम की वस्तु है अन्यथा केवल एक आडम्बर है । वे फ़रमते हैं—

मेरी नवाए परीशां को शायरी न समझ,
कि मैं हूँ महरमे राज़े दुरूने मैख़ाना ।

अर्थात्—मेरी विश्रुंखल वाणी को शायरी न समझ, क्योंकि मैं मदिरालय रूपी संसार के आंतरिक रहस्यों का ज्ञाता हूँ ।

अपनी शायरी का उद्देश्य बताते हुए इकबाल एक स्थान पर कहते हैं कि मेरी कविता को अलंकारों की आवश्यकता नहीं है—

मेरी मशशली की क्या ज़रूरत हुस्ने मानी को,
कि फ़ितरत खुद ब खुद करती है लाला की हिना बन्दी ।

अर्थ कि सुन्दरता को मेरे बनाव सिंगार की आवश्यकता नहीं, क्यों कि प्रकृति लाला के फल को स्वयं आ कर मेंहदी लगा देती है ।

उनका यह कहना है कि दृष्टि ऐसी होनी चाहिए जो बाह्य सौन्दर्य और शोभा में उलझ कर न रह जाए, अपितु वस्तुओं के आंतरिक गुणों और उसके तथ्यों तक पहुँच जाए ।

ऐ अहले नज़र ! जीक़े नज़र ख़ूब है लेकिन,
जो शै की हकीक़त को न देखे वह नज़र क्या !
मक्सूदे हुनर सोज़े हयाते अबदी है,
यह एक नफ़स या दो नफ़स मिस्ले शरर क्या ।
शायर की नबा हो कि मुग़न्नी का नफ़स हो,
जिस से चमन अफ़सुर्दा हो वह बादे सहर क्या ?

अर्थात्—दृष्टि ऐसी होनी चाहिये जो हर वस्तु के तथ्य और उसकी वास्तविकता को देख ले । कला का उद्देश्य जीवन को स्थायी रूप से गर्मी प्रदान करना है । चिगारी के समान एक क्षण या दो क्षण की गर्मी कोई चीज़ नहीं है । कवि की वाणी हो या गायक की तान दोनों व्यर्थ हैं, यदि वह बुझे हुए हृदय को सदा के लिए जीवन की गर्मी प्रदान न करें । वह प्रभात-समीर ही क्या जिससे दुष्पवाटिका प्रस्फुटित होने की जगह और मुरझा जाए ।

सीन। रौशन हो तो है सोज़े सुखन ऐने हयात,
हो न रौशन तो सुखन मर्गे दबाम, ऐ साक्की ।

अर्थात्—कवि की वाणी से यदि हृदय प्रकाशमान हो, तो कविता की गर्मी वास्तविक जीवन है और यदि हृदय प्रकाश मान न हो, तो उस की कविता सदा के लिए मृत है ।

मनुष्य भी एक स्रष्टा है

यदि ईश्वर सृष्टि का रचयिता है, तो इकबाल के मतानुसार मनुष्य भी एक स्रष्टा है; क्योंकि यदि ईश्वर ने रात बनाई तो मनुष्य ने रात्रि के अन्धकार को दूर करने के लिए दीपक बना लिया। भगवान ने मिट्टी बनाई, तो उस मिट्टी से मनुष्य ने बर्तन बना लिए।

इकबाल इसी को इस प्रकार बयान करते हैं—

तू शब आफ़रीदी चिराय़ आफ़रीदम

सिफ़ाल़ आफ़रीदी अयाग़ आफ़रीदम

अर्थात्—मनुष्य भी ईश्वर के साथ स्रष्टा और ईश्वर की बनाई हुई सृष्टि को बनाने और संवारने वाला है।

जहाँ ऊ आफ़रीद ई ख़ूबतर साह्त

मगर बा ऐज़द अम्बाज़ अस्त आदम।

अर्थात्—ईश्वर ने संसार की रचना की और मनुष्य ने उसे और भी बना संवार दिया, इसलिए शायद मनुष्य भी ईश्वर के साथ बराबरी रखने वाला है।

ईश्वर का कहना है कि उसकी दुनिया ऐसी है जिसके विषय में कुछ कहने की गुंजाइश नहीं। मनुष्य ईश्वर से शिकायत करता है कि तेरी बनाई हुई दुनिया में मनुष्य के लिए कठिनाइयाँ और मुसीबतें हैं, वह दूसरों का शिकार है, और बड़ी कठिनाई से जीवन व्यतीत करता है। लेकिन मेरी दुनिया ऐसी है जिसमें मैंने तुझे बादशाह बनाया हुआ है और सब तेरी पूजा करते हैं। मनुष्य ने ईश्वर को ईश्वर बना दिया और ईश्वर ने मनुष्य को मुसीबतें झेलने के लिए बनाया, यह बराबरी का व्यवहार नहीं है। उपरोक्त विचार को इकबाल ने इस प्रकार प्रकट किया है—

तेरी दुनिया जहाने मुर्षोमाही^१,

मेरी दुनिया फ़ुग़ाने^२ सुबह गाही।

तेरी दुनिया में मैं महकूमो मजबूर^३,

मेरी दुनिया में तेरी पावशाही।

१-यक्षी और मीन का संसार। २-प्रातः का विलाप। ३-परतंत्र एवं विवश।

अकल और इश्क

बुद्धि को इकबाल एक ऐसा साधन समझते हैं जिसके द्वारा अपने लक्ष्य को प्राप्त किया जा सकता है, वह अन्तिम ध्येय नहीं है। परन्तु इश्क साधन भी है और ध्येय भी। बुद्धि उसी समय तक लाभप्रद है जब तक हम उसके द्वारा अपने ध्येय को पाने के लिए आगे बढ़ते जाते हैं। अतः वह कहते हैं—

गुजर जा अकल से आगे कि यह नूर^१

चिराग^२ राह है मंजिल नहीं है।

इकबाल बुद्धि को नहीं प्रेम को विश्वास के योग्य मानते हैं, क्योंकि बुद्धि बहुरूपिए की तरह रूप बदलती रहती है किन्तु प्रेम हर स्थिति में अपनी जगह दृढ़ और स्थिर रहता है—

अकल अय्यार है सौ भेस बदल लेती है,

इश्क बेचारान मुल्ला है न जाहिद न हकीम।

किसी विपत्ति और परीक्षा का सामना होता है तो अकल सोचने लगती है कि उसको पग आगे बढ़ाना लाभजनक होगा या हानिकर, और प्रेम उस परीक्षा में निर्भीकतापूर्वक कूद पड़ता है—

बेखतर कूद पड़ा आतिशे नम्रूद^३ में इश्क,

अकल है महवे तमाशाए लबे बाम अभी।

जमाने में शिक्षा सम्बन्धी डिग्रियों को तो मनुष्य बड़ी आसानी से प्राप्त कर लेता है परन्तु प्रेम की अग्नि परीक्षा में एक सच्चा प्रेमी ही उत्तीर्ण हो सकता है।

मुकामे अकल से आस्तां गुजर गया 'इकबाल,'

मुकामे इश्क में खोया गया वह फ़ज्रिना^४।

इश्क की इक जस्त^५ ने तैं कर दिया क्रिस्ता तमाम,

इस ज़मीनो आस्मां को बेकिरां^६ समझा था मैं।

१—आलोक। २—मार्गदीप। ३—महान पैगम्बर इज़रत इब्राहीम को उनके देश के दुष्ट शासक नमरूद ने आग के अलाव में भोंकने को सज़ा दी थी और वह स्वयं ही अलाव में निर्भीकता पूर्वक कूद पड़े थे और ईश्वर की कृपा से उन्हें कोई हानि न पहुँची थी। उसी घटना की ओर संकेत करके इकबालने कहा है कि प्रेम तो निःशक आग में कूद पड़ा और बुद्धि अभी प्रेमिका की अश्लिका ही की शोभा और लविके दर्शन में मग्न है। ४—बुद्धिमान ५—छलांग ६—निस्सीम

और इसी इश्क के प्रभाव से कभी कभी ऐसा भी होता है कि आँख का पर्दा घास की पत्ती की तरह हल्का हो जाता है और केवल यही संसार नहीं बल्कि अगली दुनिया के दृश्य भी साफ़ दिखाई देने लगते हैं। इश्क की मंजिल वैसे तो एक लम्बी यात्रा के बाद ही मिलती है और इस मार्ग में अनेक कठिनाइयों और विपत्तियों का भी सामना करना पड़ता है; परन्तु ऐसा भी होता है कि केवल दिल से एक हूक उठती है और पथिक के समक्ष आप से आप मंजिल आ जाती है। आवश्यकता तो जिज्ञासा की है उस के लिये पूर्ण प्रयास को अपना कर्तव्य समझना चाहिए और फिर ईश्वर की सहायता पर विश्वास रखना चाहिए। इश्क ऐसी दौलत है, जो कभी-कभी रास्ता चलते हुए भी हाथ लग जाती है, इसी को 'इकबाल' ने इस प्रकार कहा है—

मी शवद पर्दे चशम परे काहे गाहे
 दीदा अन हर दो जहाँरा ब निगाहे गाहे^१।
 मंजिले इश्क बसे दूरोदराजस्त बले
 तै शवद जादए सद साला बआहे गाहे^२।
 दर तलब कोश, मदेह दामने उम्मीदज दस्त
 दौलते हस्त कि याबी सरे राहे गाहे^३।

दिल में इश्क का होना अनिवार्य है और यही इश्क अपनी मंजिल आप है, जिज्ञासा का होना आवश्यक है। इसकी चिन्ता न होनी चाहिए कि जिज्ञासा पूर्ण होगी या नहीं।

इकबाल की शायरी का ध्येय

अपने जीवन के लक्ष्य के बारे में इकबाल केवल यही कहते हैं कि मैं इसके सिवा और कुछ नहीं जानता कि मुझे अपना स्वप्न तो भूल गया है

१—मेरी आँख का पर्दा कभी घास की पत्ती के समान हो जाता है और कभी मैं एक दृष्टि में लोक परलोक को प्रत्यक्ष देख लेता हूँ। २—इश्क की मंजिल बहुत दूर है लेकिन कभी ऐसा भी होता है कि सौ साल की राह एक आद में तै हो जाती है। ३—निरंतर खोज में लगे रहो, उम्मीद के दामन को हाथ से न जाने दो यानी आशा न छोड़ो, इश्क ऐसी दौलत है जो कभी-कभी राह चलते भी हाथ आ जाती है।

पर इसके फल की इच्छा मुझे तड़पा रही है। मैं कुछ चाहता हूँ, लेकिन यह नहीं जानता कि क्या चाहता हूँ ?

अज्ञ रोजगारे लेश न दानम् जुज्ञ ई क्रदर

ल्लाम जिपाद रपता व ताबीरम आर्जूस्त ।

अर्थात्—मैं अपने संबन्ध में इसके सिवा और कुछ नहीं जानता कि मैं अपना स्वप्न तो भूल गया हूँ, परन्तु अपने स्वप्न फल को प्राप्त करने की कामना रखता हूँ ।

इक्रबाल के लिये एशिया की गुलामी विशेषकर भारत की दासता बहुत ही असह्य थी। उनके निकट भारत के कवियों का सब से बड़ा कर्तव्य भारतवासियों में स्वतंत्रता का भाव भरना था, इसलिए वह कहते हैं कि एशिया के बांस के जंगल की बांसुरी को फूँक की आवश्यकता है, तो ऐ कवि ! तू बता कि तेरे सीने में दम है कि नहीं ?

मशरिक् के नयस्तां में है मुहताजे नफ़स नै

शायर ! तेरे सीने में नफ़स है कि नहीं है ?

शराब तलवार की तरह तेज होनी चाहिए; चाहे वह शीशे की सुराही में हो या मिट्टी के प्याले में ।

शीशे की सुराही हो कि मिट्टी का सुबू हो

शम्शीर के आनिन्द हो तेजी में तेरी मैं ।

मूसा के लिए एक तूर पर्वत था और उन्होंने एकवार उस पर ईश्वरीय आलोक देखा और मूर्च्छित होकर गिर पड़े, और इसीके साथ उनकी दर्शन-कामना सदा के लिए समाप्त हो गई। परन्तु इक्रबाल अपने सम्बन्ध में कहते हैं—

हर लहजा नया तूर नई बर्कें तजल्ली,

अल्लाह करे मर्हलए शौक़ न हो तें ।

अर्थात्—हर क्षण एक नया तूर हो, और आलोक की नई बिजली, ताकि इच्छा और कामना का मार्ग कभी समाप्त न हो ।

कवि की जिज्ञासा सदा बनी रहती है और उसका हृदय कभी शांत नहीं होता। यदि उसका हृदय शांत हो जाए, तो उसके जीवन का ही अंत हो जाए। कवि को कोई न कोई खोज और कोई न कोई अतृप्ति ही बाध्य

करती रहती है और जब वह अपनी हृदय-तृष्णा को किसी और उपाय से शांत नहीं कर पाता, तो शब्दों और छन्दों के द्वारा उसकी शांति के लिए प्रयास करता है। इसी भाव को इकबाल ने इस प्रकार व्यक्त किया है—

नासबूरी है जिन्दगी दिल की,
आह वह दिल कि नासबूर नहीं।

अर्थात्—हृदय का जीवन तो अतृप्ति ही है, उस हृदय के लिए खेद है जो अतृप्त नहीं। इकबाल इससे भी आगे बढ़कर कहते हैं—

आलमे सोजोसाज में वस्ल से बढ़ के है फ़िराक़,
वस्ल में मर्गो आर्जू हिज़्र में लश्क़ते तलब।

अर्थात्—इस हर्ष विपाद के संसार में मिलन से बढ़ कर वियोग है, इसलिए कि मिलन के बाद तो कामना की मृत्यु हो जाती है; परन्तु वियोग में मिलन-कामना का आनन्द सदा बना रहता है।

संसार के सारे प्रेमियों का अंतिम ध्येय, प्रेमिका-मिलन होता है और इकबाल का ध्येय सबसे निराला, वियोग है। परन्तु जिस लक्ष्य को लेकर इकबाल ने अपना ध्येय निश्चित किया है मानना पड़ेगा कि इकबाल का प्रेम सब से महान् है।

वे कहते हैं—

गमिए आर्जू फ़िराक़, शोरिशे हा व हू फ़िराक़
मौज की जुस्तुजू फ़िराक़, क़तरे की आबरू फ़िराक़

अर्थात्—वियोग ही कामना प्राण है, वियोग ही से 'हाय, हाय' का कोलाहल है, समुद्र की लहरों की आकांक्षा का आधार भी चन्द्रमा का वियोग ही है, इसी प्रकार जल बिन्दु की मर्यादा भी समुद्र के वियोग ही पर निर्भर है; यदि बिन्दु समुद्र में मिल गया तो फिर बिन्दु कहाँ रहा।

योगी का कही घरबार नहीं होता वह आज यहां होता है तो कल वहाँ। उसकी न किसी से मित्रता होती है न शत्रुता। वह जो कुछ कहता है बेलाग-लपेट के कहता है और सभी की भलाई और कल्याण के उद्देश्य से कहता है। इकबाल अपने काव्य के सम्बन्ध में कहते हैं—

खुश आ गई है जहाँ को कलन्बरी मेरी,
वर्णा शेर मेरा क्या है शायरी क्या है !

इन शब्दों में इकबाल ने अपनी नम्रता व्यक्त करते हुए कैसी अच्छी शैली में अपनी विशेषता और महानता भी प्रकट कर दी है, मतलब यह है कि उनकी शायरी का आधार उनका स्वच्छ और उज्ज्वल भाव है। उन्होंने एक योगी की तरह सच्ची और सीधी बातें कही हैं, जो सभी के लिए लाभप्रद और कल्याणमय हैं।

इकबाल की काव्य-कला

इकबाल के जीवन में उनकी भाषा पर पंजाब से बाहर, बहुत कुछ कटाक्ष होता रहा, और कहा जाता रहा कि उनकी उर्दू पंजाबी उर्दू है; परन्तु उनके काव्य के भाव की उच्चता को सभी स्वीकार करते थे। उनके काव्य में एक जादू था जो सुनने वालों के दिल में उतर जाता था। लगभग पचास वर्ष हुए जब उन्होंने 'शिकवा' शीर्षक एक लम्बी कविता लिखी थी, इसमें मुसलमानों के प्रतिनिधि-रूप में भगवान् से शिकायत की गई है कि संसार की सारी जातियों पर तो तेरी कृपा-दृष्टि है एक मुसलमान जाति ही क्यों तेरी दया और कृपा से वंचित है? हालाँ कि इस नास्तिकता और अधर्म के युग में भी मुसलमान जाति सब जातियों से अधिक तेरी भक्त और तेरी आज्ञाकारी है।

इस कविता में मुसलमानों की पारस्परिक समता का वर्णन करते हुए इकबाल कहते हैं—

आ गया ऐन लड़ाई में अगर वक्ते नमाज़,
क्रिब्ला रू हो के जमींबोस हुई क़ौमे हिजाज़।
एक ही सफ़्र में खड़े हो गए महमूबो अयाज़,
न कोई बन्दा रहा और न कोई बन्दानवाज़।
बन्दाओ साहिबो मुहताजो ग़नी एक हुए,
तेरी दर्गाह में पहुँचे तो सभी एक हुए।

मुसलमान तेरे ऐसे भक्त हैं कि संग्राम में भी नमाज़ का समय होते ही काबे की ओर मुख कर के सिज्दे में गिर पड़ते हैं और बादशाह महमद

हो या उसका गुलाम अयाज़, सभी समान रूप से एक पंक्ति में खड़े हो जाते हैं। उस समय न कोई दास रह जाता है न कोई स्वामी, न कोई निर्बल और न कोई धनवान। तेरे दरबार में पहुँच कर सब समान और एक हो जाते हैं। इसके आगे कहते हैं—

महफ़िले कौनो मकां में सहरोशाम फिरे,
मये तौहीद को लेकर सिक्रते जाम फिरे।
कोह में दस्त में लेकर तेरा पंगाम फिरे,
और मालूम है तुझको कभी नाकाम फिरे ?
दस्त तो दस्त हैं दरिया भी न छोड़े हम ने,
बहरे जुल्मात में दौड़ा दिए घोड़े हमने।

मुसलमानों ने इस्लाम के प्रचार के लिए जो प्रयत्न और प्रयास किया और इस्लाम के सन्देश को इस सिरे से उस सिरे तक जिस तरह पहुँचाया, उसकी चर्चा करते हुए 'इकबाल' ने खुदा के दरबार में मुसलमानों की कितनी जोरदार वकालत की है। वे कहते हैं कि हमीं तो हैं, जो इसका विचार किए बिना कि कब सुबह होती है और कब शाम, तेरे एकत्व की मदिरा लिए हुए संसार की सभा में मदिरा-पात्र के समान फिरते रहे। हम पर्वतों और वनों तथा सभी स्थानों में तेरा सन्देश लेकर गये, और क्या तू कह सकता है कि हम कहीं से भी असफल फिरे? वन तो वन समुद्र भी हमसे न छूटे और हमने कृष्ण सागर को भी अपने घोड़ों की टापों से रौंद डाला।

इसके आगे का खण्ड देखिए, ईश्वर को किस प्रकार प्रभावित करने की कोशिश की है—

बुत सनमख़ानों में कहते हैं मुसलमान गए
है खुशी उनको कि काबे के निगहबान गए
मंजिले बहरे से ऊंटों के हुबोखान गए
अपनी बग़लों में बबाए हुए क़ुअ्रान गए

ख़न्दा ज़न कुफ़ है, एहसास तुझे है कि नहीं ?
अपनी तौहीद का कुछ पास तुझे है कि नहीं ?

अब मुसलमानों की दशा इतनी शोचनीय हो गई है कि देवालय की मूर्तियाँ भी कहने लगी हैं कि मुसलमानों का अन्त निकट है, उनको इसकी बड़ी प्रसन्नता है कि काबा के रक्षक चले गये ।

इकबाल ने वह कविता खिलाफत आन्दोलन के समय में लिखी थी, जब अंग्रेज और उनके मित्र-राष्ट्र तुर्की के अस्तित्व को मिटाने का प्रयत्न कर रहे थे, और उस समय मक्का-मदीना तुर्की ही के राज्य में था । और यहाँ मूर्ति और देवालय का मतलब ईसाई गिरजाघर और उसके पादरियों से है, जो उस समय इस्लाम के शत्रु हो रहे थे ।

इस कविता का विषय कितना कठिन है ? मनुष्य को इसका अधिकार नहीं कि वह ईश्वर पर कटाक्ष करे; उसके लिये उचित यही है कि वह ईश्वर के सम्मुख दुःख भी प्रकट करे, तो प्रार्थना के रूप में प्रकट करे । इकबाल की कला की विशेषता यह है कि वे सब कुछ कह गये हैं, परन्तु उन्होंने कहीं भी ईश्वर की महिमा की उपेक्षा नहीं की है । इस कला पर कोई भी साहित्य अभिमान कर सकता है ।

नवयुवकों से

इकबाल ने एशिया, विशेष कर अपने देश के नवयुवकों को, पाश्चात्य सभ्यता की तीव्र धारों में बहते हुए देखा तो उनका हृदय विकल हो उठा । अंग्रेजों ने कालिजों और युनिवर्सिटियों में जो शिक्षा-प्रणाली प्रचलित की थी, वह देश के युवकों को साहस-हीन और सुख-विलास का अनुरागी बनानवाली थी । विद्यार्थियों का इससे अधिक और कोई मनोरथ न होता था कि सकलता को डिग्री प्राप्त करने के बाद ब्रिटिश शासन की दासता की कोई कुर्सी उन्हें मिल जाये । बस यह था उनका सबसे उच्चतम ध्येय । भला ऐसे युवकों से देश की खोई हुई स्वतंत्रता किस प्रकार वापस आ सकती थी ? इकबाल ऐसे युवकों को सम्बोधित करके कहते हैं—

पशीमाँ शौ अगर लालेजे मीरासे पिदर छाही ,
कुजा ऐसे बरूँ आवुर्दने लाले कि दर संग अस्त ।

तुम्हें अपनी दशा पर लज्जा आनी चाहिये, यदि तुम अपने बाप-दादा की मीरास का हीरा चाहते हो, तो अपनी इस दशा में तुम उस हीरे के निकालने का आनन्द कैसे प्राप्त कर सकते हो, जो पत्थर में छिपा हुआ है ? दूसरी जगह कहते हैं:—

नहीं तेरा नशेमन क़त्ले सुल्तानी के गुम्बद पर,
तू शहीं है बसेरा कर पहाड़ों की चट्टानों में ।

राज-प्रासाद के गुम्बद में घोंसला बनाना कबूतरों का काम है और तू बाज़ पक्षी है, तेरा निवास-स्थान पहाड़ है। तुझे तो पहाड़ की चट्टानों में बसेरा करना चाहिये ।

कितनी उत्साहवर्द्धक शैली है, जिसका नौजवानों को ऊपर उठाने के लिये इकबाल ने प्रयोग किया है। एक और स्थान पर कहते हैं:—

तेरे सोफ़े हैं अफ़रंगी तेरे क़ालीं हैं ईरानी,
लहू मुझको रुलाती है जवानों की तन आसानी ।

एक कविता में नौजवानों को आत्म-सम्मान और स्वदेश-प्रेम की शिक्षा देते हुए कहते हैं कि संसार में तुम्हारा अपना मुख्य स्थान होता चाहिये। तुम्हारे लिये उचित नहीं कि तुम अपने देश की अवहेलना करके यूरोप के कृतज्ञ बनो, तुम्हें चाहिये कि तुम आत्म-सम्मान को विदेशियों के हाथ न बेचो और गरीबी में भी नाम पैदा करो ।

दियारे इश्क़ में अपना मुक़ाम पैदा कर ।
नया ज़माना नये सुबहो शाम पैदा कर ॥
मेरा तरीक़ा अमीरी नहीं फ़क्तीरी है ।
ख़ुदी न बेच गरीबी में नाम पैदा कर ॥
उठा न शीशा गराने फ़रंग के अहसाँ ।
सिफ़ाले हिन्द से मीना व ज़ाम पैदा कर ॥

अर्थात् तेरे लिये यह शोभा की बात नहीं है कि तू यूरोप के शीशे की सुराही और प्याले बनानेवालों का कृतज्ञता-भार उठाये, तुझे तो चाहिये कि स्वयं भारत ही की मिट्टी से सुराही और प्याला तैयार करे ।

जिब्रील खुदा के सबसे समीपवर्ती फ़रिश्ता हैं, इक़बाल नौजवानों को उत्साह और स्वाभिमान की शिक्षा देते हुए कहते हैं कि:—

दर दस्ते जुनून मन जिब्रील जबूं संदे,
यद्दो बकमंद आवर ऐ हिम्मते मर्दाना ।

अर्थात् मेरे सामने जिब्रील फ़रिश्ता भी कोई चीज़ नहीं, वह तो मेरे जुनून के जंगल में मेरा एक तुच्छ शिकार है। इसलिये ऐ मेरे पुरुषार्थ ! बात तो तब है कि जब तू ईश्वर का शिकार करे और उसको अपने फन्दे में फँसाये ।

इक़बाल का मत है कि समुद्र की लहरों के साथ लड़ना ही जीवन है और अमर-जीवन संघर्ष ही से प्राप्त हो सकता है ।

बदरिया ग़लतो दर मौजश दर आवेज,
हयाते जाविदो अन्दर सतेज अस्त ।

अर्थात् दरिया में कूद पड़ और लहरों से लड़, अमर जीवन संघर्ष ही में है ।

मनुष्य को अपना लक्ष्य ऊँचा रखना चाहिये, जितना लक्ष्य ऊँचा होगा मनुष्य उतना ही ऊपर उठेगा। इक़बाल देश के नौजवानों को ऊपर उठाने के लिये कहते हैं कि मनुष्य संसार ही को सब कुछ समझता है और उसी के टुकड़ों और भागों की प्राप्ति के लिये जूझ रहा है। वैज्ञानिकों का कहना है कि नक्षत्रों में भी आवादी है, परन्तु इक़बाल उनसे भी ऊँचे उठ कर कहते हैं:—

सितारों से आगे जहाँ और भी हैं ।

अभी इश्क के इस्तेहाँ और भी हैं ॥

तही^१ ज़िन्दगी से नहीं यह फ़िज़ाएं ।

यहाँ संकड़ों कारवाँ और भी हैं ॥

क्रनाअत^२ न कर आलमे^३ रंगो बू पर ।

चमन और भी आशियाँ^४ और भी हैं ॥

अगर खो गया एक नशेमन^५ तो क्या ग्रम ?

मुक़ामाते आहोफ़ुगाँ^६ और भी हैं ॥

१-शूग्य । २-संतोष । ३-संसार । ४-घोंसला । ५-घोंसला । ६-आर्त्तनाद तथा क्रन्दन।

गये दिन कि तनहा था तू अन्जुमन^१ में ।
 यहाँ अब तेरे राजदाँ^२ और भी हैं ॥
 इसी रोज़ोशब^३ में उलझ कर न रह जा ।
 कि तेरे ज़मानोमकाँ^४ और भी हैं ॥

इकबाल की आत्म-जिज्ञासा

इकबाल वर्तमान युग में आत्म-जिज्ञासा के सबसे बड़े दार्शनिक हैं। उनका दर्शन “खुदी” की पहचान कहलाता है, उनके दर्शन में वेदांत और शुद्ध अद्वैतवाद की पुट भी पाई जाती है। वह स्वयं कहते हैं—
 तू किसके डूँढ़ने के लिये मारा-मारा फिर रहा है? तू जिसको ढूँढ़ रहा है वह तो प्रत्यक्ष है, स्वयं तू ही अज्ञान के परदे में छुपा हुआ है। अगर उसकी खोज करेगा तो अपने आप को पा लेगा और अगर अपनी तलाश करेगा तो उसको प्राप्त कर लेगा। मनुष्य को सम्बोधित करके इकबाल कहते हैं^१।

किरा जोई चरा दर पेचो ताबी

कि ऊ पैदास्त तू ज़ेरे नकाबी !

तलाशे ऊ कुनी जुज खुद न बीनी

तलाशे खुद कुनी जुज ऊ न याबी !

अर्थात्—तू किसकी खोज में लगा हुआ है? और किस लिये (शब्दों के) चक्र में पड़ा है? अरे वह तो प्रकट है। आवरण में छुपा हुआ तो स्वयं तू है। अगर तू उसको ढूँढ़ेगा तो अपने ही को पायेगा और अगर अपनी खोज करेगा तो उसको पा जायेगा। न ईश्वर तुझसे भिन्न है और न तू ईश्वर से अलग है, ऐसा अटूट सम्बन्ध है मनुष्य और ईश्वर का !

एक स्थान पर मनुष्य की महिमा को इकबाल ने इस प्रकार व्यक्त किया है—

खुदा हम दर तलाशे आदमे हस्त

अर्थात्—मनुष्य वह प्राणी है कि ईश्वर भी उसका खोजी है। आत्म-अभिमान की इससे ऊँची भावना और क्या हो सकती है? परन्तु इकबाल की कल्पना के उड़ान की यह अंतिम सीमा नहीं है, सुनिये, वह कहता है:—

खुदी को कर बुलंद इतना कि हर तक्रदीर से पहले,
खुदा बन्दे से खुद पूछे बता तेरी रजा क्या है ?

अर्थात्—ऐ मनुष्य ! तू अपने आत्म-सम्मान और अपनी महिमा को इतना ऊपर उठा कि ईश्वर तेरे लिये भाग्य के निश्चय करने से पहले स्वयं तुझसे पूछे कि तेरी प्रसन्नता किस बात में है ?

मनुष्य के साहस, उसके उच्च उत्साह और उसकी आश्चर्यजनक उन्नति को देखकर नक्षत्रों को भय है कि कहीं मनुष्य हमसे भी न बढ़ जाये ;

उरूजे आदमेखाकी से अन्जुम सहमे जाते हैं ।

कि यह टूटा हुआ तारा माहे कामिल न बन जाये ॥

अर्थात् मिट्टी के पुतले मानव की उच्चता को देखकर नक्षत्रगण भी चिन्तित हैं कि कहीं यह टूटा हुआ तारा पूर्णिमा का चन्द्रमा न बन जाये ।

यही है इकबाल की वह विशेषता जो उसको अद्वितीय कवि सिद्ध करती है ।

मन की सम्पत्ति के लिये इकबाल बहुत तड़पता है कि बनावट को छोड़ कर प्रकृति के निकट हो जाये, और प्राकृतिक जीवन व्यतीत करे । क्योंकि देहात और गाँव में मनुष्य को आत्म-सम्मान की हत्या नहीं करनी पड़ती, और आत्म-गौरव बना रहता है । सुन्दरता को अगर अपनी बड़ाई के लिये शहरों से गाँव अच्छे लगते हैं, तो उसे शहरों के पीछे नहीं भागना चाहिये, जीवन का रहस्य अपने आप में बिल्कुल डूब जाने से पाया जा सकता है । इसलिये यही उचित है कि मनुष्य अपने अन्तर में डूब कर अगर किसी दूसरे के लिये नहीं तो अपने ही लिये इस मर्म को ग्रहण करे; क्योंकि मन के संसार में हँसना और रोना, प्रेम और वियोग सब कुछ है, परन्तु शारीरिक और सांसारिक दुनिया में धोखा है, स्वार्थपरता है, छल और कपट है । मन की सम्पत्ति अगर एक बार हाथ लग जाती है तो फिर उसके खोने का कोई भय नहीं, और तन की दौलत तो एक छाया है, किसी समय होती है और किसी समय ढल जाती है । परन्तु मुझे तो एक रमते जोगी की यह बात लज्जा से पानी-पानी कर गई कि जब तू किसी दूसरे के सामने नतमस्तक हो गया, तो फिर न मन ही तेरा अपना रह जाता है न तन ही । परतंत्रता सब से बड़ा अपराध है, इसलिये

आत्म-सत्ता को पहचानना मनुष्य के लिये अत्यावश्यक है। उसको भगवान के अतिरिक्त और किसी के आगे नहीं झुकना चाहिये। राष्ट्र के स्वतंत्रता-युद्ध के दिनों में उन्होंने यह कविता लिखी थी, जो हर एक मनुष्य के अन्दर एक नई जागृति पैदा करने वाली है। वह कविता यह है—

हुस्ने बेपरवाह को अपनी बेनक्राबी^१ के लिये ।
 हैं अगर शहरों से बन प्यारे तो शहर अच्छे कि बन ?
 अपने मन में डूब कर पा जा मुरागे जिन्दगी^२ ।
 तू अगर मेरा नहीं बनता न बन अपना तो बन ॥
 मन की दुनिया, मन की दुनिया सोझो^३ मस्ती जब्बो^४ शौक ।
 तन की दुनिया, तन की दुनिया सूदो सौदा^५ मकरो फन^६ ॥
 मन की दौलत हाथ आती है तो फिर जाती नहीं ।
 तन की दौलत छांव है, आता है धन, जाता है धन ॥
 पानी पानी कर गई मुझको कलन्दर^७ की यह बात ।
 तू झुका जब गौर के आगे न मन तेरा न तन ॥

इकबाल का आत्म-समर्पण दर्शन

इकबाल अपने आत्मसमर्पण के दर्शन को “फ़ल्सफ़ा बे-खुदी” कहते हैं, अर्थात् अपने अहं को मार कर किसी बड़े अहं में मिला देना। मनुष्य अपने राष्ट्र और अपने देश की भलाई और कल्याण के लिये अपने शरीर, अपनी बुद्धि, बल और अपने ज्ञान और विद्या का उपयोग करके ही प्राप्त कर सकता है; इन सब से अलग रहकर व्यक्ति का कोई मूल्य नहीं।

फ़र्द^८ ‘क्रायम रबते’ मिल्लत^९ से है तनहा कुछ नहीं।

मौज है दरिया में और बैरुने दरिया कुछ नहीं ॥

अर्थात्—व्यक्ति का व्यक्तित्व राष्ट्र से सम्बन्ध रखने ही में सुरक्षित रह सकता है, लहर उसी समय तक जीवित है जब तक वह दरिया में है, दरिया से बाहर उसका कोई अस्तित्व नहीं है।

१-अनावरणता । २-जीवन-रहस्य । ३-ताप । ४-आकर्षण । ५-लाभ तथा उन्माद ।
 ६-झलकपट । ७-योगी । ८-व्यक्ति । ९-समुद्र के सम्पर्क ।

मनुष्य के लिये नितान्त आवश्यक है कि एक-दूसरे में कोई भेद-भाव न रखे, और संसार के हर मनुष्य को समदृष्टि से देखे ।

बुताने रंगो खू को तोड़कर मिलत में गुम हो जा,
न तूरानी रहे बाक़ी न ईरानी न अफ़ग़ानी ।

अर्थात्—वर्ण और वंश के भेदभाव की मूर्तियों को तोड़ कर अपने आप को राष्ट्र में विनीन कर दे, ताकि तैरे बीच से यह विभेद मिट जाये कि यह तूरानी जाति का, वह ईरानी जाति का और वह अफ़ग़ानी जाति का है ।

पश्चिमी विज्ञान के बारे में इकबाल का मत

इकबाल पश्चिमी विज्ञान के इसलिये विरोधी है कि उसके प्रभाव में आकर नवयुवक अपनी संस्कृति और सभ्यता को भूल जाते हैं । पश्चिमी सभ्यता बिजली का एक ऐसा प्रकाश है, जो आँखों में चकाचौध पैदा कर देता है; परन्तु हृदय में कोई ज्योति उत्पन्न नहीं करता । इकबाल कहते हैं—

जिसने सूरज की शुआओं^१ को गिरिप्रतार किया ।

ज़िन्दगी की शबे तारीक^२ सहर^३ कर न सका ॥

यूरोप ने सूर्य-रश्मियों को तो बन्दी बना लिया, परन्तु वह मानव जीवन की अँधेरी रात का प्रभात न कर सका ।

ईश्वर ने यूरोप को देखने वाली आँख तो दी है परन्तु जाग्रत हृदय प्रदान नहीं किया ।

दिले बेदार न दादन्द ब दानाये फरंग ।

ई क़दर हस्त कि चश्मे निगराने दारद ॥

अर्थात्—ईश्वर ने पश्चिमी वैज्ञानिकों को जाग्रत हृदय नहीं दिया, उनको केवल देखनेवाली आँख ही मिली है ।

कर्म के दर्शन के लिये तो इकबाल इस युग में अवतार का स्थान रखते हैं, वे कहते हैं:—

अमल से ज़िन्दगी बनती है जन्नत भी जहन्नम भी ।

यह खाकी अपनी क़ितरत में न नूरी है न नारी^४ है ॥

१-किरणों। २-अँधेरी रात। ३-प्रभात। ४-अग्नि का भागी ।

अर्थात्—स्वर्ग और नरक जो कुछ भी है कर्म पर निर्भर है, कर्म ही से मनुष्य स्वर्ग का अधिकारी बनता है, और कर्म ही उसको नरक का भागी बनाता है। मिट्टी का बना हुआ मनुष्य अपनी प्रकृति में मिट्टी ही है। वह प्रकाश और अग्नि का भागी तो अपने कर्म ही से बनता है।

इकबाल कोरी प्रार्थना और उपासना में विश्वास नहीं रखते, इसीलिये महात्मा गांधी के अहिंसावाद से सहमत न थे। स्वतंत्रता-संग्राम के बीच गांधी जी बड़े-बड़े व्रत रखा करते थे; परन्तु ब्रिटिश शासन पर उसका विशेष प्रभाव न पड़ता था। इसी से प्रभावित होकर इकबाल ने एक समय में कहा था—

ऋषी के फ़ाक्रों से टूटा न बरहमन का तिलिस्म^१ ।

असा^२ न हो तो कलीमी है कारे बे बुनियाद^३ ॥

इस छन्द में इकबाल ने एक ऐतिहासिक स्वतंत्रता आन्दोलन की ओर संकेत किया है। हज़रत मूसा पैगम्बर तूर पर्वत पर ईश्वर से बातें किया करते थे, इसलिये उनको कलीम (वार्त्ता-कर्त्ता) कहते हैं। उनकी जाति जो यहूदी या इज़राईल कहलाती है, मिस्र के सम्राट् फ़िर्ग़ान की गुलाम बन गई थी, ईश्वर ने हज़रत मूसा की पैगम्बरी के चिह्न-स्वरूप उनकी लाठी में विभिन्न प्रकार के चमत्कार रख दिये थे, फ़िर्ग़ान के सामने वह लाठी फुफ़कारती हुई साँप बन गई, तो फ़िर्ग़ान ने उसको जादू समझा और अपने राज्य के बड़े-बड़े जादूगरों को बुला कर मूसा से मुकाबला कराया, जिसमें सब जादूगर हार कर मूसा के अनुयायी बन गये। इकबाल कहते हैं कि लाठी की शक्ति न हो तो कोरी कलीमी का कोई मूल्य नहीं। दुष्ट प्रकृति के लोग धर्म की सीधीसादी शान्तिपूर्ण बातों से सीधे नहीं हुआ करते, उनको तो लाठी अर्थात् शक्ति ही सीधा कर सकती है।

संसार जिनको बुरा कहता है इकबाल उनकी प्रशंसा करते हैं, क्योंकि चाहे जो भी हो वह साहसी और पराक्रमी थे। मुसोलिनी, नेट्शे, और लेनिन ही की नहीं, इकबाल ने शैतान की भी प्रशंसा की है; इसलिये कि

यद्यपि उसने ईश्वर की आज्ञा के सामने सिर नहीं झुकाया, फिर भी इतना तो सिद्ध ही है कि उसने बड़े साहस का परिचय दिया। इसके विपरीत इक़बाल ईरान के प्रसिद्ध कवि और संत 'हाफ़िज़' की बड़ी निन्दा करते हैं और उन को भेड़ों का कवि कहते हैं; क्योंकि उनका काव्य भाग्य पर निर्भर रहने का पाठ पढ़ा कर मनुष्य को कर्महीन बना देता है :

संसार की जातियाँ अपने पतन के समय में अपने धर्म की आज्ञाओं को भी छोड़ बैठती हैं, उनमें कर्म का साहस तो रह नहीं जाता; इसलिये उनसे यह नहीं होता कि अपने धर्म की शिक्षा के अनुसार अपनी दशा बदलें और आलस्य त्याग कर कर्म के लिये कटिबद्ध हो जायें। उनके धर्म-गुरु स्वयं धृष्टता से काम लेकर धर्म की शिक्षा को ही अपनी स्थिति के अनुसार बदल लेते हैं। इक़बाल उनकी निन्दा करते हुए कहते हैं—

खुद बदलते नहीं कुआँ को बदल देते हैं,

हुए इस दर्जा फ़कीहाने^१ हरम बेतौफ़ीक़^२।

अर्थात्—इस्लाम के पण्डित और शास्त्री अपने को तो बदलते नहीं, उलटे कुआँन ही के भाग्य में परिवर्तन कर देते हैं, यह कितने भाग्यहीन और कर्मशून्य हो गये हैं।

एक और स्थान पर कहते हैं—

ऐ तायरे लाहूती^३ उस रिज़क़^४ से भौत अच्छी,

जिस रिज़क़ से आती हो पर्वाज़^५ में कोताही।

अर्थात्—ऐ मनुष्य, तू वह स्वतंत्र जीव है कि तेरा स्थान पृथ्वी नहीं, तू आकाश में उड़नेवाला पक्षी है, ऐसे भोजन से, जो तुझको साहसहीन बना दे और तुझको उड़ने योग्य न रखे, उपवास करके मर जाना अच्छा है, परन्तु यह अच्छा नहीं कि तू सुख-दिलास का दास बनकर रह जाये, और तेरी क्रिया शक्ति का लोप हो जाये।

इक़बाल सच्चे धर्मवादी हैं। वह उस कर्म व्यवस्था से संतुष्ट नहीं जिस से ईश्वर को अलग कर दिया गया हो। अतः वह लेनिन को सम्बोधित करके कहते हैं।

१-काबा के धर्मशास्त्री। २-अकर्मण्य। ३-दर्श लोक का पंछी। ४-जीविका। ५-उड़ान।

कदई कारे खुदा वन्दां तमाम,

बुगज़र अज़ ला जानिबे इल्ला ख़राम ।

तू ने भगवानों अर्थात् राजाओं और सम्राटों को तो समाप्त कर दिया, जो मनुष्यों के अनधिकारी प्रभु बने हुए थे और यह अच्छा किया; परन्तु अब तुम्हें चाहिये कि अपनी व्यवस्था में ईश्वर के विश्वास को भी सम्मिलित कर ल। इस विश्वास के बिना कोई व्यवस्था वास्तविक रूप में कल्याणकारी नहीं हो सकती।

उपरोक्त छन्द के दूसरे पद में इकबाल ने इस्लामी कलमा 'ला इलाह इल्लल्लाह' की ओर संकेत किया है, जिसका अर्थ है—'कोई स्वामी नहीं, पर एक ईश्वर', इकबाल के कहने का अभिप्राय यह है कि कलमे के पूर्वार्द्ध भाग अर्थात् 'कोई स्वामी नहीं' को तो तूने कार्यान्वित कर दिया परन्तु 'ईश्वर ही स्वामी है या पूज्य है' इस भाग को भी पूरा कर दे।

अभी मानव के प्रयास और खोज की समाप्ति नहीं हुई है, प्रतिदिन नई जानकारी प्राप्त हो रही है। प्रकृति के नये-नये रहस्य प्रकट हो रहे हैं। निरन्तर नित्य नये आविष्कार किये जा रहे हैं, कर्म और प्रयास के प्रेमी इकबाल को इसकी बड़ी प्रसन्नता है। वे बड़े हर्ष के साथ कहते हैं—

यह कायनात^१ अभी नातमाम^२ है शायद,

कि आ रही है दमादम^३ सदाये कुनफ़यकुन ।

इस छन्द के अन्त में 'कुन फ़यकुन' क्रुआन का वाक्य है। इसका अभिप्राय यह है कि ईश्वर कुछ बनाना चाहता है तो उसको सामान और सामग्री की आवश्यकता नहीं होती। वह अभीष्ट वस्तु को कहता है कि 'हो जा', बस वह उत्पन्न हो जाती है।

इकबाल कहते हैं कि कदाचित् यह सृष्टि अभी अपूर्ण है। इसलिये कि प्रतिक्षण यह ध्वनि सुनाई दे रही है कि 'हो जा' और होता चला जा रहा है। मानो यह जो कुछ हो रहा है, ईश्वरीय शक्ति ही का दूसरा रूप है। इस प्रकार इकबाल ने कर्मयोग के स्थान को कितना ऊँचा सिद्ध कर दिया है।

भारतवर्ष

इकबाल की शायरी तो देश-अनुराग ही से आरंभ हुई थी। वे अपनी हर कविता भारतवर्ष के प्रेम और उसकी आजादी को सामने रखकर ही लिखते थे। इस संग्रह की प्रथम कविता 'हिमालय' इकबाल का अपने देश के साथ अनन्त प्रेम प्रकट करता है। इसी प्रकार उन की कविता "पक्षी का विलाप" मानो स्वतंत्रता के लिये भारतमाता का विलाप था। इनके अतिरिक्त "तराना-ए-हिन्दी" और "नया शिवालय" भी हिन्दोस्तान के अन्दर परस्पर प्रेम, अंग्रेजों की दासता के बन्धनों से मुक्ति और भारत के गौरव को पुनः स्थापित करने के विचार से ही लिखी गई थी। अंग्रेजों की कूटनीति ने जब देश में फूट डाल दी और हिन्दू मुसलमान जो भाई-भाई के समान एकता और प्रेम से रहते थे, एक-दूसरे को अपना शत्रु समझने लगे। फलस्वरूप देश में जगह जगह बलवे और दंगे होने लगे, तो इकबाल को बड़ा दुःख हुआ, और यह स्थिति उनके लिये असह्य हो गई, और उन्होंने बड़े प्रभाव-जनक और ओजस्वी शैली में सम्प्रदायवादियों को फटकारा और साम्प्रदायिक एकता और शत्रुता का परिणाम बताते हुए कहा—

रुलाता है तेरा नज़्ज़ारा^१ ऐ हिन्दोस्तां मुझको,
कि इब्रतखेज^२ है तेरा फ़साना सब फ़सानों में।
निशाने बगें-गुल^३ तक भी न छोड़ इस बाग में गुलचीं,
तेरी क़िस्मत से झगड़े हो रहे हैं बाग़बानों में।
बतन की फ़िक्र कर नादाँ क़ियामत आने वाली है,
तेरी बर्बादियों के मश्वरे हैं आसमानों में।
न समझोगे तो मिट जाओगे ऐ हिन्दोस्तां वालो,
तुम्हारी दास्तां तक भी न होगी दास्तानों में।

और बाद में उन्होंने इन्हीं विचारों को फ़ारसी में भी प्रकट किया, पर इसके साथ ही उनके मन में एक ऐसा परिवर्तन हुआ कि उन्होंने इस्लामी

दृष्टिकोण ग्रहण कर लिया और केवल मुसलमानों को सम्बोधित करके कविता कहने लगे। उन्होंने मुसलमानों को संदेश दिया कि वह जागृत होकर इस्लामी जीवन व्यवस्था को अपनायें। बात भी ठीक है—यदि कोई व्यक्ति अपनी जाति को अज्ञान और गफलत की निद्रा में निमग्न देखे, तो पहले उसको जगाने के लिये आवाज़ उठायेगा। यही कारण था जो उन्होंने मुसलमानों को ही सम्बोधित किया और उनके जागरण और उत्थान के लिये जोर लगाया।

हज़रत मुहम्मद साहब के साथ इक़बाल का प्रेम

इक़बाल की शायरी में आदि से अन्त तक जो एक खास बात झलकती है, वह इस्लाम धर्म का प्रेम और हज़रत मुहम्मद साहब के प्रति सच्ची श्रद्धा है। इक़बाल हज़रत मुहम्मद साहब के अनन्त भक्त हैं, उनका यह विश्वास है कि हर वह व्यक्ति, जो क़ुर्आन का अध्ययन करता है, उसे क़ुर्आन को इस दृष्टि से पढ़ना चाहिये जैसा कि वह परमात्मा की तरफ़ से उसी पर उतारा गया हो और वह ठीक उसी प्रकार उसमें से ज्ञान के मोती चुने जिस तरह हज़रत मुहम्मद साहब चुना करते थे। इक़बाल हज़रत मुहम्मद साहब को केवल ईश्वर के दूत ही नहीं बल्कि ईश्वर से मिलने का एकमात्र साधन समझते हैं, और उनके प्रेम में इन प्रकार डूबे हुए हैं कि ईश्वर से कहते हैं कि हे प्रभू! क्रियामय के दिन यदि मेरे पापों का हिसाब होना हो, तो दया करके मेरे रसूल के सामने न करना; क्योंकि मुझे बहुत लज्जा आयेगी, उनको मुझसे बहुत-सी आशाएँ थीं और मैंने भी उनसे बहुत से प्रण किये थे। यदि मैं उनके सम्मुख ले जाकर पूछा गया, तो मुझे बहुत लज्जा अनुभव होगी।

यह आदर, सम्मान और प्रेम-भावना की चरम सीमा है कि मनुष्य अपने निकट सम्बन्धी और प्रिय व्यक्ति के सामने लज्जित होना सहन नहीं करता और उसी लज्जा से कई बार अच्छे काम करने पर बाध्य हो जाता है। वह इसी भाव को यूँ प्रकट करते हैं—

तू गनी अज़ हर दो आलम मन फ़कीर,
रोज़े महशर उज़ हाये मन पजीर।

बर अगर बीनी हिसाबम ना गुज़ीर,
अज निगाहे मुस्तफ़ा पिन्हां बिगीर।

अर्थात् ऐ प्रभु ! तू सारी सृष्टि से बेपरवाह है, और मैं फ़कीर हूँ, क़यामत के दिन तू मेरी क्षमा-याचना को स्वीकार कर लेना। और यदि तेरे निकट मेरा हिसाब लेना अनिवार्य ही हो, तो मुस्तफ़ा अर्थात् हज़रत मुहम्मद साहब की आँखों से छुपाकर लेना।

वे एक जगह हज़रत मुहम्मद साहब के बारे में कहते हैं—

जो समझूं और कुछ खाके अरब में सोने वाले को।

मुझे माज़ूर रख, मैं मस्ते सहबाये मुहब्बत हूँ ॥

अरब की भूमि में सोनेवाले (हज़रत मुहम्मद साहब) को मैं खुदा का पैग़म्बर तो मानता ही हूँ, इसके अतिरिक्त मैं उनको कुछ इससे बढ़कर भी मानूंगा तो मुझे क्षमा करना चाहिए; क्योंकि मैं उनके प्रेम की मदिरा पी कर आपे में नहीं हूँ।

इससे प्रकट है कि इक़बाल को हज़रत मुहम्मद साहब से अगाध प्रेम और असीम श्रद्धा थी।

इक़बाल का सन्देश व्यक्ति और समाज के लिये

इक़बाल प्रत्येक व्यक्ति को आत्म-जिज्ञासा में लीन देखना चाहते थे। उनकी आत्म-जिज्ञासा रूमी के शब्दों में किसी ऐसे पूर्ण पुरुष की जिज्ञासा है, जो पूरा योगी है और जिस में ज्ञान, कर्म और भक्ति का सामंजस्य पाया जाता हो। रूमी की रूह तड़पती है और भगवान से माँगती है कि उसको कोई ऐसा 'पूर्ण गुरु' (Superman) मिल जाय, जो आत्म-साक्षात्कार करा दे—

दी शेख़ बा चराग़ हमी ग़श्त गर्दे शहर,
कज़ दामो दद मलूलमो इनसानम् आर्जूस्त।
जौं हमरहाने सुस्त अनासर दिलम् गिरप्रत,
शेरे खुदा व रुस्ते दस्तानम् आर्जूस्त।
गुप्रतम् कि याप्रत मी न शुवद जुस्ता एम् मा,
गुप्रत आंकि याप्रत मी न शुवद आनम् आर्जूस्त।

कल सायंकाल शेख को दिया लेकर शहर के गिर्द कुछ ढूँढ़ते हुए देखा । वह कह रहा था कि मैं इन पशुरूपी मनुष्यों से तंग आ गया हूँ, मुझे तो मानव की खोज है जो परमात्मा का सिंह हो, रस्तम जैसा शक्ति-शाली हो। मैंने कहा कि ऐसा मानव तो ढूँढ़ने पर भी नहीं मिलता है, तो उसने कहा कि इसी असम्भव को खोज निकालना ही मेरी हार्दिक इच्छा है ।

इस पद की प्राप्ति के लिये इकबाल की समिति में हर आत्मा को निम्नलिखित गुणों से सम्पन्न होना चाहिये ।

१. प्रेम—इसके बारे में वे कहते हैं—

नुब्रता ए नूरे कि नामे ऊ खुदीस्त,
जरे खाके मा शरारे ज़िन्दगीस्त ;
अज़ मुहब्बत मी शुबद पायंदातर,
ज़िन्दातर सोज़िन्दातर ताबिन्दातर ।

वह ज्योति का कण कि जिस का नाम खुदी है, वह हमारे मिट्टी के ढाँचे में जीवन की चिनगारी है और वह प्रेम से ही पक्की होती है —दीर्घायु, अधिक चमकने और भड़कनेवाली है ।

२. त्याग—सांसारिक वस्तुओं का परित्याग—उदाहरण के रूप में वह एक वाज़ पक्षी को पूर्ण त्यागी मानते हैं । वह स्वयं मार कर खाता है, कहीं घोंसला नहीं बनाता और संसार से बहुत ऊँचा पहाड़ों की चट्टानों में बसेरा करता है ।

३. साहस—

आईने जवांमदाँ हकगोई व बेवाकी,
अल्लाह के बंदों को आती नहीं रूबाही ।

बहादुर पुरुषों की यह रीति है कि वह कभी सत्य को नहीं छोड़ते और भगवान् के अनुयायी लोमड़ी की तरह चालाकी नहीं जानते ।

४. सहनशीलता—

आदमियत एह जामे आदमी—बा खबर शी अज़ मुकामे आदमी ।

मानवता ही मनुष्य का गौरव है। तू मनुष्य के मान पद को समझ। इसीलिये तो इकबाल ने नानक, रामतीर्थ, बुद्ध, भर्तृहरि और कुरंतुल ऐन की प्रशंसा की है और हिन्दुओं के गायत्री मंत्र का अनुवाद किया है।

५. हलाल की कमाई—

इकबाल चाहते हैं कि प्रत्येक व्यक्ति को अपने हाथों से कमाई करनी चाहिये।

६. उपजाऊ कार्यों का करना ही मानव-धर्म है, भेड़-चाल तो मनुष्य के लिये लज्जा का कारण है।

तकलीद से नाकारा न कर अपनी खुदी को,

कर इसकी हिफाजत कि यह गौहर है यगाना।

किसी के पीछे लगने से अपनी आत्मा को बदनाम न कर, क्योंकि यह मोती तो तुझको अमूल्य प्रदान किया गया है।

निम्नलिखित आत्मा की कमजोरी और निर्बलता का कारण होते हैं—

१. भय—भगवान् के अतिरिक्त किसी से भी भय न होना चाहिये।

२. भिक्षा—किसी के समक्ष हाथ फैलाने से निर्धन और भी निर्धन होता है।

३. दासता—परतंत्रता से मानव काया में दिल मुर्दा हो जाता है और शरीर के लिए एक प्रकार का बोझ।

४. पूर्वजों का गौरव या रक्त की बड़ाई—क्योंकि वे कहते हैं कि पूर्वजों की बड़ाई तो केवल शरीर तक है और यह नाशवान है, इसलिये अपनी बुनयाद किसी दूसरी पक्की दस्तु पर निर्धारित करना ही उचित है और वह है तेरा ईश्वरी सम्बन्ध।

मानव को जिस समाज का अंश होना चाहिये, उसके लिये इकबाल ने निम्नलिखित शर्त रखी है—

१. वह आध्यात्मिक आधार पर स्थापित हो।

२. वह किसी मुहम्मद जैसी व्यक्ति को केन्द्रीय स्थान दे।

३. वह अपने लिये कुर्बानि जैसे पुस्तक को पथ-प्रदर्शक बनाये।

४. उसका कोई केन्द्र अवश्य होना चाहिये।

५. सारे समाज का एक ध्येय का होना आवश्यक है ।
६. वह प्रकृति की शक्तियों को जीतने वाली हो ।
७. समाज की सामूहिक आत्मा व्यक्तिगत आत्मा की तरह उन्नति करे ।

८. वह मातृभाव की रक्षा करे ।

और ये नियम हर समाज की उन्नति, वृद्धि और विकास के लिये आवश्यक हैं ।

डा० इकबाल का राम प्रेम

डा० इकबाल को भगवान् राम से अगाध प्रेम था और उन्होंने उनके बारे में एक कविता लिखी भी और उनकी जीवन भर यह आकांक्षा रही कि वह जहांगीर के समय के फ़ारसी कवि मसीही पानीपती की रचित रामायण को प्रकाशित करें। चूनांचि उन्होंने हिज़-एक्सेलेसी महाराजा सर कृष्णप्रसाद हैदराबाद दक्कनवालों से आग्रह किया कि उनको यदि इसकी कोई प्रति कहीं से मिल जाय, तो वे इसे छाप दें। परन्तु दुर्भाग्य से उनको उस रामायण की प्रति न मिल सकी और उनकी हृदयकामना हृदय में ही रही ।

मैं आशा करता हूँ कि यदि अवकाश प्राप्त हुआ, तो मैं उसे छाप कर ही रहूँगा क्योंकि मुझे उसकी प्रति प्राप्त हो गई है ।

कलकत्ता विश्वविद्यालय, कलकत्ता
१-६-१९५५

होरालाल चोपड़ा

प्राक्थन

अल्लामा इक़बाल

(स्वर्गीय) शेख सर अब्दुलकादिर (बेरिस्टर एट-लॉ) की नज़र में—

कैसे खबर थी कि 'ग़ालिब' मरहूम^१ के बाद हिन्दुस्तान में फिर कोई ऐसा शरूफ़ पैदा होगा जो उर्दू शायरी के जिस्म में एक नई रूह फूँक देगा और जिसकी बदौलत 'ग़ालिब' का बेनज़ीर तख़य्युल^२ और निराला अन्दाज़े-बयान^३ फिर वजूद में आएँगे और उर्दू-अदब^४ के फ़रोग^५ का बायस^६ होंगे। मगर जवाने उर्दू की खुशइक़बाली^७ देखिये कि इस ज़माने में 'इक़बाल' सा शायर उम्मे नसीब हुआ, जिसके कलाम^८ का सिक्का हिन्दुस्तान भर की उर्दूदाँ^९ दुनिया के दिलों पर बैठा हुआ है और जिस की शुहरत^{१०} हम व ईरान बल्कि फ़िरंगिस्तान^{११} तक पहुँच गई है।

'ग़ालिब' और 'इक़बाल' में बहुत-सी बातें मुश्तरक^{१२} हैं। अगर मैं तनासुख^{१३} का कायल होता, तो ज़रूर कहता कि मिर्ज़ा असदुल्लाह खां 'ग़ालिब' को उर्दू-फ़ारसी की शायरी से जो इश्क़ था, उसने उनकी रूह को अदम^{१४} में जाकर भी चैन न लेने दिया और मजबूर किया कि वह फिर किसी जसदे-खाकी^{१५} में जल्वा-अफ़रोज़^{१६} होकर शायरी के चमन की आबयारी^{१७} करे; और उसने पंजाब के एक गोशे^{१८} में, जिसे सियाल-कोट कहते हैं, दोबारा जन्म लिया और मुहम्मद इक़बाल नाम पाया। जब शेख मुहम्मद इक़बाल के बालिद बुजुर्गवार और उनकी प्यारी मां उनका नाम तजवीज़ कर रहे होंगे, तो कुबूलेदुआ^{१९} का वक़्त होगा कि उनका दिया हुआ नाम अपने पूरे मानों में सहीह साबित हुआ और उनका

१-स्वर्गीय। २-अनुपम कल्पना। ३-वर्णन शैली। ४-साहित्य। ५-उन्नति। ६-कारण। ७-सौभाग्य। ८-काव्य। ९-उर्दू-भाषी। १०-ख्याति। ११-यूरोप। १२-समान। १३-आवागमन। १४-मृत्यु लोक। १५-पार्थिव शरीर। १६-शोभायमान। १७-सिंचाई। १८-कोने। १९-प्रार्थना की स्वीकृति।

इकबालमन्द बेटा हिन्दुस्तान में तहसील-इल्म^१ से फ़ारिग होकर इंगलिस्तान पहुँचा; वहाँ कैम्ब्रिज में कामयाबी से वक्त खत्म करके जर्मनी गया और इल्मी दुनिया के आला मदरिज^२ तै करके वापस आया।

शेख मुहम्मद इकबाल ने यूरोप के क्रियाम के ज़माने में बहुत-सी फ़ारसी किताबों का मुताला^३ किया और इस मुताला का खुलासा एक मुहक्किक्काना^४ किताब की सूरत में शाय किया, जिसे फ़ल्सफ़ा ईरान^५ की मुहत्तसर तारीख कहना चाहिए। इसी किताब को देखकर जर्मनी वालों ने शेख मुहम्मद इकबाल को 'डॉक्टर' का इल्मी दर्जा दिया। सरकारे अंग्रेजी को, जिसके पास मशरिक्की^६ जुबानों और उलूम^७ की निस्वत बराहे-रास्त^८ इत्तेला के ज़राए^९ काफ़ी नहीं थे, जब एक अर्सा के बाद मालूम हुआ कि डॉक्टर साहब की शायरी ने आलमगीर^{१०} शहरत पैदा कर ली है, तो उसने भी अज़रा क़द्रदानी^{११} 'सर' कामुस्ताज़ खिताब^{१२} उन्हें अता^{१३} किया। अब वह डॉक्टर सर मुहम्मद इकबाल के नाम से मशहूर है। लेकिन उनका नाम जिसमें यह लुफ़्ते खुदा दाद^{१४} है कि नाम का नाम है और तख़ल्लुस^{१५} का तख़ल्लुस, उनकी डाक्टरी और सरी से ज्यादा मशहूर और मक़बूल^{१६} है।

सियालकोट में एक कालेज है, जिसमें उलमाए-सलफ़^{१७} की यादगार और उन के नक़शे-क़दम^{१८} पर चलनेवाले एक बुजुर्ग मौलवी सय्यद मीर हसन साहब उलूमे मशरिक्की का दर्स^{१९} देते हैं। हाल में उन्हें गवर्नमेण्ट से खिताब 'शम्सुल-उलमा'^{२०} भी मिला है। उनकी तालीम का यह खास्ता^{२१} है कि जो कोई उनसे फ़ारसी या अरबी सीखे उसकी तबीअत में उस जुबान का सहीह मज़ाक़^{२२} पैदा कर देते हैं। इकबाल को भी अपनी इक्तेदाए उम्र में मौलवी सय्यद मीरहसन सा उस्ताद मिला। तबीयत में इल्मोअदब से मुनासिबत^{२३} कुदरती तौर पर मौजूद थी। फ़ारसी और

१-विद्योपार्जन। २-उच्च पदों। ३-अध्ययन ४-विवरण पूर्ण। ५-इरानी दर्शन। ६-एशियाई ७-विद्याओं। ८-प्रत्यक्ष ज्ञान। ९-साधन। १०-विश्वव्यापी ख्याति। ११-सम्मान स्वरूप। १२-प्रमुख उपाधि १३-पदान। १४-ईश्वर प्रदत्त १५-कवि का उपनाम। १६-लोकप्रिय १७-प्राचीन विद्वानों १८-पद-चिह्न। १९-पाठ। २०-सद्गमद्वोपाध्याय। २१-विशेषता २२-आभरुचि। २३-लगाव।

अरबी की तहसील मौलवी साहब मौसूफ से की, सोने पर मुहाम्मा हो गया। अभी स्कूल में ही पढ़ते थे कि कलामे^१ मौजू जुवान में निकलने लगा। पंजाब में उर्दू का रिवाज इस क्रम में हो गया था कि हर शहर में जुवान-दानी^२ और शेरों शायरी का चरचा कमोबेश मौजूद था। सियालकोट में भी शेख मुहम्मद इकबाल की तालीम के दिनों में एक छोटा-सा मुशायरा होता था, उसके लिए इकबाल ने कभी-कभी गज़ल लिखनी शुरू कर दी। शुआराए उर्दू में उन दिनों नवाब मिर्जा खान साहब 'दाग' देहलवी का बहुत शूहरा था और निजामे-दक्कन का उस्ताद होने में उनकी शूहरत और भी बढ़ गई थी। लोग जो उनके पास जा नहीं सकते थे, खतोकिताबत के ज़रीआ दूर ही से उनसे शागिर्दी की निसबत^३ पैदा करते थे। गज़लें डाक में उनके पास जाती थीं और वह इस्लाह^४ के बाद वापस भेजते थे। पिछले जमाने में जब डाक का यह इंतज़ाम न था, किसी शायर को इतने शागिर्द कैसे मुयस्सर आ सकते थे, अब इस मुहलत की वजह से यह हाल था कि सैकड़ों आदमी उनसे गायवाना तलम्मुज^५ रखते थे और उन्हें इस काम के लिए एक अमला और एक महकमा रखना पड़ता था। शेख मुहम्मद इकबाल ने भी खत लिखा और चन्द गज़लें इस्लाह के लिए भेजीं। इस तरह इकबाल को उर्दू-जुवानदानी के लिए भी ऐसे उस्ताद से निसबत पैदा हुई, जो अपने वक्त में जुवान की खूबी के लिहाज़ से फ़न्ने-अरूज़^६ में यक्ता^७ समझा जाता था। गो इस इव्तदाई गज़ल-गोई में वह बातें तो मौजूद न थी, जिनसे बाद-अज़ा^८ कलामे इकबाल ने शूहरत पाई; मगर जनाबे 'दाग' पहचान गए कि पंजाब के एक दूरउफ़तादा^९ ज़िले का यह तालिब-इल्म कोई मामूली गज़लगो नहीं। उन्होंने जल्द कह दिया कि कलाम में इस्लाह की गुंजाइश बहुत कम है और तलम्मुज का यह सिलसिला बहुत देर कायम नहीं रहा। अलबत्ता उसकी याद दोनों तरफ़ रह गई। 'दाग' का नाम उर्दू शायरी में ऐसा पाया^{१०} रखता है कि इकबाल के दिल में 'दाग' से इस मुहत्तसर और गायवाना तल्लुक की

१-पद्यात्मिक वाक्य। २-भाषा-ज्ञान। ३-सम्बन्ध। ४-संशोधन। ५-शिष्य सम्बन्ध। ६-काव्य का ज्ञान। ७-अद्वितीय। ८-तत्पश्चात्। ९-दूरस्थित। १०-जैवा स्थान।

भी कद्र है और इकबाल ने 'दाग' की जिन्दगी ही में कुबूलेआम^१ का ब्रह्म दर्जा हासिल कर लिया था कि दाग मरहूम इस बात पर फ़ख़ू करते थे कि इकबाल भी उन लोगों में शामिल है जिनके कलाम को उन्होंने इस्लाह की। मुझे खुद दक्कन में उनसे मिलने का इत्तेफ़ाक़ हुआ और मैंने खुद ऐसे फ़ख़िया कलमात^२ उनकी जुबान से सुने।

सियालकोट के कालेज में एफ० ए० के दर्जा तक तालीम थी, बी० ए० के लिए शेख मुहम्मद इकबाल को लाहौर आना पड़ा। उन्हें इल्मे-फ़ल्सफ़ा की तहसील का शौक था और उन्हें लाहौर के असातजा^३ में एक निहायत शकीक^४ उस्ताद मिला, जिसने फ़ल्सफ़ा के साथ उनकी मुनासिबत देखकर उन्हें खास तबज़्जह से पढ़ाना शुरू किया। प्रोफ़ेसर आर्नल्ड साहब, जो अब सर टॉमस आर्नल्ड हो गए हैं और इंगलिस्तान में मुक़ोम^५ हैं, गैरमामूली^६ क़ाबिलियत के शरूस हैं, कुव्वतेतहरीर^७ उनकी बहुत अच्छी है और वह जुस्तुजू^८ और तलाज के तरीक़े-जदीद^९ से खूब वाकिफ़ है। उन्होंने चाहा कि अपने शागिर्द को अपने मजाक^{१०} और अपने तर्जों अमल^{११} से हिस्सा दें और वह इस इरादा में बहुत कुछ कामयाब हुए। पहले उन्होंने अलीगढ़ कालेज की प्रोफ़ेसरी के जमाने में अपने दोस्त मौलाना शिब्ली मरहूम^{१२} के मजाक़े इल्मी के पुस्तक^{१३} करने में कामयाबी हासिल की थी। अब उन्हें यहाँ एक और जौहरे क़ाबिल^{१४} नज़र आया, जिसके चमकाने की आर्जू उनके दिल में पैदा हुई; और ज़ां दोस्ती और मुहब्बत उस्ताद और शागिर्द में पहले दिन से पैदा हुई, वह आखिरदा शागिर्द को उस्ताद के पीछे-पीछे इंगलिस्तान ले गई और वहाँ यह रिश्ता और भी मज़बूत हो गया और आज तक कायम है। आर्नल्ड खुश है कि मेरी मेहनत ठिक़ाने लगी और मेरा शागिर्द इल्मी दुनिया में मेरे लिए भी बाइसे-शुहरत^{१५} अफ़ज़ाई हुआ, और इकबाल मोतरिफ़^{१६} है कि जिस मज़ाक़ की बुनियाद सव्यद मीर हसन ने डाली थी और जिसे दर्मियान में 'दाग' के

१-लाकाप्रवृत्ता। २-गौरवपूखे वाक्य। ३-गुरुजन। ४-स्नेही। ५-निवाभकर्त्ता। ६-असाधारण। ७-लेखन-शक्ति। ८-खोज। ९-नवीन शैली। १०-रुचि। ११-कार्य-प्रणाली। १२-स्वर्गीय। १३-परिपक्व। १४-सगुण व्यक्ति। १५-ख्याति-वृद्धि का कारण। १६-स्वीकारकर्त्ता।

गायबाना तआरुफ^१ ने बढ़ाया था, उसके आखिरी मरहले आर्नल्ड की शक्तीकाना रहबरी^२ से तै हुए ।

‘इकवाल’ को अपने इल्मी मनाजिल तै करने मे अच्छे अच्छे रहवर मिले और बड़े बड़े उलमा से साविका पड़ा, उन लोगों मे केम्ब्रिज युनिवर्सिटी के डॉक्टर मेक टेगर्ट, ब्राउन, निकलसन और साल्ती काविले जिक्र हैं । प्रोफेसर निकलसन हमारे शुक्रिया के खास तौर पर मुस्तहक^३ हैं, क्योंकि उन्होंने इकवाल को मशहूर फारसी नज़्म ‘अमरारे खदी’ का अंग्रेजी तर्जमा^४ करके और उस पर दीवाचा और हवाजी^५ लिखकर यूरोप और अमरीका को इकवाल से रुशनास^६ किया । इसी तरह हिन्दुस्तान की इल्मी दुनिया मे जितने नामवर उस जमाने मे मौजूद थे, मसलन-मोलाना ‘गिब्ली’ मरहूम, मौलाना ‘हाली’ मरहूम, ‘अकबर’ मरहूम—सबसे इकवाल को मुलाकात और खतोकिताबत रही और उनके असरात^७ इकवाल के कलाम पर और इकवाल का अमर उनके तवाए^८ पर पड़ता रहा । मौलाना ‘गिब्ली’ ने बहुत से खुतूत मे और हजरते अकबर ने न फिक्र खने मे बल्कि बहुत से अशआर में इकवाल के कमाल का एतराफ^९ किया है और इकवाल ने अपनी नज़्म मे इन बाकमालों^{१०} की जगह-जगह तारीफ की है ।

इब्तिदाई^{११} मश्क के दिनों को छोड़कर इकवाल का उर्दू कलाम बीसवीं सदी के आगाज^{१२} से कुछ पहले शुरू होता है । १९०१ ई० मे गालिवन दो तीन साल पहले मैंने उन्हे पहली मर्तबा लाहौर के एक मुशायरा मे देखा । इस बज़्म^{१३} मे उनकी उनके चन्द हमजमाअत^{१४} खीच कर ले आए और उन्होंने कह-सुनकर एक गजल भी उनसे पढ़वाई । उस वक्त तक लाहौर में लोग इकवाल से वाकिफ न थे । छोटी-सी गजल थी, सादे-से अलकाज, जमीन^{१५} भी मुश्किल न थी, मगर कलाम में शोखी^{१६} और बेसाहतापन^{१७} मौजूद था; बहुत पसन्द की गई । उसके बाद दो-तीन मर्तबा फिर उसी मुशायरे मे उन्होंने गजले पढ़ीं और लोगों को मालूम

१-परिचय । २-स्नेहपूर्ण पथ-प्रदर्शन । ३-अधिकारी पात्र । ४-अनुवाद । ५-नोट्स । ६-परिचित । ७-प्रभाव । ८-विचारों । ९-स्वीकार करना । १०-उच्च विद्वानों । ११-आरंभिक अभ्यास । १२-आरंभ । १३-गोष्ठी । १४-पढ़पाठी । १५-कविता शैली । १६-चञ्चलता । १७-सरलता ।

हुआ कि एक होनहार शायर मैदान में आया। मगर यह शहरत पहले-पहले लाहौर के कालिजों के तुलबा^१ और बाज और ऐसे लोगों तक महदूद^२ रही, जो तालीमी मशागिल^३ से तअल्लुक रखते थे। इतने में एक अदबी मजलिस^४ कायम हुई, जिसमें मशाहीर^५ शरीक होने लगे और नज्मोनन्न^६ के मजामीन की उसमें माँग हुई। शेख मुहम्मद इकबाल ने उसके एक जलसा में अपनी वह नज्म, जिसमें 'कोहे हिमालय' से खिताब^७ है, पढ़ कर सुनाई। उसमें अंग्रेजी खियालात थे और फ़ारसी बन्दिशें,^८ इस पर खूबी यह कि वतन परस्ती की चाशनी उसमें मौजूद थी। जरूरियाते-वक्त के मुवाफ़िक होने के सबब बहुत मक़बूल हुई और कई तरफ़ से फ़र्माइशें होने लगीं कि उसे शायर^९ किया जाये। मगर शेख साहब यह उज़्र करके कि अभी नज़रे सानी^{१०} की जरूरत है, उसे अपने साथ ले गये और वह उस वक्त छपने न पाई। इस बात को थोड़ा ही अर्सा गुज़रा था कि मैंने अदबे उर्दू की तरक्की के लिए रिसाला^{११} 'मख़्जन' जारी करने का इरादा किया। इस असना^{१२} में शेख मुहम्मद इकबाल से मेरी दोस्ताना मुलाकात पैदा हो चुकी थी। मैंने उनसे वादा लिया कि इस रिसाला के हिस्साए नज़म के लिये वह नए रंग की नज़में मुझे दिया करेंगे। पहला रिसाला शायर होने को था कि मैं उनके पास गया और मैंने उनसे कोई नज़म मांगी, उन्होंने कहा, अभी कोई नज़म तय्यार नहीं। मैंने कहा— "हिमालय वालों" नज़म मुझे दे दोजिये और दूसरे महीने के लिए कोई और लिखिए। उन्होंने इस नज़म के देने में पसीपेज^{१३} की क्योंकि उन्हें यही खियाल था कि उसमें कुछ खामियां^{१४} हैं। मगर मैं देख चुका था कि वह बहुत मक़बूल हुई, इसलिए मैंने ज़बरदस्ती वह नज़म उनसे ले ली और 'मख़्जन' की पहली जिल्द के पहले नम्बर में (जो अप्रैल १९०१ ई० में निकला) शायर कर दी। जहाँ से गोया इकबाल की उर्दू शायरी का पब्लिक तोर पर आगाज़ हुआ और १९०५ ई० तक जब वह विलायत गये, यह सिलसिला

१-झात्र-गण । २-सीमित । ३-कार्यो । ४-साहित्यिक गोष्ठी । ५-प्रसिद्ध काव्यगण । ६-पद्य तथा गद्य । ७-सम्बोधन । ८-रचना-शैली । ९-प्रकाशित । १०-प्रत्यालोचन । ११-पत्रिका । १२-बीच । १३-संकोच । १४-त्रुटियां ।

जारी रहा। इस अर्सी में वह 'मरुज्जन' के हर नम्बर के लिये कोई न कोई नज़्म लिखते थे और ज्यों-ज्यों लोगों को उनकी शायरी का हाल मालूम होता गया, जाबजा^१ मुस्तलिफ़^२ रिसालों और अखबारों से फ़र्माइशें^३ आने लगीं और अंजुमनें^४ और मजालिस^५ दख्खिस्तें करने लगीं कि उनके सालाना जलसों में लोगों को वह अपने कलाम से महज़ूज़^६ करें। शेख़ साहब उस वक़्त तालिब-इल्मी से फ़ारिग़ होकर गवर्नमेण्ट कालेज में प्रोफ़ेसर हो गए थे और दिन-रात इल्मी मुहबतों^७ और मशागिल में बसर करते थे। तबीअत ज़ोरों पर थी, शेर कहने की तरफ़ जिस वक़्त मायल^८ होते तो ग़ज़ब की आमद^९ होती थी, एक एक निशस्त^{१०} में बेशुमार शेर हो जाते थे, उनके दोस्त और बाज़ तालिब-इल्म जो पास होते पेन्सिल कागज़ लेकर लिखते जाते और वह अपनी धुन में कहते जाते। मैंने उस ज़माने में उन्हें कभी कागज़ कलम लेकर फ़िक्रे सुखन^{११} करते नहीं देखा, मौजू^{१२} अल्फ़ाज़ का एक दरिया बहता था, एक चश्मा^{१३} उबलता मालूम होता था। एव ख़ास क़ैफ़ियत^{१४} रिक्कत^{१५} की उमूमन^{१६} उन पर तारी होती थी अपने अशआर सुरीली आवाज़ में तरनुम^{१७} से पढ़ते थे, खुद वज्द^{१८} करत और दूसरों को वज्द में लाते थे। यह अजीब खुसीसियत^{१९} है विहाफ़िज़ा^{२०} ऐसा पाया है कि जितने शेर इस तरह जुबान से निकलें, अग़र वह एक मुसल्सल^{२१} नज़्म के हों तो सबके सब दूसरे वक़्त और दूसरे दिन उसी तर्तीब^{२२} से हाफ़िज़ा में महफ़ूज़^{२३} होते हैं, जिस तर्तीब से वह कहे गए थे; और दर्मियान में खुद वह उन्हें कलमबन्द^{२४} भी नहीं करत थे। मुझे बहुत से शुअरा^{२५} की हमनशीनी^{२६} का मौक़ा मिला है और बाज़ को मैंने शेर कहते भी देखा और सुना है; मगर यह रंग किसी और में नहीं देखा। इक़बाल की एक और खुसीसियत यह है कि बईहमा^{२७}

१—जगह-जगह। २—विभिन्न। ३—मांग। ४—समितियां। ५—गोष्ठियां। ६—आनन्दत
७—ज्ञानात्मक संगतों। ८—प्रवृत्त। ९—विचारों की उत्पत्ति। १०—बैठक। ११—काव्य चिंतन
१२—द्वन्द्वो बद्ध। १३—जलस्रोत। १४—मनोदशा। १५—करुण भाव। १६—प्रायः। १७—लयसे
१८—भूमना। १९—विशेषता। २०—रमरण-शक्ति। २१—क्रम बद्ध। २२—क्रम
२३—सुरक्षित। २४—लिपि-बद्ध। २५—कवि वृन्द। २६—संगति। २७—इसके बावजूद

मौजूनि-ए-तबा^१ वह हस्बे-फर्माइश^२ शेर कहने से कासिर^३ हैं, जब तबीयत खुद मायले-नज्म^४ हो, तो जितने शेर चाहें कह दें; मगर यह कि हर वक्त और हर मौक़ा पर हस्बे फर्माइश वह कुछ लिख सकें। यह करीब-करीब नामुमकिन है, इसीलिए जब उनका नाम निकला और फर्माइशों की भरमार हुई तो उन्हें अक्सर फर्माइशों की तामील^५ से इनकार ही करना पड़ा। इसी तरह अंजुमनों और मजालिस को भी वह उममन जवाब ही देते रहे; फ़क़त^६ लाहौर की अंजुमने-हिमायते-इस्लाम को बाज़ वजह के सबब यह मौक़ा मिला कि उसके सालाना जल्सों में कई साल मुतवातिर इक़बाल ने अपनी नज़्म सुनाई, जो खास उसी जलसा के लिए लिखी जाती थी और जिसकी फ़िक्र वह पहले से करते रहते थे।

अव्वल-अव्वल^७ जो नज़्म जलसा-ए-आम^८ में पढ़ी जाती थीं, तहतुल्लफ़ज़^९ पढ़ी जाती थीं और इस तर्ज़^{१०} में भी एक लुफ़्फ़ था, मगर बाज़ दोस्तों ने एक मर्तबा जलसए आम में शेख़ मुहम्मद इक़बाल से बइसरार^{११} कहा कि नज़्म तरन्नुम से पढ़ें। उनकी आवाज़ क़ुदरतनु^{१२} बलन्द और खुश-आइन्द^{१३} है, तर्ज़े तरन्नुम^{१४} से भी खासे वाकिफ़ हैं, ऐसा समां^{१५} बंधा कि सुकूत^{१६} का आलम छा गया और लोग झूमने लगे। इसके दो नतीजे हुए, एक तो यह कि अब उनके लिए तहतुल्लफ़ज़ पढ़ना मुश्किल हो गया है, जब कभी पढ़ें लोग इसरार करते हैं कि लय से पढ़ा जाय, और दूसरा यह कि पहले तो ख़वास^{१७} ही उनके कलाम के क़द्रदां^{१८} थे और उसको समझ सकते थे, इस कशिश^{१९} के सबब अव्वाम^{२०} भी खिंच आये। लाहौर में 'जल्सए हिमायते इस्लाम' में जब इक़बाल की नज़्म पढ़ी जाती है तो दस-दस हज़ार आदमी एक वक्त में जमा होते हैं और जब तक नज़्म पढ़ी जाये लोग दमबख़ुद^{२१} बैठे रहते हैं। जो समझते हैं वह भी मत्ह^{२२} और जो नहीं समझते वह भी मत्ह होते हैं।

१९०५ ई० से १९०८ ई० तक इक़बाल की शायरी का एक दूसरा

-
- १—मस्तिष्क काव्योचित होना। २—मांग अनुसार। ३—असमर्थ। ४—कविताकी ओर प्रवृत्ति। ५—पूर्ति। ६—केवल। ७—सर्वप्रथम। ८—साधारण सभा। ९—बिना गाये हुए। १०—ढंग। ११—साग्रह। १२—स्वभावतः। १३—रुचिकर। १४—गाने का ढंग। १५—दृश्य। १६—नीरवता की अवस्था। १७—प्रमुख गण। १८—गुण ग्राहक। १९—आकर्षण। २०—जन साधारण। २१—स्तब्ध। २२—निमग्न।

दौर^१ शुरू हुआ। यह वह जमाना है जो उन्होंने यूरोप में बसर किया। गो^२ वहाँ उन्हें शायरी के लिए निस्वतन्त्र^३ कम वक्त मिला और उन नज़मों की तादाद जो वहाँ के क्रियाम^४ में लिखी गई थोड़ी हैं, मगर उसमें एक खास 'ग' वहाँ के मुशाहिदात^५ का नज़र आता है। इस जमाने में दो बड़े तग़य्युर^६ उन के ख्यालात में आये। उन तीन सालों में से दो साल ऐसे थे जिनमें मेरा भी वहीं क्रियाम था और अक्सर मुलाकात के मौके मिलते रहते थे।

एक दिन शेख मुहम्मद इक़बाल ने मुझसे कहा कि उनका इरादा मुसम्मम^७ हो गया है कि वह शायरी को तर्क^८ कर दें और क़मन खा लें कि शेर नहीं कहेंगे और जो वक्त शायरी में सर्फ़^९ होता है, उसे किसी मुफ़ीद^{१०} काम में सर्फ़ करेंगे। मैंने उनसे कहा कि उनकी शायरी ऐसी शायरी नहीं है जिसे तर्क करना चाहिए, बल्कि उनके क़लाम में वह तासीर^{११} है, जिससे मुमकिन है कि हमारी दर्मांदा^{१२} क़ौम और हमारे क़मनसीब^{१३} मुल्क के अम्राज़^{१४} का इलाज हो सके; इसलिए ऐसी मुफ़ीद खुदादाद^{१५} ताक़त को बेकार करना दुरुस्त न होगा। शेख साहब कुछ कायल हुए कुछ न हुए और यह करार पाया कि आर्नल्ड साहब की राय पर आखिरी फ़ैसला छोड़ा जाए। अगर वे मुझसे इत्तेफ़ाक़^{१६} करें, तो शेख साहब अपने इरादाएँ तर्क^{१७} शेर^{१८} को बदल दें और अगर वे शेख साहब से इत्तेफ़ाक़ करें तो तर्क^{१९} शेर इस्तिथार^{२०} किया जाये। मैं समझता हूँ इल्मी दुनिया की खुशकिस्मती थी कि आर्नल्ड साहब ने मुझसे इत्तिफ़ाक़ राय किया और फ़ैसला यही हुआ कि इक़बाल के लिए शायरी को छोड़ना जायज़^{२१} नहीं और जो वक्त वह इस शुग़ल^{२२} की नज़र^{२३} करते हैं वह उनके लिए भी मुफ़ीद है और उनके मुल्को-क़ौम के लिये भी मुफ़ीद है। एक तग़य्युर जो हमारे शायर की तबीअत में आया था, उसका तो यूँ खात्मा हुआ; मगर दूसरा तग़य्युर एक छोटे से आग़ाज़^{२४} से एक बड़े अंजाम^{२५} तक पहुँचा

१—अध्याय । २—यद्यपि । ३—अनुपाततः । ४—निवास । ५—अनुभवों । ६—परिवर्तन । ७—दृढ़ । ८—परित्यक्त । ९—व्यय । १०—लाभदायक । ११—प्रभाव, गुण । १२—पतनशील । १३—भाग्यहीन । १४—बीमारियों । १५—ईश्वर-प्रदत्त । १६—सहमति । १७—कविता त्याग का निश्चय । १८—ग्रहण । १९—उचित । २०—कार्य-वृत्ति । २१—मैं । २२—आरम्भ । २३—अंत ।

यानी इकबाल की शायरी ने फ़ारसी ज़बान को उर्दू ज़बान की जगह अपना ज़रीआए-इजहारे-ख़्याल^१ बना लिया।

फ़ारसी में शेर कहने की रस्मत^२ इकबाल की तबीअत में कई अस्बाब^३ से पैदा हुई होगी और मैं समझता हूँ कि उन्होंने अपनी किताब हालाते-तसव्वुफ़^४ के मुतअल्लिक लिखने के लिये जो कुतुबनी^५ की, उसको भी जरूर इस तगय्युर में दखल होगा। इसके अलावा जूँ-जूँ उनका मुताला इल्मे-फ़ल्सफ़ा^६ के मुतअल्लिक गहरा होता गया और दक्की^७ खियालात के इजहार^८ को जी चाहा, तो उन्होंने देखा कि फ़ारसी के मुकाबले में उर्दू का समर्या^९ बहुत कम है और फ़ारसी में कई फ़िक्करे^{१०} और जुमले^{११} साँचे में ढले हुए ऐसे मिलते हैं, जिनके मुताबिक उर्दू में फ़िक्करे ढालने आसान नहीं, इसलिए वे फ़ारसी की तरफ़ मायल हो गये। अगर बजाहिर^{१२} जिस छोटे से वाक़्आ से उनकी फ़ारसी-गोई^{१३} की इब्तिदा हुई है, वह यह है कि एक मर्तबा वे एक दोस्त के यहां मदऊ^{१४} थे। जहां उनसे फ़ारसी अशआर सुनाने की फ़र्माइश हुई और पूछा गया कि “वे फ़ारसी शेर भी कहते हैं या नहीं?” उन्हें एतराफ़^{१५} करना पड़ा कि उन्होंने सिवाय एक आध शेर कभी कहने के फ़ारसी लिखने की कोशिश नहीं की। मगर कुछ ऐसा वक़्त था और इस फ़र्माइश ने ऐसी तहरीक^{१६} उनके दिल में पैदा की कि दावत से वापस आकर विस्तर पर लेटे हुए बाक़ी वक़्त वे शायद फ़ारसी अशआर कहते रहे और सुबह उठते ही मुझे से मिले, तो दो ताज़ा ग़ज़ले फ़ारसी में तैयार थी जो उन्होंने ज़बानी मुझे सुनायीं। इन ग़ज़लों के कहने से उन्हें अपनी फ़ारसीगोई की क़व्वत का हाल मालूम हुआ, जिसका पहले उन्होंने उस तरह इस्तेहान नहीं किया था। इसके बाद विलायत से वापस आने पर गो^{१७} कभी-कभी उर्दू की नज़में भी कहते थे, मगर तबीयत का रख फ़ारसी की तरफ़ हो गया। यह

१—विचार अभिव्यक्ति का माध्यम। २—रस्ति, इच्छा। ३—कारणों। ४—योग-दर्शन।

५—पुरतक अध्ययन। ६—दर्शन-शास्त्र। ७—गूढ़, कठिन। ८—अभिव्यक्ति। ९—शेष।

१०—वाक्य। ११—पद। १२—प्रकटित। १३—फ़ारसी में कविता कहना। १४—आमंत्रित।

१५—स्वीकार। १६—प्रेरणा। १७—यद्यपि।

उनकी शायरी का तीसरा दौर है, जो १६०८ ई० के बाद से शुरू हुआ और जो अब तक चल रहा है। इस अर्धशताब्दी में उर्दू नज़्मों में बहुत-सी हुई और अच्छी-अच्छी, जिनकी धूम मच गई। मगर असल काम जिसकी तरफ वह मुतवज्जह^१ हो गए वह उनकी फ़ारसी मसनवी^२ “असरारे खुदी” थी। इसका खयाल देर तक उनके दिमाग में रहा और रफ़्तार-रफ़्तार दिमाग से सफ़हए कित्तीस^३ पर उतरने लगा और आखिर एक मुस्तक़िल^४ किताब की सूरत में जुहूर पज़ीर^५ हुआ जिसमें इक़बाल का नाम हिन्दुस्तान से बाहर मशहूर हो गया।

फ़ारसी में इक़बाल के कलम से तीन किताबें इस वक़्त तक निकली हैं: ‘असरारे खुदी’, ‘रुमूजे बेखुदी’, और ‘पयामे मशरिफ़’—एक से एक बेहतर। पहली किताब में दूसरी में ज़वान ज़्यादा सादा और आमफ़हम^६ हो गई है और तीसरी दूसरी से ज़्यादा सजीब^७ है। जो लोग इक़बाल के उर्दू कलाम के दिलदादा^८ हैं, वे फ़ारसी नज़्मों को देखकर मायूस^९ हुए होंगे, मगर उन्हें याद रखना चाहिए कि फ़ारसी ने वह काम किया, जो उर्दू से नहीं हो सकता था। तमाम इस्लामी दुनिया में जहाँ फ़ारसी कमोबेश मुतदावल^{१०} है, इक़बाल का कलाम इस ज़रीआ से पहुँच गया और उसमें ऐसे खियालात थे जिनकी ऐसी वसीअ इशाअत^{११} जरूरी थी और इसी वसीले^{१२} से यूरोप और अमेरिकावालों को हमारे ऐसे क़ाबिले क़द्र^{१३} मुसन्निक^{१४} का हाल मालूम हुआ। ‘पयामे मशरिफ़’ में हमारे मुसन्निक ने यूरोप के एक निहायत बलन्दपाया^{१५} शायर ‘गोइटे’ के ‘सलामे मशरिफ़’ का जवाब लिखा है और उसमें निहायत हक़ीमाना^{१६} खियालात का इज़हार^{१७} बहुत खूबसूरती से किया गया है। उसके अशआर में बाज़ बड़े-बड़े उक़दे^{१८} हल हुए हैं, जो पहले ऐसे आसान तरीक़े से बयान नहीं हुए थे। मुद्त से बाज़ रिसाइल^{१९} और अख़बारों में डाक्टर मुहम्मद इक़बाल को ‘तर्जुमाने हक़ीक़त’^{२०} के लक़ब^{२१} से याद किया जाता है और इन किताबों

१—बीच । २—आक़ष्ट । ३—एक प्रकार की उर्दू कविता । ४—काय नक्का पृष्ठ । ५—स्थायी ।

६—प्रकट । ७—सुगम । ८—सरल । ९—प्रेमी । १०—निराश । ११—प्रचलित । १२—व्याप्त प्रचार । १३—साधन । १४—आदरणीय । १५—ग्रन्थकार, कवि । १६—उच्च कोटि । १७—दार्शनिक । १८—अभिव्यक्ति । १९—गुत्थियाँ । २०—पत्रिकाओं । २१—यथार्थवादी । २२—उपाधि ।

के खास-खास अशअर से यह साबित^१ है कि वे इस लकव से मुल्ककब^२ होने के मुस्तहक हैं और जिम किसी ने यह लकव उन के लिये पहले वजा^३ किया है, उसने कोई मुबालिगा^४ नहीं किया। फ़ारसी-गोई का एक असर इकबाल के उर्दू कलाम पर यह हुआ है कि जो नज़्में उर्दू में दौरे सिवुम^५ में लिखी गई हैं, उनमें से अक्सर में फ़ारसी तर्कबे^६ और फ़ारसी बन्दिशें^७ पहले से भी ज्यादा हैं और वाज जगह फ़ारसा अशअर पर नज़्में कर दी गई हैं। गोया यह मालूम होता है कि अशहबे-कलम^८ जो फ़ारसी के मैदान में गामजन^९ है, उसकी वाग किसी क़दर तकलीफ़ के साथ उर्दू की तरफ़ मोड़ी जा रही है।

इकबाल का उर्दू कलाम जो वक्तन-फ़वक्तन^{१०} १९०१ ई० से लेकर आज तक रिसालों और अखबारों में शायी हुआ और अंजुमनों में पढ़ा गया, उसके मजमूआ की इशाअत^{११} के बहुत लोग खाहां^{१२} थे। डाक्टर साहब के अहवाव^{१३} बारहा^{१४} तकाज़ा करते थे कि उर्दू कलाम का मजमूआ शायी किया जाये, मगर कई वजूहात^{१५} से आज तक मजमूआ उर्दू शायी नहीं हो सका था। खुदा का शुक्र^{१६} है कि आखिर अब शायकीने^{१७} कलामे उर्दू की यह देरीना आज़ू^{१८} वर आई^{१९} और इकबाल की उर्दू नज़्मों का मजमूआ शायी होता है, जो ३३६ सफ़हों पर मुश्तमल^{२०} है और तीन हिस्सों पर मुन्कसम^{२१} है। हिस्सा^{२२} अब्बल में १९०५ ई० तक की नज़्में हैं, हिस्सा दोवुम^{२३} में १९०५ ई० से १९०८ ई० तक की और हिस्सा सिवुम^{२४} में १९०८ ई० से लेकर आज तक का उर्दू कलाम है। यह दावा से कहा जा सकता है कि उर्दू में आज तक कोई ऐसी किताब अशअर की मौजूद नहीं है, जिमनें खयालात की यह फ़रावानी^{२५} हो और इस क़दर मतालिवो मआनी^{२६} एकजा^{२७} हों। और क्यों न हो, एक सदी के

१—सिद्ध, प्रकट। २—उपाधि प्राप्त। ३—निर्धारित। ४—अतिशयोक्ति। ५—तृतीय चरण। ६—संयुक्त शब्द। ७—छन्द-गठन। ८—लेखनी रूपी घोड़ा। ९—गतिशील। १०—समय-समय पर। ११—संग्रह के प्रकाशन। १२—इच्छुक। १३—मित्र गण। १४—बहुधा। १५—कारणों। १६—अन्यवाद। १७—प्रेमियों। १८—चिरकालीन कामना। १९—पूर्ण हुई। २०—आधारित। २१—विभक्त। २२—प्रथम भाग। २३—द्वितीय भाग। २४—तृतीय भाग। २५—बहुतायत। २६—अर्थ तथा भाव। २७—एकत्र, संचित।

वहाबम हिस्से^१ के मुताला^२ और तजरवा^३ और मुशाहिदा^४ का नेचोड़ और सैरो-सियाहत^५ का नतीजा है। बाज नज़्मों में एक-एक शेर और एक एक मिस्त्रा^६ ऐसा है कि उस पर एक मुस्तक़िल मजमून लिखा जा सकता है। यह मुस्तक़िल मजमून जो बतौर दीवाचा^७ लिखा गया है, उसमें मुस्तक़िल नज़्मों की तन्कीद^८ या मुस्तक़िल औकात^९ की नज़्मों के बाहम^{१०} मुकाबिला की गुंजाइश नहीं। इसके लिए अगर हो सका तो मैं कोई और मौक़ा तलाश करूँगा। सरेदस्त^{११} मैं साहिबाने जौक^{१२} को गुवारक़वाद देता हूँ कि उर्दू कुल्लियाते^{१३} इक़वाल उनके सामने रिसालों प्रौर गुलदस्तों के औराके परीशान^{१४} से निकल कर एक मजमूए दिलपज़ीर^{१५} की शक़ल में जल्वागर^{१६} हैं; और उम्मीद है कि जो लोग मुहत में इस क़लाम की यक़जा देखने के मुश्ताक^{१७} थे, वे इन मजमूआ की शौक़ की निगाहों में देखेंगे और दिल में उसकी क़द्र करेंगे।

आखिर में उर्दू शायरी की तरफ़ से मैं यह दख़्वास्त काबिल मुसन्नफ़ि से करता हूँ कि वे अपने दिलोदिमाग़ से उर्दू को वह हिस्सा दे, जिसकी वह मुन्हाक़ और मुहताज है। खुद उन्होंने 'ग़ालिब' की तारीफ़ में चन्द बन्द लिखे हैं, जिनमें एक शेर में उर्दू की हालत का सहीह नक़शा खींचा^{१८} है—

गेसुए उर्दू^{१९} अभी मिन्नत पज़ीरे ग़ाना^{२०} है,
शमअ यह मोदाइए दिलमोज़िए पर्वाना^{२१} है

हम उनका यह शेर पढ़कर उनसे यह कहते हैं कि जिस एहसास ने उनमें यह शेर निकलवाया था, उससे काम लेकर अब वे फिर कुछ अर्सी के लिए गेसुए उर्दू को संवारने की तरफ़ मुनयज़्जह^{२२} हों और हमें मौक़ा दें कि हम इसी मजमूआए उर्दू को जो इस क़दर देर के बाद छपा है, एक दूसरे कुल्लियाते उर्दू का पेग़खेमा^{२३} समझे।

—:०:—

१—चतुर्थ भाग। २—अध्ययन। ३—अनुभव। ४—निरीक्षण। ५—भ्रमण, पर्यटन। ६—पद। ७—प्राक्थन स्वरूप। ८—आलोचना। ९—काल, समय। १०—परस्पर। ११—सम्प्रति। १२—रुचिवान मित्रों। १३—पूर्ण ग्रन्थावली। १४—छिन्न पृष्ठों। १५—मनोहर संग्रह। १६—छविमान। १७—लालायित। १८—वास्तविक चित्र। १९—उर्दू के केश पाश। २०—बंधी के मुहताज। २१—शलभ के हृदय संताप की आकांक्षी। २२—आकृष्ट, प्रवृत्त। २३—बुनियाद।

ऐ तायरे लाहूती

उस रिज्क से मौत अच्छी,

जिस रिज्क से आती हो

पर्वाज में कोताही ।

डा० इक़बाल और उनकी शायरी

हिमालय

ऐ हिमालय ! ऐ फ़सीले^१ किश्वरे^२ हिन्दोस्तां
चूमता है तेरी पेशानी^३ को झुक कर आस्मां
तुम में कुछ पैदा नहीं देरीना^४-रोजी के निशां
तू जवां है गर्दिशे-शामो-सहर^५ के दर्मियां

एक जल्वा^६ था कलीमे^७ तूरे^८ सीना के लिए
तू तजल्ली^९ है सरापा^{१०} चश्मे बीना^{११} के लिए

इस्तेहाने दीवए जाहिर^{१२} में कोहिस्तां^{१३} है तू
पासबां^{१४} अपना है तू दीवारे हिन्दुस्तां है तू
मल्लए^{१५} अखिल फ़लक^{१६} जिस का हो वह दीवां^{१७} है तू
सूए खल्वत गाहे^{१८} दिल दामन-कशे इन्सां^{१९} है तू

बर्फ़ ने बांधी है दस्तारे फ़ज़ीलत^{२०} तेरे सर
ख़न्दाज़न^{२१} है जो कुलाहे मेहे आलमताब^{२२} पर

तेरी उम्मे रफ़ता^{२३} की एक आन है अहवे कुहन^{२४}
वादियों में हैं तेरी काली घटाएं ख़ेमाज़न^{२५}

१-प्राचीर २-देश ३-माथा ४-प्राचीनता ५-संध्या प्रातः का चक्कर
६-आलोक ७-८-कलीम का अर्थ है बात करने वाला, यह मूसा पैग़म्बर
का उपनाम है जो तूर पर्वत पर ईश्वर से बात करते थे और उसी पर्वत
पर उन को ईश्वरीय आलोक का दर्शन हुआ था ९-आलोक १०-सर्वांग
११-देखनेवाली आँख १२-बाह्य दृष्टि १३-पर्वत-स्थल १४-रक्षक १५-कविता
का प्रथम पद १६-आकाश १७-कविता संग्रह १८-एकांत स्थान की ओर
१९-मनुष्य को आकृष्ट करने वाला २०-बड़ाई की पगड़ी २१-हंसने वाली
२२-संसार को आलोकित करने वाले सूरज की टोपी २३-व्यतीत आयु
२४-प्राचीन काल २५-तंबू ताने हुए ।

चोटियाँ तेरी सुरय्या^१ से हैं सरगमें सुखन^२
तू जमीं पर और पहनाए फ़लक^३ तेरा वतन

चश्मए^४ वामन तेरा आईनए सय्याल^५ है
वामने मौजे हवा जिस के लिए रुमाल है

अन्न^६ के हाथों में रहवारे^७ हवा के वास्ते
ताजियाँ दे दिया बर्कें सरे^८ कुहसार^९ ने
ऐ हिमालय ! कोई बाजीगाह^{१०} है तू भी जिसे
दस्ते क़ुदरत^{११} ने बनाया है अनासिर^{१२} के लिए

हाथ, क्या फ़र्ते^{१३} तरब में झूमता जाता है अन्न
फ़ीले^{१४} बे जंजीर की सूरत उड़ा जाता है अन्न

जुबिशे^{१५} मौजे^{१६} नसीमे सुबह गहवारा^{१७} बनी
झूमती है नशए हस्ती^{१८} में हर गुल की कली
यूँ जुबाने बर्ग^{१९} से गोया^{२०} है उस की खामुशी
दस्ते गुलचीं^{२१} की झटक में ने नहीं देखी कभी

कह रही है मेरी खामुशी ही अफ़साना^{२२} मेरा
कुंजे खल्वत खानए क़ुदरत^{२३} है काशाना^{२४} मेरा

आती है नदी फ़राजे कोह^{२५} से गाती हुई
कौसरो तस्नीम^{२६} की मौजों को शर्माती हुई
आईना सा शाहिदे क़ुदरत^{२७} को बिखलाती हुई
संगे रह^{२८} से गाह बचती गाह टकराती हुई

-
- १-एक उच्चतम ग्रह २-बात करने वाली ३-आकाश विस्तार ४-स्रोत
५-बहुता हुआ ६-मेघ ७-घोड़ा ८-कोड़ा ९-बिजली १०-पर्वत समूह
११-खेल का मैदान १२-प्रकृति के हाथ १३-तत्व १४-प्रसन्नता की अधिकता
१५-हाथी १६-प्रभात समीर की १७-लहर १८-झूला १९-जीवन का नशा
२०-पत्ता २१-मानो २२-माली का हाथ २३-कहानी २४-प्रकृति का,
एकान्त वास स्थान २५-गूह २६-पहाड़ की ऊँचाई २७-बैकुण्ठ की दो नहरें
२८-प्रकृति-सुन्दरी २९-रास्ते का पत्थर ।

छेड़ती जा इस इराक़े^१ दिल नशी^२ के साज^३ को
ऐ मुसाफ़िर ! दिल समझता है तेरी आवाज को

लैलए शब^४ खोलती है आ के जब जुल्मे रसा^५
दामने दिल खींचती है आबशारों^६ की सदा^७ ।
वह खमोशी शाम की जिस पर तकल्लुम^८ हो फ़िवा^९
वह दरख्तों पर तफ़क्कुर^{१०} का समा^{११} छाया हुआ

कांपता फिरता है क्या रंगे शफ़क़^{१२} कुहसार पर
खुशनुमा लगता है यह राज़ा^{१३} तेरे ख़सार^{१४} पर

ऐ हिमालय ! दास्तां उस वक्त की कोई सुना
मस्कने आबाए-इन्सा^{१५} जब बना दामन तेरा ।
कुछ बता इस सीधी सादी ज़िन्दगी का माजरा
दारा जिस पर राज़ाए रंगे तकल्लुफ़^{१६} का न था

हां दिखा दे ऐ तसव्वुर^{१७} फिर वो मुबहो शाम तू
दौड़ पीछे की तरफ़ ऐ गर्दिशे अय्याम^{१८} तू ।

—:०:—

१-संगीत विद्या का एक राग जो दस बजे दिन को गाया जाता है २-हृदयग्राही
३-ब्राह्म ४-निशा सुन्दरी ५-लम्बे केश ६-झरनों ७-स्वर ८-बाणी ९-निछा-
वर १०-चितन ११-दृश्य १२-सांध्य अरुणिमा १३-उबटन १४-कपोल
१५-मनुष्य के पूर्वजों का वास स्थान १६-बनावट १७-कल्पना १८-काल चक्र ।

भारतीय बच्चों का राष्ट्रीय गान

चिश्ती^१ ने जिस ज़मीं में पैग़ामे^२ हक़ सुनाया
नानक ने जिस चमन में वहवत^३ का गीत गाया
तातारियों ने जिस को अपना वतन बनाया
जिस ने हिजाज़ियों^४ से दशते अरब छुड़ाया

मेरा वतन वही है, मेरा वतन वही है

यूनानियों को जिस ने हैरान कर दिया था
सारे जहां को जिसने इल्मोह्नर दिया था
मिट्टी को जिसकी हक़^५ ने ज़र^६ का असर दिया था
तुर्कों का जिस ने दामन हीरों से भर दिया था

मेरा वतन वही है, मेरा वतन वही है

टूटे थे जो सितारे फ़ारस के आसमां से
फिर ताब दे के जिस ने चमकाए कहकशां^७ से
वहवत की लै सुनी थी दुनिया ने जिस मकां से
मीरे अरब^८ को आई ठण्डी हवा जहां से,

मेरा वतन वही है, मेरा वतन वही है

बन्दे^९ कलीम^{१०} जिसके, पर्वत जहां के सीना^{११}

नूहे^{१२} नबी का आ कर ठहरा जहां सकीना^{१३}

रिफ़्अत^{१४} है, जिस ज़मीं की बामे फ़लक का जीना^{१५}

जन्नत की ज़िन्दगी है जिसकी फ़िज़ा^{१६} में जीना

मेरा वतन वही है, मेरा वतन वही है ।

१-अजमेर के ख़ाजा मुईनुद्दीन २-सत्य सन्देश ३-एकता ४-अरबों
५-भगवान ६-सीना ७-आकाश गंगा ८-पैग़म्बर इस्लाम ९-निवासी
१०-हज़रत मूसा पैग़म्बर जो ईश्वर से बातें करते थे ११-तूर पर्वत जिस
पर हज़रत मूसा और भगवान से बात होती थी १२-एक पैग़म्बर १३-नौका
१४-उच्चता १५-आकाश की छत की सीढ़ी १६-वातावरण ।

तरानए हिन्दी

[भारतीय गान]

सारे जहां से अच्छा हिन्दोस्तां हमारा
हम बुलबुलें हैं इसकी यह गुल्सितां हमारा
गुर्बत^१ में हों अगर हम रहता है दिल बतन में
समझो वहीं हमें भी दिल हो जहां हमारा
पर्वत वो सब से ऊंचा हमसाया आसमांका
वह संतरी हमारा वह पासबां हमारा
गोदी में खेलती है उसकी हज्जारों नदियां
गुलशन है जिनके दम से रश्केजनां^२ हमारा
ऐ आबे रुदे^३ गंगा वह दिन हैं याद तुझको
उतरा तेरे किनारे जब कारवां हमारा
मजहब नहीं सिखाता आपस में बैर रखना
हिन्दी है हम, बतन है हिन्दोस्तां हमारा
यूनानो मिल्तो रोमा सब मिट गए जहां से
अब तक मगर है बाक़ी नामोनिशां हमारा
कुछ बात है कि हस्ती मिटती नहीं हमारी
सदियों रहा है दुश्मन दौरे जमां^४ हमारा

‘इक़बाल’ कोई महरम^५ अपना नहीं जहाँ में
मालूम क्या किसी को बंद निहां^६ हमारा

—:०:—

नया शिवाला

सच कह दूँ ऐ बरहमन गर तू बुरा न माने
 तेरे सनम कवों^१ के बुत हो गए पुराने
 अपनों से बैर रखना तूने बुतों से सीखा
 जंगो जदल^२ सिखाया बाएज^३ को भी खुदा ने
 तंग आ के मैंने आखिर देरोहरम^४ को छोड़ा
 बाएज का वाज^५ छोड़ा, छोड़े तेरे फ़साने
 पत्थर की मूर्तों में समझा है तू खुदा है
 छाके बतन का मुझको हर ज़र्रा देवता है
 आ शैरियत^६ के पर्वे एक बार फिर उठा दें
 बिछड़ों को फिर मिला दें नक़्शे बुई^७ मिटा दें
 सूनी पड़ी हुई है मुद्दत से दिल की बस्ती
 आ इक नया शिवाला इस देश में बना दें
 दुनिया के तीर्थों से ऊंचा हो अपना तीरथ
 बामाने आसमां से उस का कलस मिला दें
 हर सुबह उठ के गाएं मंतर वो मीठे मीठे
 सारे पुजारियों को मैं पीत की पिला दें
 भक्ती भी शान्ती भी भक्तों के गीत में है
 भरती के वासियों की मुक्ती पिरात में है

१-मूर्ति गृहों २-लड़ाई क्षगड़ा ३-उपदेशक ४-मंदिर-मस्जिद ५-उपदेश
 ६-अपरिचय ७-भेदभाव का चिह्न ८-मदिरा ।

वतनीयत

देशभक्तिवाद

(एक राजनैतिक कल्पना के रूप में)

इस दौर^१ में मैं^२ और है जाम और है जम और
साक्री ने बिना^३ की रविशे लुत्फो सितम^४ और
मुस्लिम ने भी तामीर^५ किया अपना हरम^६ और
तहजीब^७ के आज़र^८ ने तरशवाए सनम^९ और

इन ताज़ा खुदाओं में बड़ा सब से वतन है
जो पैरहन^{१०} इस का है वो मजहब का कफ़न है

ये बुत कि तराशीबए^{११} तहजीबे नवी^{१२} है
गारतगरे काशानए दीने नबवी^{१३} है
बाज़ू तेरा तौहीब की क़ूबत से क़वी^{१४} है
इस्लाम तेरा देस है तू मुस्तफ़वी^{१५} है

नज़्ज़ारए बेरीना^{१६} ज़माने को बिखा दे
ऐ मुस्तफ़वी छाक. में इस बुत की मिला दे

हो क़ंबे मक़ामी^{१७} तो नतीजा है तबाही
रह बहू^{१८} में आज़ादे वतन सूरते माही^{१९}
है तर्क वतन सुन्नते^{२०} महबूबे इलाही^{२१}
वे तू भी नुबूवत^{२२} की सबाक़त पे गवाही

१-युग २-मदिरा ३-स्थापित ४-अनुग्रह एवं कोप की रीति ५-निर्माण
६-काबा ७-सम्पत्ता ८-एक मूर्तिकार ९-बुत १०-वस्त्र ११-निर्मित
१२-नवीन सम्पत्ता । १३-पैग़म्बरी-धर्म का घर उजाड़ने वाला १४-बलिष्ठ
१५-हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा का अनुयायी १६-पुराना दृश्य १७-स्थान बढ़ होना
१८-सागर १९-मछली के समान २०-रीति, परंपरा २१-ईश्वर के प्यारे,
यानी हज़रत मुहम्मद २२-पैग़म्बरी, ईश दौत्य ।

गुफ्तारे सियासत^१ में बतन और ही कुछ है
 इशदि नबूवत^२ में बतन और ही कुछ है
 अक्वामे [जहां^३ में है रिक्काबत^४ तो इसी से
 तस्वीर^५ है मक्सूदे तिजारत^६ तो इसी से
 खाली है सबाक़त^७ से सियासत तो इसी से
 कमज़ोर का घर होता है ग़ारत तो इसी से
 अक्वाम में मख़्लूक़े^८ खुदा बटती है इस से
 क़ौमीयते^९ इस्लाम की जड़ कटती है इस से

तस्वीरे दर्द

नहीं मिश्रतकशे^{१०} ताबे शुनीदन^{११} दास्तां^{१२} मेरी ।
 ख़मोशी गुफ्तुगू है, बे जुबानी है जुबां मेरी ।
 यह दस्तूरे^{१३} जुबां बन्दी है कंसा तेरी महफ़िल में ।
 यहां तो बात करने को तरसती है जुबां मेरी ।
 उठाये कुछ वरक़ लाले^{१४} ने, कुछ नर्ग़िस ने कुछ गुल ने ।
 चमन में हर तरफ़ बिखरी हुई है दास्तां मेरी ।
 उड़ा ली क़ुमरियों ने, तूतियों ने, अन्वलीबों^{१५} ने ।
 चमन वालों ने मिलकर लूट ली तर्जे फ़ुग़ां^{१६} मेरी ।
 टपक ऐ शम्श ! आँसू बनके पर्वाने की आँखों से ।
 सरापा बर्ब हूं हसरत भरी है दास्तां मेरी ।
 इलाही फिर मज़ा क्या है यहां दुनिया में रहने का ।
 हयाते जाविदां^{१७} मेरी, न मर्गे नाग़हां^{१८} मेरी ।

१-राजनैतिक परिभाषा २-पंगम्बर के सद्बचन ३-संसार के राष्ट्र
 ४-द्वेष-कलह ५-शोषण ६-वाणिज्य का उद्देश्य ७-सत्यता ८-सृष्टि
 ९-जातीयता १०-एहसान' मन्द, आभारी ११-सुनने की ताब १२-कथा
 १३-नियम १४-एक फूल १५-बुलबुलों १६-रोंके का ढंग १७-स्थायी
 जीवन १८-आकस्मिक मृत्यु ।

मेरा रोना नहीं, रोना है यह सारे गुलिस्तां का ।

वह गुल हूं मैं खिजां हर गुल की है गोया खिजां मेरी ।

दरीं हसरत सरा उम्मेस्त अफसूने जरस बारम^१ ।

जि फ़ैजे दिल तपीदन हा खरोशे बेनफ़स बारम^१ ।

रियाजे^१ बहल^२ में नाआशनाये^३ बज्मे इशरत^४ हूं ।

खुशी रोती है जिसको मैं वह महरूमे^५ मुसरत^६ हूं ।

मेरी बिगड़ी हुई तक्रदोर को रोती है गोयाई ।

मैं हफ़ों जेरे लब^७ शमिन्दये गोशे समाअत^८ हूं ।

परीशां हूं मैं मुश्ते खाक^९ लेकिन कुछ नहीं खुलता ।

सिकंदर हूं कि, आईना हूं, या गर्वे कदूरत^{१०} हूं ।

यह सब कुछ है मगर हस्ती मेरी मक़सद है क़ुदरत का ।

सरापा नूर हो जिसकी हक़ीक़त, मैं वह जुल्मत हूं ।

खज़ीना हूं, छिपाया मुझ को मुश्ते खाके सहारने ।

किसी को क्या ख़बर है मैं कहाँ हूं किसकी दौलत हूं ।

नज़र मेरी नहीं मन्ने^{११} संरे असये हस्ती^{१२} ।

मैं वह छोटी सी दुनिया हूं कि आप अपनी विलायत^{१३} हूं ।

न सहबा^{१४} हूं, न साक़ी हूं, न मस्ती हूं, न पैमाना ।

मैं इस मैख़ानये हस्ती में हर शय की हक़ीक़त हूं ।

मुझे राजे दोआलम दिल का आईना दिखाता है ।

वही कहता हूं जो कुछ सामने नज़रों के आता है ।

-
- १-इस निराशा संसार में एक युग बीत गया कि मैं घपटे का सा जादू रखता हूँ २-हृदय की कृपा से जलने के लिए मुझ में दम नहीं है फिर भी चीत्कार करता हूँ ३-उद्यान ४-संसार ५-अपरिचित ६-विलास सभा ७-वंचित ८-आनन्द ९-धीमी बोली जो सुनाई न दे १०-सुनने वाला कान ११-मुद्ठी भर मिट्टी १२-मलीनता १३-आभारी १४-संसार-क्षेत्र १५-देश १६-मदिरा ।

अता^१ ऐसा बयां^२ मुझ को हुआ रंगों बयानों में ।
 कि बामे अशी^३ के तायर^४ हैं मेरे हम जुबानों^५ में ।
 असर इक यह भी है मेरे जुनूने कितना सामां^६ का ।
 मेरा आईनए बिल है क़ज़ा^७ के राज़ दानों में ।

रुलाता है तेरा नज़्जारा ऐ हिन्दोस्तां मुझ को ।
 कि इन्नत खेज़^८ है तेरा फ़साना सब फ़सानों में ।
 दिया रोना मुझे ऐसा कि सब कुछ दे दिया गया ।
 लिखा किल्के अज़ल^९ ने मुझ को तेरे नौहा खानों^{१०} में ।

निशाने बगें गुल^{११} तक भी न छोड़ इस बाग में गुलचीं ।
 तेरी क्रिस्मत से रज़्मआराइयां^{१२} हैं बाग़बानों में ।

छुपा कर आस्तीं में बिजलियां रक्खी हैं गढ़ू^{१३} ने ।
 अनादिल^{१४} बाग़ के ग़ाफ़िल न बैठें आशियानों में ।

सुन ए ग़ाफ़िल ! सदा^{१५} मेरी, यह ऐसी चीज़ है जिसको ।
 वज़ीफ़ा^{१६} जान कर पढ़ते हैं तायर बोस्तानों^{१७} में ।

वतन की फ़िक्र कर नादां ! मुसीबत आनेवाली है ।
 तेरी बर्बादियों के मशवरे हैं आस्मानों में ।

जरा देख उसको जो कुछ हो रहा है, होने वाला है ।
 धरा क्या है भला अहदे कुहन^{१८} की बास्तानों में ।

यह ख़ामोशी कहां तक लज़्ज़ते फ़र्याद पैदा कर ।
 ज़मीं पर तू हो और तेरी सदा हो आसमानों में ।

न समझोगे तो मिट जाओगे ऐ हिन्दोस्तां वालो !
 तुम्हारी बास्तां तक भी न होगी बास्तानों में ।

१-प्रदान २-कथन ३-आकाश की छत ४-पक्षी ५-सहभाषियों ६-उपद्रव
 कारी ७-ईश्वरीय निश्चय ८-शिक्षाप्रद ९-आदि लेखनी, भाग्य
 १०-विलापकारियों ११-पुष्प पत्र १२-युद्ध प्रबन्ध १३-आकाश १४-बुलबुल
 का बहुवचन १५-स्वर १६-जाप १७-उद्यानों १८-प्राचीन काल ।

यही आईने^१ क़ुदरत है, यही उल्लूबे फ़ितरत^२ है ।

जो है राहें अमल में ग़मज़न^३, महबूबे^४ फ़ितरत है ।

हवैदा^५ आज अपने ज़स्मे पिन्हां^६ कर के छोड़ूंगा ।

लहू रो रो के महफ़िल को गुलिस्तां करके छोड़ूंगा ।

जलाना है मुझे हर शमए दिल को सोजे पिन्हां^७ से ।

तेरी तारीक^८ रातों में चिरागां^९ कर के छोड़ूंगा ।

मगर गुन्चों की सूरत हों दिले दर्द आशना पैदा ।

चमन में मुश्ते ख़ाक अपनी परीशां करके छोड़ूंगा ।

परोना एक ही तस्बीह में इन बिखरे दानों को ।

जो मुश्किल है तो इस मुश्किल को आसां करके छोड़ूंगा ।

मुझे ऐ हम नशीं ! रहने दे शुले सीना काबी^{१०} में ।

कि में दागे मुहब्बत को नुमायां करके छोड़ूंगा ।

दिखा दूंगा जहाँ को जो मेरी आँखों ने देखा है ।

तुझे भी सूरते आईना हैरां करके छोड़ूंगा ।

जो है पदों में पिन्हां, चश्मे बीना देख लेती है ।

जमाने की तबीअत का तक्राज़ा देख लेती है ।

किया रिफ़अतकी^{११} लज़ज़त से न दिल को आशना^{१२} तूने ।

गुज़ारी उम्र परती^{१३} में मिसाले नज़्शे पा^{१४} तूने ।

रहा दिल बस्तए महफ़िल^{१५} मगर अपनी निगाहों को ।

किया बैरुने^{१६} महफ़िल से न हैरत आशना तूने ।

फ़िदा करता रहा दिल को हसीनों की अदाओं पर ।

मगर देखी न इस आईने में अपनी अदा तूने ।

तअस्सुब छोड़ नादां ! बह्म के आईना ख़ाने में ।

यह तस्वीरें हूँ तेरी जिनको समझा है बुरा तूने ।

१-नियम २-प्रकृति की रीति ३-कर्म पथ में चलने वाला ४-प्रिय ५-प्रकट
६-आंतरिक ७-आंतरिक ताप ८-अन्धकार ९-दीपावली १०-सीना
पीटना ११-उच्चता १२-परिचित १३-पतन १४-पद-चिह्न स्वरूप
१५-सभा-बद्ध १६-बाहर ।

सरापा नालये बेदाद,^१ सोजे जिन्दगी^२ हो जा ।
 सपंद आसा^३ गिरह में बांध रखी है सदा^४ तूने ।
 सफाये दिल^५ को क्या, आराइशे रंगे तअल्लुक से ।
 कफे आईना^६ पर बांधी है ओ नादाँ ! हिना^७ तूने ।
 जमीं क्या आस्माँ भी तेरी कजबीनी^८ पे रोता है ।
 गजब है सितरे कुआँ^९ को चलीपा^{१०} कर दिया तूने ।
 जुबाँ से गर किया तौहीद का दावा तो क्या हासिल ?
 बनाया है बुते पिन्दार^{११} को अपना खुदा तूने
 कुएँ में तूने यूसुफ को जो देखा भी तो क्या देखा ?
 अरे गाफिल जो मुतलक^{१२} था मुकय्यद^{१३} कर दिया तूने

हवस^{१४} बालाये मिम्बर^{१५} है तुझे रंगीं बयानी की ।

नसीहत भी तेरी सूरत है एक अफसाना खानी की ।

दिखा दो हुस्ने आलम सोज^{१६} अपनी चश्मे^{१७} पुरनम को ।
 जो तड़प ता है परवाने को रलवाता है शबनम^{१८} को ।
 तेरा नज्जारा ही ऐ बुलहवस^{१९} मकसद नहीं इसका ।
 बनाया है किसी ने कुछ समझ कर चश्मे आदम^{२०} को ।
 अगर देखा भी इसने सारे आलम को तो क्या देखा ।
 नजर आई न कुछ अपनी हकीकत जाम से जम को ।
 शजर^{२१} है फ़िर्का आराई, तअस्सुब है समर^{२२} उसका ।
 यह वह फल है कि जन्नत से निकलवाता है आदम को ।

१-अत्याचार २-जीवन ताप ३-काला दाना के समान जो आग में पड़ने से
 आवाज देता है ४-स्वर ५-हृदय की उज्ज्वलता ६-दर्पण की हथेली
 ७-मेंहदी ८-दृष्टि-दोष ९-कुआँ की पंक्तियाँ १०-काट दिया ११-दंभ
 १२-असीम १३-सीमित १४-लोलुपता १५-मंच के ऊपर १६-संसार
 दाहक १७-अश्रुपूर्ण नेत्र १८-ओम १९-अति लोलुप २०-मानव-चक्षु
 २१-वृक्ष २२-फल ।

न उठ्ठा जख्म खुरीद^१ से एक बगेंगुल^१ तक भी ।
 यह रफ़्त^२ की तमन्ना है कि ले उठती है शबनम को ।
 फिरा करते नहीं मजरूहे उलफ़त^३ फ़िक्रे दर्मा^४ में ।
 यह जखमी आप कर लेते हैं पैदा अपने मरहम को ।

मुहब्बत के शरर^५ से दिल सरापा नूर होता है ।

जरा से बीज से पैदा रियाजे^६ तूर^७ होता है ।

दवा हर दुख की है मजरूहे तेरो आरजू रहना ।
 इलाजे जख्म है आज़ादे एहसाने रफू रहना ।
 शराबे बेखुदी से ता फ़लक^८ पर्वाज़^९ है मेरी ।
 शिकस्ते^{१०} रंग से सीखा है मने बनके बू रहना ।
 थमे क्या दीदये गिरफ़ी^{११} वतन की नौहाखानी में ।
 इबादत चश्मे शाएर की है हरदम बावजू रहना ।
 बनाये क्या समझ कर शाखे गुल पर आशियां अपना ।
 चमन में आह क्या रहना जो हो बे आबरू रहना ।
 जो तू समझे तो आज़ादी है पोशीदा मुहब्बत में ।
 गुलामी है असीरे इस्तियाजे^{१२} मा व तू^{१३} रहना ।
 यह इस्तिला^{१४} है पानी में नगू^{१५} रखता है सागर को ।
 तुझे भी चाहिये मिस्ले हुबाबे^{१६} आबजू^{१७} रहना ।
 न रह अपनों से बेपर्वा, इसी में खैर है तेरी ।
 अगर मन्ज़ूर है दुनिया में ओ बेगाना खू^{१८} रहना ।
 शराबे रूह पर्वर^{१९} है मुहब्बत नौए इंसा^{२०} की ।
 सिखाया उसने मुझको मस्त बे जामो मुबू^{२१} रहना ।

- १-सूर्य उत्साह २-पुष्प पत्र ३-ऊँचाई ४-प्रेम ५-चिकित्सा ६-चिंगारी
 ७-तूर पर्वत की वाटिका ८-आकाश तक ९-उड़ान १०-टूटना ११-रोने
 वाली आंख १२-भेद १३-हम और तू १४-संतोष १५-अंधा १६-बुलबुला
 १७-नदी १८-अपरिचित स्वभाववाला १९-जीवनदायी २०-मानव जाति
 २१-मदिरा पात्र ।

मुहब्बत ही से पाई है शिफा बीमार क़ौमों ने ।
किया है अपने बस्ते खुपता^१ को बेदार^२ क़ौमों ने ।

बियाबाने मुहब्बत दशते गुर्बत^३ भी वतन भी है ।
यह बीराना क़फ़स भी, आशियाना भी, चमन भी है ।
मुहब्बत ही वह मंज़िल है कि मंज़िल भी है सहरा भी ।
जरस^४ भी, कारवां भी, राहबर भी, राहजन भी है ।
मरज़ कहते हैं सब इसको, यह है लेकिन मरज़ ऐसा ।
छिपा जिसमें इलाजे गर्दिशे^५ चखें कुहन^६ भी है ।
जलाना दिल का है गोया, सरापा नूर हो जाना ।
यह पर्वाना जो सोजां हो तो शमए अंजुमन^७ भी है ।
वही इक हुस्न है, लेकिन नज़र आता है हर शै में ।
ये शीरी^८ भी है गोया बेसतू^९ भी, कोहकन^{१०} भी है ।
उजाड़ा है तमीजे^{११} मिल्लतो^{१२} आई^{१३} ने क़ौमों को ।
मेरे अहले वतन के दिल में कुछ फ़िक़रे वतन भी है ।
मुक़ूत आमोज^{१४} तुले^{१५} दास्ताने बर्द है, वर्ना ।
जुबां भी है हमारे मुंह में और ताबे सुखन^{१६} भी है ।

नमी गर्दीद कोतह रिस्तये मानी रिहा कर्दम^{१७} ।

हिक्क़ायत बूद बेपायां ब ख़ामोशी अवा कर्दम^{१८} ।

१—सोए भाग्य २—जागरित ३—विदेश ४—घंटा ५—चक्कर ६—पुरातन
आकाश ७—सभा ८—फ़र्हाद की प्रेमिका ९—वह पहाड़ जिसे काट कर फ़र्हाद
ने नहर निकाली थी १०—फ़र्हाद का उपनाम ११—भेद १२—राष्ट्र १३—नियम
१४—मौनता सिखाने वाला १५—विस्तार १६—वाक् शक्ति १७—अर्थ का
धागा छोटा नहीं हो सकता था अतः मैंने उसको छोड़ दिया १८—कथा असीम थी
अब इसलिए मैंने मौनता ही के रूप में उसे कहना उचित समझा ।

स्वामी रामतीर्थ

हमबगल^१ दरिया से है ऐ कतरए बेताब^२ तू
पहले गौहर^३ था, बना अब गौहरे नायाब^४ तू

आह खोला किस अदा से तूने राजे रंगोबू
में अभी तक हूं असीरे इम्तियाजे^५ रंगोबू

मिट के गौरा^६ ज़िन्दगी का शेरिशे महशर^७ बना
यह शरारा बुझ के आतिशखानए आज़र^८ बना

नफ़िये हस्ती^९ इक करिश्मा^{१०} है दिले आगाह^{११} का
'ला'^{१२} के दरिया में निहां मोती है 'इल्लल्लाह'^{१३} का

चश्मे ना बीना^{१४} से मरुफ़ी^{१५} मानिए^{१६} अंजाम है,
थम गई जिस दम तड़प सीमाब^{१७} सीमे^{१८} खाम है

तोड़ देता है बुते^{१९} हस्ती को इब्राहीमे^{२०} इश्क़
होश का दारू^{२१} है गोया^{२२} मस्तिए तस्नीमे इश्क़^{२३}

१-सहवासी २-चञ्चल जल बिन्दु ३-मोती ४-दुर्लभ ५-भेदभाव का बन्दी ६-कोलाहल ७-प्रलय कोलाहल ८-आज़र का अग्नि मंदिर-आज़र प्रसिद्ध पैग़म्बर हज़रत इब्राहीम के पिता का नाम था, जो इराक़ देश का मूर्ति निर्माता था। ९-जीवन का इन्कार १०-चमत्कार ११-ज्ञानी १२-"नहीं" अर्थात् नेती नेती १३-ईश्वर के अतिरिक्त कोई उपास्य नहीं १४-अन्धी आंख १५-अप्रकट १६-परिणाम का अर्थ १७-पारा १८-कच्ची चांदी १९-प्राण मूर्ति २०-एक मूर्ति भंजक पैग़म्बर का नाम २१-औषधि २२-मानो २३-प्रेम-मदिरा का नशा।

राम

लबरेज^१ है शराबे हकीकत से जामे हिन्द
 'सब फ़ल्सफ़ी हैं ख़िल्लए मगरिब'^२ के रामे हिन्द^३
 यह हिन्दीयों के फ़िक्रे-फ़लक-रस^४ का है असर
 रिफ़्अत में आस्मां से भी ऊँचा है बामे^५ हिन्द
 इस देस में हज़ारों हुए हैं मलकसिरिश्त^६
 मशहूर जिन के दम से है दुनिया में नामे हिन्द
 है राम के वजूद^७ पे हिन्दोस्तां को नाज़
 अहले नज़र समझते हैं उसको इमामे^८ हिन्द
 एजाज़^९ इस चिरागे हिदायत^{१०} का है यही
 रौशनतर अज़ सहर^{११} है ज़माने में शामे हिन्द

तलवार का धनी था शुजाअत^{१२} में फ़र्द^{१३} था
 पाकीज़गी में जोशे मुहब्बत से फ़र्द था

नानक

क्रौम ने पैगामे गोतम की ज़रा पर्वा न की
 कद्र पहचानी न अपने गौहरे यक दाना की

आह बव किस्मत रहे आवाजे हक़^{१४} से बेख़बर
 गाफ़िल अपने फल की शीरीनी से होता है शूजर

आशकार^{१५} उसने किया जो ज़िन्दगी का राज़ था
 हिन्द को लेकिन ख़्यालो फ़ल्सफ़ा पर नाज़ था

शम्ए हक़ से जो मुनव्वर^{१६} हो यह वह महफ़िल न थी
 बारिशे रहमत हुई लेकिन ज़मीं काबिल न थी

१-परिपूर्ण २-यूरोपीय देश ३-भारत के भक्त ४-आकाश व्यापी चिंतन
 ५-छत ६-देवता के समान स्वभाव वाले ७-अस्तित्व ८-नेता ९-चमत्कार
 १०-सन्मार्ग ११-प्रभात से अधिक प्रकाशमान १२-वीरता १३-अकेला
 १४-सत्य १५-प्रकट १६-प्रकाशित ।

आह शूदर के लिए हिन्दोस्तां गम-खाना है
 वहाँ इन्सानी से इस बस्ती का दिल बेगाना है
 बर्ह्मन सरशार^१ है अब तक मए पिन्दार^२ में
 शमए गौतम जल रही है महकिले अगियार^३ में
 बुतकदा^४ फिर बाद मुद्दत के मगर रौशन हुवा
 नूरे इब्राहीम^५ से आज़र^६ का घर रौशन हुवा
 फिर उठी आखिर सदा^७ तौहीद की पंजाब से
 हिन्द को इक मर्दे कामिल^८ ने जगाया ख्वाब^९ से

गुलाम कादिर रूहैला

रूहैला किस क्रदर जालिम, जफ़ाजू^१, कीना पर्वर^२ था
 निकालीं शाहे तैमूरी की आखें नोके खंजर से
 दिया अहलेहरम^३ को रक्स^४ का फ़र्मा सितमगर ने
 ये अन्दाज़े सितम कुछ कम न था आसारेमहशर^५ से
 भला तामील इस फ़र्माने ग़रतकुश^६ की मुम्किन थी
 शहन्शाही हरम^७ की नाज़नीनाने समनबर^८ से
 बनाया आह, सामाने तरब^९ बेदर्द ने इन को
 निहां^{१०} था हुस्न जिनका चश्मे मेहोमाहो अरुतर^{११} से
 लरज़ते थे दिले नाज़ुक, क्रदम मजबूरे जुंबिश थे
 रवां दरियाए खूं शहजादियों के दीएतर^{१२} से

१-उम्मत २-अहंकार की मदिरा ३-दूसरों ४-मूर्ति गृह ५-इब्राहीम पैगम्बर
 का प्रकाश ६-इब्राहीम पैगम्बर का पिता जो मूर्तिकार था ७-वाणी ८-सिद्ध
 पुरुष ९-निद्रा १०-अत्याचारी ११-शत्रुता-पालक १२-अंत:पुर की शहजादियां
 १३-नृत्य १४-प्रलय-चिह्न १५-निर्लज्जता पूर्ण १६-अंत:पुर १७-कोमलांगी
 सुन्दरियाँ १८-दिलास १९-अप्रकट २०-सूरज चांद तारों २१-सजल नेत्रों ।

यों ही कुछ देर तक महबे नज़र आंखें रहीं उसकी किया घबराके फिर आज़ाब सर को बारे मियाफ़र^१ से कमर से, उठ के तेग़े जां सितां^२ आतशफ़िशां खोली सबक़ आमोज़े ताबानी^३ हों अंजुम^४ जिसके जौहर से रखा खंजर को आगे और फिर कुछ सोच कर लेटा तक्राज़ा कर रही थी नींद गोया चश्मे अहमर^५ से बुझाए ख़्वाब^६ के पानी ने अख़गर^७ उसकी आंखों से नज़र शर्मा गई ज़ालिम की दर्द अंगेज़ मंज़र^८ से फिर उठ्टा और तैमूरी हरम^९ से यों लगा कहने शिकायत चाहिए तुम को न कुछ अपने मुक़द्दर से मेरा मसनद पै सो जाना बनावट थी तकल्लुफ़ था कि ग़फलत दूर है शाने सफ़रआरायाने लश्कर^{१०} से यह मक़सद था मेरा इससे कोई तैमूर की बेटी मुझे ग़ाफ़िल समझ कर मार डाले मेरे खंजर से

मगर यह राज़ आख़िर खुल गया सारे ज़माने पर हमीय्यत^{११} नाम है जिसका गई तैमूर के घर से

फ़ल्सफ़ए राम

(शोक-दर्शन)

[मियां फ़जले हुसैन साहब बैरिस्टर एट० ला, लाहौर के नाम]
गो सरापा^{१२} कैफ़े^{१३} इश्त है शराबे ज़िन्दगी
अइक^{१४} भी रखता है वामन में सहाबे^{१५} ज़िन्दगी

१-शिरस्त्राण के भार २-प्राणवातक ३-चमक का पाठ देनेवाले ४-तारागण
५-लाल आंखों ६-निद्रा ७-चिगारी ८-दृश्य ९-शहजादियों १०-सेनापतियों की
शान ११-आत्मगौरव १२-सर्वथा १३-विलास-आनंद १४-अश्रु १५-जीवन-मेघ ।

मोजे गम पर रक्स करता है हुबाबे^१ ज़िन्दगी
है अलम^२ का सूरह^३ भी जुज्वे^४ किताबे ज़िन्दगी

एक भी पत्ती अगर कम हो तो वह गुल ही नहीं
जो खिजां नादीदा^५ हो बुलबुल वह बुलबुल ही नहीं

आजू के खून से रंगीं है दिल की वास्तां
नामए इन्सानियत कामिल नहीं गैर अज फ़ुर्पां^६

बीदए बीना^७ में दागेगम^८ चिरागे सीना है
रूह को सामाने जीनत^९ 'आह' का आईना है

हादिसाते गम^{१०} से है इन्सां की फ़ितरत को कमाल
गाज़ा^{११} है आईनए दिल के लिए गर्दे मलाल^{१२}

गम जवानी को जगा देता है लुत्फ़े ख़्वाब से
साज यह बेदार होता है इसी मिज़राब^{१३} से

तायरे^{१४} दिल के लिए गम शह परे पर्वाज़^{१५} है ।

राज है इन्सां का दिल, गम इन्किशाफ़े^{१६} राज है

गम नहीं, गम रूह का इक नगमए^{१७} ख़ामोश है
जो सुरूदे बर्बते हस्ती^{१८} से हम आगोश^{१९} है ।

शाम जिसकी आशनाए नालए 'या रब'^{२०} नहीं
जलवा पैरा^{२१} जिसकी शब में अश्क के कौकब^{२२} नहीं

जिस का जामे दिल शिकस्ते गम से है ना आशना^{२३}
जो सदा मस्ते शराबे ऐशोइशरत ही रहा ।

१-बुदबुद, बुल्ला २-शोक, दुख ३-अध्याय ४-ग्रंश-ग्रंग ५-ज्ञांसा से अपरिचित
६-विलाप के बिना ७-ज्योतिवान दृष्टि ८-शोक का घाव ९-श्रुंगार-सामग्री
१०-दुख की घटनायें ११-उबटन १२-क्लेश की धूलि १३-सितार बजाने
का यंत्र १४-पक्षी १५-उड़ने के डैने १६-रहस्योद्घाटन १७-संगीत
१८-जीवन सितार का संगीत १९-आलिगन बद्ध २०-ए ईश्वर, प्रार्थना
२१-प्रकाशवान २२-अश्रु के तारे २३-अनभिज्ञ ।

हाथ जिस गुलची^१ का है महफूज नोके खार^२ से
 इश्क जिस का बे खबर है हिज्र के आज़ार^३ से
 कुलफ़ते ग़म^४ ग़र्चे उसके रोज़ोशब^५ से दूर है
 जिन्दगी का राज उसकी आंख से मस्तूर^६ है
 ऐ कि नरमे दह^७ का इद्राक^८ है हासिल तुझे
 क्यों न आसां हो ग़मो अन्दोह^९ की मंजिल तुझे
 है अबद^{१०} के नुस्ख़ए देरीना^{११} की तमहीद^{१२} इश्क
 अक्ले इंसानी है फ़ानी^{१३} जिन्दए जाबीद^{१४} इश्क
 इश्क के ख़ुशीद^{१५} से शामे अज़ल^{१६} शमिन्दा है
 इश्क सोजे जिन्दगी^{१७} है ता अबद पाइन्दा^{१८} है
 रहसते महबूब^{१९} का मक्सद फ़ना^{२०} होता अगर
 जोशे उल्फ़त^{२१} भी दिले आशिक से कर जाता सफ़र
 इश्क कुछ महबूब के मरने से मर जाता नहीं
 रुह में ग़म बन के रहता है मगर जाता नहीं
 है बक़ाए इश्क^{२२} से पैदा बक़ा महबूब की
 जिन्दग़ानी है अबद ना आशाना^{२३} महबूब की
 आती है नदी जबीने कोह^{२४} से गाती हुई
 आसमां के तायरों को नामा सिखलाती हुई
 आइना रौशन है उस का सूरते रहसारे हूर^{२५}
 गिर के वादी^{२६} की चटानों पर ये हो जाता है चूर
 नहर जो थी उसके गोहर^{२७} प्यारे प्यारे बन गए
 यानी इस उपताब^{२८} से पानी के तारे बन गए

१-फूल चुननेवाला २-कांटा ३-बिरह के दुख ४-शोक, व्यथा ५-अहोरात्रि
 ६-अप्रकट ७-विश्व प्रबन्ध ८-ज्ञान ९-दुःख-शोक १०-आदि ११-पुरातन
 १२-भूमिका १३-नश्वर १४-अमर १५-सूर्य १६-मृत्यु-संघ्या १७-जीवन-
 ताप १८-स्थायी १९-प्रेमी से विदा २०-मिट जाना २१-प्रेम-उल्लास
 २२-प्रेम का स्थायित्व २३-नश्वरता से अपरिचित २४-पर्वत-शिखर २५-अप्सरा
 के कपोल के समान २६-घाटी २७-मोती २८-विपत्ति ।

जूए सीमाबे रवां^१ फट कर परीशां हो गई
 मुज्तरिब^२ बंदों की इक दुनिया नुमायां हो गई
 हिअ^३ इक कतरों को लेकिन वस्ल^४ की तालीम है
 वो कदम पर फिर वही जू^५ मिस्ले तारे सीम^६ है
 एक अस्लीयत में है नहरे रवाने ज़िन्दगी^७
 गिर के रिफ़्त से हुजूमे नौए इन्सां^८ बन गई
 पस्तिए आलम^९ में मिलने को जुदा होते हैं हम
 आरिज़ी^{१०} फ़ुक़्त को दाएम^{११} जान कर रोते हैं हम
 मरने वाले मरते हैं लेकिन फ़ना होते नहीं
 ये हक़ीक़त में कभी हम से जुदा होते नहीं
 अक्ल जिस दम, बह^{१२} की आफ़ात में मह़ूर^{१३} हो
 या जवानी की अंधेरी रात में मस्तूर^{१४} हो
 दामने दिल बन गया हो रज्मगाहे ख़ैरोशर^{१५}
 राह की जुल्मत से हो मुश्किल सुए मंज़िल सफ़र^{१६}
 ख़िअ^{१७} हिम्मत हो गया हो आर्ज़ू से गोशा गीर^{१८}
 फ़िक़्र जब आज़िज़^{१९} हो, और ख़ामोश आवाज़े ज़मीर^{२०}
 बादिए हस्ती^{२१} में कोई हम सफ़र^{२२} तक भी न हो
 जादा^{२३} बिखलाने को जुगनू का शरर^{२४} तक भी न हो
 मरने वालों की जबी^{२५} रौशन है इस जुल्मात^{२६} में
 जिस तरह तारे चमकते हैं अंधेरी रात में

१-पारे की बहती नदी २-चंचल ३-बिरह ४-मिलन ५-नहर ६-चाँदी का तार ७-जीवन की बहती सरिता ८-मानव जाति का समूह ९-संसार की निम्नता १०-अस्थायी ११-स्थायी विरह १२-संसार १३-घिरी हुई १४-निहित । १५-पुण्य पाप का युद्धस्थल १६-एक महापुरुष, जिनका काम पथ-प्रदर्शन है । १७-एकांतवासी १८-असमर्थ १९-अंतरात्मा २०-संसार की घाटी २१-सहयात्री २२-पथ २३-चिंगारी २४-माथा २५-अन्धकार

वालिदा मर्हमा की याद में

(स्वर्गोष्ठा जननी की स्मृति में)

जर्ज़र जर्ज़र बह्ल^१ का जिन्दानिए तक्रदीर^२ है,
पदए मजबूरियो बेचारगी तदबीर^३ है।
आसमां मजबूर है, शम्सो क्रमर मजबूर हें,
अन्जुमे सीमाबया^४ रफ्तार पर मजबूर हें।
है शिकस्त अंजाम^५ गुन्चे का सुबू^६ गुल्ज़ार में,
सब्ज़ओ गुल भी है मजबूरे नुमू^७ गुल्ज़ार में।

नगमए बुलबुल हो या आवाजे खामोशे जमीर^८,
है इसी जन्जीरे आलमगीर में हर शय असीर^९।

आंख पर होता है जब यह सिरें मजबूरी^{१०} अयाँ^{१०},
खुश्क हो जाता है दिल में अश्क^{११} का सैले रवाँ^{१२}।
क़ल्बे^{१३} इन्सानी में रक्से^{१४} ऐशो ग्रम रहता नहीं,
नरमा^{१५} रह जाता है लुत्फ़े जीरो बम^{१६} रहता नहीं।
इल्मो हिक्मत रहजने^{१७} सामाने अश्को आह है,
यानी इक अल्मास^{१८} का टुकड़ा बिले आगाह^{१९} है।
गर्चे मेरे बाग़ में शबनम की शादाबी नहीं,
आंख मेरी मायादारे^{२०} अश्के उन्नाबी नहीं।
जानता हूँ आह में आलामे इन्सानी का राज,
है नवाये शिकवा^{२१} से खाली मेरी फ़ितरत का साज।
मेरे लब पर क्रिस्सये नैरंगिये दौराँ नहीं,
दिल मेरा हैराँ नहीं, खन्दाँ^{२२} नहीं गिरियाँ नहीं।

१-संसार २-भाग्य का बन्दी ३-चंचल गति वाले तारे ४-भंगांत ५-प्याला
६-प्रस्फुटन ७-अंतरात्मा ८-बन्दी ९-विवशता का मर्म १०-प्रकट ११-अश्रु
१२-बहती धारा १३-हृदय १४-नृत्य १५-संगीत, राग १६-उतार-चढ़ाव १७-बट-
मार १८-पन्ना १९-ज्ञानी २०-धनी २१-शिकायत का स्वर २२-प्रसन्न।

पर तेरी तस्वीर कासिद^१ गिरयए पंहम^२ की है,
 आह यह तर्दोव^३ मेरी हिक्मते मुहकम^४ की है ।
 गिरयए सशरि से बुनियादे जाँ पाइन्दा^५ है,
 दर्द के इफ़ा^६ से अक्ले संगदिल शमिन्दा है ।
 मौजे दूदे आह^७ से आईना है रौशन मेरा,
 गंजे आब आबुर्द^८ से मामूर^९ है दामन मेरा ।
 हैरती^{१०} हूँ मैं तेरी तस्वीर के एजाज^{११} का,
 रुख बदल डाला है जिस ने वक्त की पर्वाज^{१२} का ।
 रफ़ताओ हाज़िर^{१३} को गोया पाबपा^{१४} उसने किया,
 अहदेतिफ़ली^{१५} से मुझे फिर आशना^{१६} उसने किया ।
 जब तेरे दामन में पलती थी वह जाने नातवाँ^{१७},
 बात से अच्छी तरह महरम^{१८} न थी जिस की जुबाँ ।
 और अब चर्चे हैं जिस की शोखिये गुफ्तार^{१९} के,
 बे बहा^{२०} मोती हैं जिसकी चश्मे गौहर^{२१} बार के ।
 इल्म की संजीदा गुफ्तारी^{२२}, बुढ़ापे का शऊर,
 दुन्यावी^{२३} एजाज की शौकत, जवानी का गुरूर ।
 ज़िन्दगी की औजगाहों^{२४} से उतर आते हैं हम,
 सुहबते मादर^{२५} में तिफ़ले सादा^{२६} रह जाते हैं हम ।

बेतकल्लुफ़ खन्दा जन^{२७} हैं फ़िक्क से आजाद हैं,
 फिर उसी खोये हुए फ़िर्दास^{२८} में आबाद हैं ।

-
- १-सन्देशदाता २-अविरल रुदन ३-खण्डन ४-दृढ़ युक्ति ५-स्थायी ६-परिचय
 ७-आह के धुएँ की लहर ८-अश्रु द्वारा संचित निधि ९-परिपूर्ण
 १०-चकितदर्शक ११-चमत्कार १२-उड़ान १३-अतीत और वर्तमान
 १४-सहगामी १५-शिशुकाल १६-परिचित १७-अशक्त प्राण १८-परिचित
 १९-भाषण चांचल्य २०-अमूल्य २१-मुक्तावर्षक नेत्र २२-गंभीर संभाषण
 २३-सांसारिक सम्मान २४-उच्च स्थानों २५-माँ की गोद २६-भोला शिशु
 २७-हंस रहे हैं २८-स्वर्ग ।

किसको अब होगा वतन में आह मेरा इन्तेज़ार ?
 कौन मेरा खत न आने से रहेगा बेकरार ।
 खाके मर्कद^१ पर तेरी लेकर यह फ़र्याद आऊँगा,
 अब दुआये नीम शब^२ में किसको में याद आऊँगा ?
 तबियत^३ से तेरी में अन्जुम^४ का हमकिस्मत^५ हुआ,
 घर मेरे अज्दाद^६ का समायिए इज्जत हुआ ।
 वफ़तरे हस्ती में थी ज़रीवरके^७ तेरी हयात,^८
 थी सरापा दीनो दुनिया का सबक तेरी हयात ।
 उम्र भर तेरी मुहब्बत मेरी खिदमत गर रही,
 में तेरी खिदमत के क़ाबिल जब हुआ तू चल बसी ।
 वह जवां, क़ामत^९ में है जो सूरते सर्व बलंद,
 तेरी खिदमत से हुआ जो मुझ से बढ़ कर बहरा मंद^{१०} ।
 कारोबारे जिन्देगानी में वह हम पहलू^{११} मेरा,
 वह मुहब्बत में तेरी तस्वीर, वह बाजू मेरा ।
 तुझको मिस्ले तिल्ल^{१२} के बे दस्तो पा रोता है वह,
 सब से ना आशना मुबहो मसा^{१३} रोता है वह ।

तुलम जिसका तू हमारी किस्ते जां^{१४} में बो गई,
 शिर्कतेगम^{१५} से वह उल्फ़त और मुहकम^{१६} हो गई ।

आह यह दुनिया, यह मातम खानए बर्ना व पीर^{१७},
 आदमी है किस तिलिस्मे दोशो फ़दा^{१८} में असीर^{१९} ।
 कितनी मुश्किल जिन्दगी है, किस क़दर आसां है मौत,
 गुलशने हस्ती में मानिन्दे नसीम^{२०} अर्ज़ी^{२१} है मौत ।

१-समाधि-धूलि २-आधो रात को प्रार्थना ३-प्रशिक्षण ४-सितारों ५-सहभाग्य
 ६-पूर्वजों ७-स्वर्ण-पत्र ८-जीवन ९-शरीर १०-भाग्यवान ११-पार्श्ववर्ती
 १२-बच्चे की तरह १३-सबरे और संव्या १४-प्राणों की खेती १५-परस्पर
 संवेदना १६-मुद्दह १७-युवक तथा वृद्ध १८-भूत भविष्य का आडम्बर
 १९-बन्दी २०-प्रात-समीर २१-प्रचुर ।

जलजले हैं, बिजलियां हैं, क्रहत^१ हैं, आलाम^२ हैं,
कैसी कैसी दुखतराने मादरे अय्याम^३ हैं ।
कुल्बए इफ़लास^४ में, दौलत के काशाने में मौत,
दशतोवर में, शहर में, गुल्शन में, वीरा ने में मौत ।
मौत है हंगामा आरा क़ुल्जुमे ख़ामोश^५ में,
डूब जाते हैं सफ़ीने^६ मौत की आग़ोश में ।
ने मजाले शिक्वा^७ है ने ताक़ते गुफ़्तार है,
ज़िन्दगानी क्या है इक़ तौक़े गुलू अफ़शार^८ है ।

क्राफ़िले में ग़ैरे^९ आवाजे दिरा^{१०} कुछ भी नहीं,

इक़ मताए^{११} दीदए तर के सिवा कुछ भी नहीं ।

ख़तम हो जायेगा लेकिन इन्तेहां का दौर भी,
हैं पसे नुह पदए गर्दू^{१२} अभी दौर और भी ।
सीना चाक^{१३} इस गुलसितां में लाला वो गुल हैं तो क्या,
नाला वो फ़र्याद पर मजबूर बुलबुल हैं तो क्या ।
झाड़ियां जिनके क़फ़स में क़ंद है आहे खिजां,
सब्ज़ कर देगी उन्हें बादेबहारो जाविदा^{१४} ।
ख़ुफ़्ता ख़ाक़े^{१५} पे सिपर में है शरार अपना तो क्या,
आरिजी^{१६} मह़िल है यह मुश्ते गुबार अपना तो क्या ।

ज़िन्दगी की आग़ का अंजाम ख़ाकिस्तर^{१७} नहीं,

टूटना जिसका मुक़द्दर हो यह वह ग़ौहर नहीं ।

ज़िन्दगी महबूब ऐसी दीदये क़ुदरत में है,
ज़ौक़े हिफ़जे ज़िन्दगी^{१८} हर चीज़ की फ़ितरत में है ।

- १-अकाल २-विपत्तियाँ ३-पुग माता की बेटियाँ ४-दरिद्रता-निकेतन
५-नीरव सिन्धु ६-नौकाएँ ७-शिकायत ८-गले को भींचने वाला ९-अतिरिक्त
१०-घंटा ११-पूँजी १२-आकाश के नौ पदों के पीछे १३-विदीर्ण हृदय
१४-स्थायी बसन्त समीर १५-पार्थिव शरीर १६-अस्थायी १७-राख
१८-जीवन रक्षा का भाव ।

मौत के हाथों से मिट सकता अगर नकशे हयात^१,
 आम यूँ उसको न कर देता निजामे कायनात^२ ।
 है अगर अर्जा तो यह समझो अजल^३ कुछ भी नहीं,
 जिस तरह सोने से जीने में खलल कुछ भी नहीं ।
 आह ग़ाफ़िल ! मौत का राजे निहां^४ कुछ और है,
 नकश की नापाएद्वारी^५ से अर्था^६ कुछ और है ।
 जअते नज्जारा^७ है नकशे हवा बालाये आब^८,
 मौजे मुत्तर^९ तोड़ कर तामीर^{१०} करती है हुबाब^{११} ।
 मौजे के दामन में फिर उस को छुपा देती है यह,
 कितनी बेवर्दी से नकश अपना मिटा देती है यह ।
 फिर न कर सकती हुबाब^{१२} अपना अगर पैदा हवा,
 तोड़ने में उसके यूँ होती न बे पर्वा हवा ।
 इस रविश का क्या असर है हैअते तामीर^{१३} पर,
 यह तो हुज्जत है हवा की क़ुव्वते तामीर पर ।

फ़ितरते हस्ती शहीदे आर्जू रहती न हो,
 खूब तर पैकर^{१४} की उस को जुस्तुज रहती न हो ।

आह ! सीमाबे परीशां,^{१५} अंजुमे गर्दू फ़रोज^{१६},
 शोख यह चिगारियां मम्नूने शब^{१७} है जिनका सोज ।
 अक़ल जिस से सर बजानू^{१८} है वह मुदत इनकी है,
 सर गुजश्ते नौए इन्सां^{१९} एक साअत^{२०} इनकी है ।
 फिर यह इंसां आसुए अफ़लाक^{२१} है जिसकी नज़र,
 क़ुदसियों^{२२} से भी मक्कासिद^{२३} में जो है पाकीज़ा तर^{२४} ।

१-जीवन-चिह्न २-ब्रह्माण्ड की व्यवस्था ३-मृत्यु ४-गुप्त रहस्य ५-अस्था-
 यित्व ६-प्रकट ७-दृश्य-स्वर्ग ८-जल के ऊपर ९-व्याकुल लहर १०-निर्माण
 ११-बुलबुला १२-बुलबुला १३-निर्माण व्यवस्था १४-काया १५-व्याकुल
 पारा १६-आकाश को चमकानेवाले तारे १७-रात का आभारी १८-हैरान,
 घुटनों पर सिर रखे १९-मानव जाति की आत्म कथा २०-क्षण २१-आकाशों के
 उस पार २२-फ़रिश्तों २३-उद्देश्यों २४-अधिक पवित्र ।

जो मिसाले शमए रौशन महफ़िले क़ुबरत में है,
आसमां एक नुक्ता^१ जिसकी वुस्त्रते फ़ितरत^२ में है ।
जिसकी नादानी सदाक़त के लिये बेताब है,
जिसका नाख़ुन साजे हस्ती^३ के लिये मिज़ाब^४ है ।

शोला यह कमतर है गर्दू^५ के शरारों से भी क्या ?
कम बहा^६ है आफ़ताब अपना सितारों से भी क्या ?

तुलमे गुल की आंख ज़ेरे खाक भी बेखाब^७ है,
किस क़दर नश्वोनूमा^८ के वास्ते बेताब^९ है ।
जिन्दगी का शोला इस दाने में जो मस्तूर^{१०} है,
ख़ुदनुमाई^{११} ख़ुद फ़जाई^{१२} के लिये मजबूर है ।
सदिये मर्क़द^{१३} से भी अफ़सुर्दा^{१४} हो सकता नहीं,
खाक में खोकर भी अपना सोज़ खो सकता नहीं ।
फूल बनकर अपनी तुर्बत^{१५} से निकल आता है यह,
मौत से गोया क़बाये जिन्दगी^{१६} पाता है यह ।
है लहद^{१७} उस क़ुव्वते आशुफ़्ता^{१८} की शीराज़ा बन्द^{१९},
डालती है गर्दने गर्दू^{२०} में जो अपनी क़मंद^{२१} ।
मौत तज्दीदे मज़ाक़े जिन्दगी^{२२} का नाम है,
खाब के पर्दे में बेदारी^{२३} का इक पैग़ाम है ।

ख़ूगरे पर्वाज़^{२४} को पर्वाज़ में डर कुछ नहीं,
मौत इस गुलशन में जुज़ संजीदने पर^{२५} कुछ नहीं ।

१-विन्दु २-प्रकृति की विशालता ३-जीवन-वीणा ४-सितार बजाने का यंत्र ५-अल्प मूल्य ६-निद्राविहीन ७-विकासोन्नति ८-व्याकुल ९-निहित १०-आत्म-प्रदर्शन ११-आत्म-परिवर्द्धन १२-समाधि १३-उदास १४-समाधि १५-जीवन परिधान १६-समाधि १७-बिखरी हुई शवित १८-व्यवस्थाबद्ध १९-फन्दा २०-जीवन अभिरुचि का नवीनीकरण २१-जाग्रति २२-उड्डयन-अभ्यस्त २३-पर तौलने ।

कहते हैं अहले जहां बदे अजल^१ है लादवा,
 जलमे फुर्कत वक्त के मरहम से पाता है शफा ।
 दिल मगर गम मरने वालों का जहानाबाद है,
 हल्कए जनजीरे सुबहो शाम से आजाद है ।
 वक्त के अप्सू^२ से थमता नालय मातम नहीं,
 वक्त जलमे तेरो फुर्कत^३ का कोई मरहम नहीं ।
 सर पे आ जाती है जब कोई मुसीबत नागहाँ^४,
 अदके पैहम^५ दीदये इन्सां से होते हैं रवां ।
 रक्त^६ हो जाता है दिल को नाला व फरयाद से,
 खूने दिल बहता है आंखों की सरशकाबाद^७ से ।
 आदमी ताबे शकेबाई^८ से गो महलूम^९ है,
 उसकी फितरत में यह इक एहसासे नामालूम है ।
 जौहरे इन्सां अदम से आशना होता नहीं,
 आंख से गाएब तो होता है फना होता नहीं ।
 रखते हस्ती^{१०} खाक गम की शोला अफशानी से है,
 सर्व यह आग उस लतीफ एहसास^{११} के पानी से है ।

आह यह जब्ते फुगां^{१२} गफलत की खामोशी नहीं,
 आग ही^{१३} है यह, दिलासाई, फरामोशी नहीं ।

पर्वए मश्रिक से जिस दम जल्वागर होती है सुबह,
 दाग शब का दामने आफाक^{१४} से धोती है सुबह ।
 लालए अफसुर्दा को आतश कबा^{१५} करती है यह,
 बे जुबां ताएर को समस्ते नवा^{१६} करती है यह ।

१-मृत्युव्यथा २-जादू ३-बिरहकी तलवार ४-सहसा ५-अविरल अश्रु ६-सम्पर्क
 ७-अश्रु-पुरी ८-सहनशक्ति ९-रहित १०-जीवन सामग्री ११-सूक्ष्म अनुभूति
 १२-क्रन्दन-सहन १३-ज्ञान १४-क्षितिज १५-अग्नि-परिधान सज्जित
 १६-संगीतोन्मत्त ।

सीनये बुलबुल के जिन्दा^१ से मुरुद^२ आजाद है,
सैकड़ों नरमों से बादे मुहदम^३ आबाद है।
खुप्तगाने लालाजारो कोहसारो^४ रुद बार^५,
होते हैं आखिर उरुसे जिन्दगी^६ से हमकिनार^७।

यह अगर आइने हस्ती^८ है कि हो हर शाम सुबह,
मर्कदे^९ इन्सा^{१०} की शब^{११} का क्यों न हो अन्जाम सुबह।

दामे सीमीने तखय्युल^{१२} है मेरा आफ़ाक़ गीर^{१३},
करलिया है जिससे तेरी याद को मंने असीर^{१४}।
याद से तेरी दिले बर्द आशना मामूर^{१५} है,
जैसे काबे में दुआओं से फ़िजा मामूर है।
वह फ़राएज^{१६} का तसलमुल^{१७} नाम है जिसका हयात^{१८},
जल्वा गाहें उसकी हूँ लाखों जहाने बेसिबात^{१९}।
मुस्तलिफ़ हर मंजिले हस्ती की रस्मो राह है,
आखिरत भी जिन्दगी की एक जौलांगाह^{२०} है।
है वही बे हासिली^{२१} किस्ते अजल^{२२} के वास्ते,
साजगार^{२३} आबो हवा तुलमे अमल^{२४} के वास्ते।
नूरे फ़ितरत^{२५} जुल्मते पैकर^{२६} का जिन्दानी^{२७} नहीं,
तंग ऐसा हल्क़ए अफ़कारे इन्सानी^{२८} नहीं।
जिन्दगानी थी तेरी महताब से ताबिन्दा तर^{२९},
ख़ूब तर था सुबह के तारे से भी तेरा सफ़र।

-
- १-कारागृह २-संगीत ३-प्रभात समीर ४-निद्रालीन उश्रान,
पर्वत ५-सरितायें ६-जीवनबधु ७-आलिगनबद्ध ८-संसार का नियम
९-समाधि १०-रात्रि ११-कल्पना का रजत जाल १२-क्षितिज व्यापी
१३-बन्दी १४-परिपूर्ण १५-कर्तव्यों १६-अनुक्रमण १७-जीवन १८-
नश्वर संसार १९-दौड़ने का मैदान २०-लब्धिहीनता २१-मृत्यु की खेती
२२-अनुकूल २३-कर्म का बीज २४-प्रकृति का प्रकाश २५-शरीर के अंधकार
२६-बन्दी २७-मानवी विचारों की परिधि २८-अधिक प्रकाशमान।

मिस्ले ऐवाने सहर^१ मर्कद^२ फ़रोज़ा^३ हो तेरा,
 नूर^४ से मामूर^५ यह खाक़ी शबिस्ता^६ हो तेरा ।
 आस्मां तेरी लहव^७ पर शम्नम अफ़शानी^८ करे ।
 सब्जये नौ हस्ता^९ इस घर की निगहबानी करे ।

हुमायों

(मिस्टर जस्टिस शाह दीन मरहूम)

ऐ हुमायों ! जिन्दगी तेरी सरापा सोज^{१०} थी
 तेरी चिंगारी चिरागे अंजुमन अफ़रोज^{११} थी
 गर्व^{१२} था तेरा तने खाकी^{१३} निज़ारो^{१४} दर्द मन्द
 थी सितारे की तरह रौशन तेरी तबए बुलन्द^{१५}
 किस क्रूर बेबाक़ दिल उस नातवां पैकर^{१६} में था
 शोलए गर्व^{१७} नवर्द इक मुश्ते खाकिस्तर^{१८} में था
 मौत की लेकिन दिले दाना^{१९} को कुछ पर्वा नहीं
 शब^{२०} की ख़ामोशी में जुज^{२१} हंगामए फ़र्दा^{२२} नहीं
 मौत को समझे हैं शक्रिल इहततामे जिन्दगी^{२३}
 ह ये शामे जिन्दगी मुबहे दवामे जिन्दगी^{२४}

१-प्रभात का भवन २-समाधि ३-आलोक पूर्ण ४-प्रकाश ५-परिपूर्ण
 ६-मिट्टी से निर्मित शयनागार ७-समाधि ८-ओस की वर्षा ९-नव स्फुटित
 १०-ताप ११-सभा को प्रकाशित करने वाला १२-मिट्टी की काया १३-दुर्बल
 १४-उच्चस्वभाव १५-दुर्बल शरीर १६-आकाश मापक १७-मुट्ठी भर धूल
 अर्थात् मनुष्य १८-ज्ञानी १९-रात २०-अतिरिक्त २१-भविष्य कौलाहल
 २२-जीवन का अंत २३-जीवन का अनंत प्रभात ।

कवि दाग

अज्मते^१ 'गालिब'^२ है इक मुद्दत से पेबन्दे जमीं
मेहदिए^३ मज्रूह है शहरे खमोश^४ का मकीं^५
तोड़ डाली मौत ने गुर्बत^६ में मीनाए^७ अमीर^८
चश्मे^९ महफिल में है अब तक कंफ्रे सहबाए^{१०} अमीर
आज लेकिन हमनवा !^{११} सारा चमन मातम में है
शमए रौशन बुझ गई, बश्मे सुखन मातम में है
बुलबुले देहली ने बांधा उस चमन में आशियां
हमनवा है सब अनादिल^{१२} बागे हस्ती के जहां

चल बसा दाग, आह मय्यत^{१३} उसकी जेबे दोश^{१४} है
आखिरी शायर जहानाबाद^{१५} का खामोश है

अब कहां वह बांकपन, वह शोखिए^{१६} तर्जों बयां^{१७}
आग थी काफूरे पीरी^{१८} में जवानी की निहां^{१९}
थी जबाने दाग पर जो आर्जू हर दिल में है
लैलए मानी^{२०} वहां बेपर्दा, यां महमिल में है
अब सबा^{२१} से कौन पूछे गा सुकूते^{२२} गुल का राज
कौन समझे गा चमन में नालए बुलबुल का राज

थी हकीकत से न गफलत फिक्र^{२३} की पर्वाज^{२४} में
आंख तायर^{२५} की नशेमन^{२६} पर रही पर्वाज में

और दिखलाएं गे मज्मूं^{२७} की हमें बारीकियां
अपने फिक्रे नुक्ता आरा^{२८} की फलक पैमाइयां

-
- १-महात्म्य २-उर्दू के प्रसिद्ध कवि ३-उर्दू कवि ४-स्माधि क्षेत्र, स्मशान
५-निवासी ६-परदेश ७-मदिरा की सुराही ८-उर्दू के प्रसिद्ध कवि ९-नेत्र
१०-मदिरा का आनन्द ११-महभाषी, १२-बुलबुल १३-अर्थी १४-कंधों
की शोभा १५-दिक्ती १६-चंचलता १७-वर्सात शैली १८-बुढ़ापा १९-
छिड़ी हुई २०-अर्थ २१-अमीर २२-मौनता २३-काव्य चिंतन २४-उड़ान
२५-पक्षी २६-घोंसला २७-विषय २८-सूक्ष्मता पूर्ण ।

तल्लिए दौरा^१ के नक्शे खींच कर रुलवाएंगे
 या तल्लय्युल^२ की नई दुनिया हमें दिखलाएंगे
 इस चमन में होंगे पैदा बुलबुले शीराज भी
 सैंकड़ो साहिर^३ भी होंगे साहिबे^४ एजाज भी
 उठेंगे आज्ञर^५ हज़ारों शेर^६ के बुत खाने से
 मैं पिलाएंगे नए साक्री नए पैमाने से
 लिक्खी जाएंगी किताबे दिल की तपसीरें^७ बहुत
 होंगी ऐ खाबे जवानी ! तेरी ताबीरें^८ बहुत

हबह^९ खेंचेगा लेकिन इश्क की तस्वीर कौन ?

उठ गया नावकफ़िगन^{१०}, मारेगा दिल पर तीर कौन ?

अश्क के दाने ज़मीने शेर में बोता हूं मैं
 तू भी रो ऐ खाके दिल्ली । 'दास' को रोता हूं मैं
 ऐ जहानाबाद, ऐ समायिए बज्मे सुखन
 हो गया फिर आज पामाले^{११} खिजां तेरा चमन
 वह गुले रंगों तेरा, रुखसत मिसाले बू हुवा
 आह खाली 'दास' से काशानए^{१२} उर्दू हुवा
 थी न शायद कुछ कशिश ऐसी वतन की खाक में
 वह महे कामिल^{१३} हुवा पिन्हां दकन^{१४} की खाक में

उठ गए साक्री जो थे, मंखाना खाली रह गया
 यादगारे बज्मे देहली एक 'हाली' रह गया

आर्जू को खून रुलवाती है बेदादे अजल^{१५}
 मारता है तीर तारीकी में सय्यादे अजल

१-संसार की कटुताएँ २-विचार ३-जादूगर ४-चमत्कार कर्त्ता ५-एक
 मूर्तिकार ६-कविता ७-मदिरा ८-टीकाएँ ९-स्वप्न फल १०-ठीक-ठीक
 ११-वाणवेधी १२-पददलित १३-घर १४-पूर्णचन्द्र १५-दक्षिण १६-मृत्यु का
 जुल्म ।

खुल नहीं सकती शिकायत के लिए लेकिन जुबां
है खिजां का रंग भी बज्हे क्रयामे गुल्सितां

एक ही कानूने आलमगीर^१ के हूं सब असर
बूए गुल का बाग से, गुलचीं का दुनिया से सफ़र

मिर्जा गालिब*

फ़िक्रे^२ इन्सां पर तेरी हस्ती से यह रौशन हुआ
है परे मुर्गे तख़य्युल की रसाई ता कुजा^३
था सरापा रूह तू, बज्मे सुखन पैकर तेरा^४
जेबे महफ़िल^५ भी रहा, महफ़िल से पिनहां^६ भी रहा

दीद^७ तेरी आंख को उस हुस्न की मंज़ूर है
बन के सोजे ज़िन्दगी हर शै^८ में जो मस्तूर^९ है

महफ़िले हस्ती तेरी बर्बत^{१०} से है समया दार
जिस तरह नद्दी के नामों^{११} से सुकूते कोहसार^{१२}
तेरे फ़िदौ^{१३} से तख़य्युल^{१४} से है कुदरत की बहार
तेरी किशते फ़िक्र^{१५} से उगते हैं आलम^{१६} सब्जा वार^{१७}

ज़िन्दगी मुश्मर^{१८} है तेरी शोख़िए तहरीर^{१९} में
ताबे गोयाई^{२०} से जुबिश है लबे तस्वीर में

१-विश्व व्यापी *उर्दू के प्रसिद्ध कवि २-विचार ३-कल्पना-पक्षी के पर की पहुँच कहां तक है ४-तेरा अस्तित्व कविता की सभा था ५-सभा की शोभा ६-छिपा हुआ ७-दर्शन ८-वस्तु ९-छिपा हुआ १०-एक बाजा ११-गीतों १२-पर्वत का मौन १३-कल्पना स्वर्ग १४-विचार की खेती १५-कई संसार उपजते हैं १६-हरियाली के समान १७-निहित १८-रचना की चंचलता १९-वाक्-शक्ति ।

नुक्क^१ को सौ नाज हैं तेरे लबे एजाज^२ पर
 महवे हैरत^३ है सुरय्या रिफ़्अते पर्वाज^४ पर
 शाहिदे मज्मू^५ तसद्दुक^६ है तेरे अन्दाज पर
 खन्दा जन^७ है गुंचए^८ दिल्ली गुलेशीराज^९ पर
 आह तू उजड़ी हुई दिल्ली में आरामीदा^{१०} है,
 गुलशने वैमर^{११} में तेरा हम नवा^{१२} खाबीदा^{१३} है
 लुक्के गोयाई^{१४} में तेरी हमसरी^{१५} मुम्किन नहीं
 हो तख्त्युल^{१६} का न जब तक फ़िक्के कामिल^{१७} हमनशी^{१८}
 हाय अब क्या हो गई हिन्दोस्तां की सरजमीं
 आह, ऐ नज्जारा आमोजे निगाहे नुक्ताबी^{१९}
 गेसुए उर्दू अभी मिन्नतपज़ीरे शाना^{२०} है
 शम्भ^{२१} यह सौदाइए दिलसोज़िए^{२२} पर्वाना है
 ऐ जहानाबाद !^{२३} ऐ गहवारए इल्मो हुनर^{२४}
 हें सरापा नालए खामोश^{२५} तेरे बामो दर^{२६}
 ज़रें ज़रें में तेरे खाबीदा^{२७} हैं शम्सो क्रमर^{२८}
 यों तो पोशीदा है तेरी खाक में लाखों गुहर^{२९}
 दफन तुझमें कोई फ़ख़्ते रोज़गार^{३०} ऐसा भी है ?
 तुझमें पिनहां^{३१} कोई मोती आबदार ऐसा भी है ?

१-वाक्-शक्ति २-चमत्कार पूर्ण मुख ३-आश्चर्यमग्न ४-उड़ान की ऊँचाई
 ५-विषय की सुन्दरी ६-निछावर ७-हंस रही है ८-कली ९-शीराजके फूल
 १०-आराम कर रहा है ११-जर्मनी के प्रसिद्ध कवि गोयटे का स्माधि स्थान
 १२-साथी, गोयटे की ओर संकेत है १३-सो रहा है १४-बात का रस
 १५-बराबरी १६-कल्पना १७-पूर्ण विचार १८-साथी १९-देखना सिखाने
 वाली बारीक दृष्टि २०-कंधी का आभारी २१-दीपक २२-दिल जलाना
 २३-दिल्ली २४-विद्या और कला का झूला २५-मूक चीत्कार २६-छत और
 दरवाज़े २७-सोया हुआ २८-सूरज चांद २९-मोती ३०-युग-गौरव ३१-निहित

शेक्सपियर

शफ़क़े सुबह^१ को दरिया का खराम^२ आईना
 नगमए शाम को खामोशिए शाम आईना
 बर्गेगुल^३ आईनए आरिजे जेबाए^४ बहार
 शाहिदे मै^५ के लिए हुजलए जाम^६ आईना
 हुस्न आईनए हक़,^७ और दिल आईनए हुस्न
 दिले इन्सां को तेरा हुस्ने कलाम^८ आईना

है तेरे फ़िक़रे फ़लकरस^९ से कमाले हस्ती
 क्या तेरी फ़ितरते रौशन^{१०} थी मन्नाले^{११} हस्ती

तुझको जब दीदए दीदार तलब ने ढूँढा
 ताबे खुशीद^{१२} में खुशीद को पिनहां^{१३} देखा
 चश्मे आलम^{१४} से तो हस्ती रही मस्तूर^{१५} तेरी
 और आलम को तेरी आंख ने उरियां^{१६} देखा

हिफ़जे अस्नार^{१७} का फ़ितरत^{१८} को है सौदा^{१९} ऐसा
 राज़दां^{२०} फिर न करेगी कोई पैदा ऐसा ।

—:०:—

१-ऊषा २-गति ३-पुष्प-पत्र ४-सुन्दर कपोल ५-मदिरा सुन्दरी
 ६-मदिरा पात्र का सुसज्जित कक्ष ७-सत्य ८-काव्य-सौन्दर्य ९-गगन स्पर्शी
 विचार १०-उज्ज्वल प्रकृति ११-परिणाम १२-सूर्य-प्रकाश १३-निहित
 १४-दुनिया की आंख १५-अदृश्य १६-प्रत्यक्ष १७-रहस्य संगोपन १८-प्रकृति
 १९-धुन २०-मर्मज

नालए फ़िराक (आर्नल्ड की याद में)

जा बसा मारिब^१ में आखिर ऐ मकां तेरा मकी^२
आह, मश्कि^३ की पसन्द आई न उसको सर जमीं
आ गया आज इस सदाक़त^४ का मेरे दिल को यकीं
जुल्मते शब^५ से ज़ियाए रोज़े फ़ुर्क़त^६ कम नहीं

* ता जि आग़ोशे विदाअश दागे हैरत चीदा अस्त

‡ हमचो शमए कुश्ता दर चश्मे निगह खाबीदा अस्त

कुश्तए^७ उजलत^८ हूं, आबादी में घबराता हूं में
शहर से सौदा^९ की शिद्दत^{१०} में निकल जाता हूं में
यादे अय्यामे^{११} सलफ़^{१२} से दिल को तड़पाता हूं में
बह्ले तस्कीं^{१३} तेरी जानिब^{१४} दौड़ता आता हूं में

आख गो मानूस^{१५} है तेरे दरो दीवार से

अजनबीयत है मगर पैदा मेरी रफ़्तार से

ज़र्रा मेरे दिल का खुशींद आशना^{१६} होने को था

आईना टूटा हुआ आलम नुमा^{१७} होने को था

नल्ल^{१८} मेरी आरजूओं का हरा होने को था

आह ! क्या जाने कोई, मैं क्या से क्या होने का था

अब्रेरहमत दामन अज गुल्जारे मन बर चीबो रफ़्त^{१९}

अन्दके बर गुन्चाहाए आज़ू बारीबो रफ़्त^{२०}

१-पश्चिम(योरुप) २-निवासी ३-पूर्वी देश(एशिया) ४-सत्यता ५-रात का अन्धकार ६-विरह के दिन का प्रकाश * जब से उसकी विदा की गोद से हैरानी का दाग चुना है ‡ वह बुझे हुए दीपक के समान दृष्टि के नेत्र में सोया हुआ है ७-मारा हुआ ८-एकांत ९-पागलपन १०-अधिकता ११-दिनों १२-बीते हुए १३-शान्ति के लिए १४-ओर १५-परिचित १६-सूर्य-परिचित १७-संसारदर्शक १८-वृक्ष १९-अनुकंपा का मेघ मेरी वटिका से दामन खींच कर चला गया २०-कामना की कलिका पर बहुत कम बरसा और निकल गया ।

तू कहां है ऐ कलीमे ज़वए^१ सीनाए इल्म
 थी तेरी मौजे नफ़स,^२ बादे निशात अपजाए^३ इल्म
 अब कहां वह शौक़े रह पैमाइये^४ सहराए इल्म
 तेरे दम से था हमारे सर में भी सौदाए इल्म
 शोरे लैला कू ? कि बाज़ आराइशे सौदा कुनद^५
 खाके मजनूँ रा गुबारे खातिरे सहरा कुनद^६
 खोल देगा दश्ते^७ वहशत उक़दए^८ तन्नदीर को
 तोड़ कर पहुँचंगा मैं पंजाब की जंजीर को
 देखता है बीदए हैरां^९ तेरी तस्वीर को
 क्या तसल्ली हो मगर गिर्वीदए तक्ररीर^{१०} को
 ताबे गोयाई^{११} नहीं रखता दहन^{१२} तस्वीर का
 खामुशी कहते हैं जिस को है सुखन^{१३} तस्वीर का

सर सय्यद का समाधि-शिला-लेख

(सर सय्यद की लौहे तुर्बत)

ऐ कि तेरा मुर्गे जां^{१४} तारे नफ़स^{१५} में है असीर^{१६}
 ऐ कि तेरी रूह का ताएर^{१७} क़फ़स^{१८} में है असीर
 इस चमन के नरमा पैराओं^{१९} की आजादी तो देख
 शहर जो उजड़ा हुआ था उसकी आबादी तो देख

१-तूर पर्वत की चोटी २-सांस की लहर ३-आनन्दवर्द्धक समीर ४-पथ-
 गमन की इच्छा ५-अब लैला का शोर कहां है जो उन्माद का प्रबन्ध करे ६-और
 मजनूँ की धूल को बन के हृदय का गर्द बनाए ७-उन्माद का वन ८-गुल्थी
 ९-चकित नेत्र १०-भाषण-प्रेमी ११-वाक्-शक्ति १२-मुख १३-कथन
 १४-प्राण-पक्षी १५-सांस के तार १६-गिरफ्तार १७-पक्षी १८-पिंजरा
 १९-गायकों ।

फ़िर रही थी मुझे जिसकी वो महफ़िल है यही
सबो इस्तक़लाल^१ की खेती का हासिल^२ है यही

संगे तुर्बत^३ है मेरा गिर्बोबए^४ तकरीर देख
चश्मे बातिन^५ से ज़रा इस लौह की तहरीर देख

मुद्ग़्ग़ा^६ तेरा अगर दुनिया में है तालीमे दी^७
तर्क^८ दुनिया क़ौम को अपनी न सिखलाना कहीं
वा न करना^९ फ़िर्का बन्दी के लिए अपनी जुबां
छुप के है बैठा हुद्ग़ा हंगामए महशर^{१०} यहां
बस्ल^{११} के अस्बाब^{१२} पंवा हों तेरी तहरीर से
देख कोई दिल न बुख जाए तेरी तकरीर से

महफ़िले नौ^{१३} में पुरानी दास्तानों को न छेड़
रंग पर जो अब न आएँ उन फ़सानों^{१४} को न छेड़

तू अगर कोई मुदब्बिर^{१५} है तो सुन मेरी सदा^{१६}
है बलेरी दस्ते^{१७} अर्बाबे सियासत^{१८} का असा^{१९}
अज़ेमतलब^{२०} से भिजक जाना नहीं ज़ेबा तुझे
नेक है नीयत अगर तेरी तो क्या पर्वा तुझे

बन्दए मोमिन^{२१} का दिल बीमो रिया^{२२} से पाक है
क्रुबते फ़र्माँवा^{२३} के सामने बेबाक^{२४} है

हो अगर हाथों में तेरे ख़ामए^{२५} मोज़िज़ रक़म^{२६}
शीशएदिल^{२७} हो अगर तेरा मिसल्ले ज़ामेजम^{२८}

-
- १-दृढ़ता २-फल ३-स्माधि शिला ४-मोहित ५-हृदयचक्षु
६-उद्देश्य ७-धार्मिक शिक्षा ८-त्याग ९-न खोलना १०-प्रलय की
अशांति ११-मेलमिलाप १२-कारण १३-नयी १४-कहानियों १५-नीतिज्ञ
१६-वाणी १७-हाथ १८-राजनीतिज्ञ गण १९-लाठी २०-अभिप्राय प्रकाशन
२१-धार्मिक प्राणी २२-भय और दिखावट २३-राज-शक्ति २४-निर्भय २५-
क़लम २६-दिव्य लेखक २७-हृदय दर्पण २८-जमके प्याले के समान ।

पाक रख अपनी जुबां, तल्मीजे रहमानी^१ है तू
 हो न जाए देखा तेरी सदा^२ बे आबरू^३
 सोने वालों को जगा दे शेर^४ के एजाज^५ से
 खिर्मने बातिल^६ जला दे शोलए^७ आवाज से

—:०:—

अब्दुल्कादिर* के नाम

उठ कि जुल्मत^८ हुई पैदा उफुके खावर^९ पर
 बरम में शोला नवाई^{१०} से उजाला कर दें
 एक फ़र्याद है मानिन्दे सपन्द^{११} अपनी बिसात^{१२}
 इसी हंगामे से महफ़िल तहोबाला कर दें
 अहले महफ़िल को दिखा दें असरे संकले इश्क
 संगेइओज^{१३} को आईनए फ़र्दा^{१४} कर दें
 जल्बए यूसुफ़े गुम गश्ता^{१५} दिखा कर उन को
 तपिश आमाबा तर अज खूने जुलेखा^{१६} कर दें

१-ईश्वर-शिष्य २-वाणी ३-सम्मानहीन ४-कविता-पद ५-ईश्वरदत्त चमत्कार
 ६-असत्य के खलिहान ७-लपट ८-तिमिर ९-उदयाचल, सूर्य-क्षितिज
 १०-अग्निवर्षक गान ११-एक काला दाना जो आग में डालने से आवाज देता है
 १२-दशा १३-वर्तमान के पत्थर १४-भविष्य का दर्पण १५-विलोपित यूसुफ़
 का प्रकाश १६-जुलेखा के रक्त से भी अधिक गर्म ।

*खान बहादुर शेख सर अब्दुलकादिर रिटायर्ड जज हाईकोर्ट लाहौर,
 मेम्बर इंडिया हाउस लन्दन, 'इकबाल' के परम मित्रों में से थे, ये लन्दन
 में डाक्टर इकबाल के साथ ही थे, वहाँ पर 'इकबाल' ने इरादा किया था
 कि शायरी छोड़ दे । इसी बहस के सम्बन्ध में यह कविता लिखी गई है ।
 इस कविता में अब्दुलकादिर को डा० इकबाल शायरी छोड़ने की दलीलें
 दे रहे हैं ।

इस चमन को सबक आईने नुमू^१ का देकर
 कतरए शदनमे बेमाया^२ को दरिया कर दें
 रखते जां^३ बुतकदए चीं^४ से उठा लें अपना
 सब को मद्दहैरुखे,^५ सादा व सलीमा^६ कर दें
 देख यख्तिब^७ में हुवा नाकए^८ लैला बेकार
 क़ैस को आर्जूए नौ^९ से शनासा^{१०} कर दें
 बादा देरीना^{११} हो और गर्म हो ऐसा कि गुदाज^{१२}
 जिगरे शीशा व पैमाना व मीना कर दें
 गर्म रखता था हमें सदिए मारिब^{१३} में जो दाग
 चीर कर सीना उसे वक्फ़े तमाशा^{१४} कर दें
 शमअ की तरह जिएं बझमगहे आलम^{१५} में
 खुद जलें दीदए अगयार^{१६} को बीना^{१७} कर दें

हर्चे दर दिल गुज़रद वक्फ़े जुबां दारद शमअ^{१८}
 सोख्तन नेस्त खियाले कि निहां दारद शमअ^{१९}

१-विकास का नियम २-तुच्छ ३-प्राण सामग्री, जीवन ४-चीन देश ५-मुख
 दर्शन में तन्मय ६-अरब की दो प्रसिद्ध सुन्दरियाँ ७-मदेना का प्राचीन नाम
 ८-ऊंटनी ९-नई कामना १०-परिचित ११-शराब पुरानी १२-नरम
 १३-योरूप १४-दर्शनार्थ उत्सर्ग १५-संसार सभा १६-दूसरों की आँख
 १७-देखने वाली १८-दर्पक के मन में जो बात होती है वह उसे मुख से साफ
 साफ प्रकट कर देता है १९-उसके जलने की भावना ऐसी नहीं है कि वह उसको
 गुप्त रखे ।

मोटर

कैसी पते की बात जोगिन्दर ने कल कही—

“मोटर है जुल्फ़कार अली खां का क्या खमोश

हंगामा आफ़री^१ नहीं उस का खरामेनाज^२

मानिन्दे बर्क^३ तेज, मिसाले हवा खमोश ।”

मैंने कहा—“नहीं है यह मोटर पे मुंहसर

है जादए हयात^४ में हर तेज पा^५ खमोश”

है पा-शिकस्ता^६ शेवए^७ फ़रियाद से जरस^८

निगहत^९ का कारवाँ है मिसाले सबा^{१०} खमोश

मीना मुदाम^{११} शोरिशे कुल्कुल^{१२} से पा-बग़िल^{१३}

लेकिन मिजाजे जामे खराम आशना^{१४} खमोश

शायर के फ़िक्र^{१५} को परे पवज़ि^{१६} खामुशी

सर्माया दारे गर्मिए आवाज खामुशी

गुले रंगीन

(रंगीन फूल)

तू शनासाए खराशे उद्बए मुश्किल नहीं^१

ऐ गुले रंगीं तेरे पहलू में शायद दिल नहीं

जेबे^२ महफ़िल है शरीके शोरिशे^३ महफ़िल नहीं

यह फ़रागत^४ बस्मेहस्ती^५ में मुझे हासिल नहीं

- १—शोर करने वाला २—सुन्दर गति ३—विद्युत के समान ४—जीवन पथ
५—तीव्र गामी ६—टूटे पैर वाला ७—रीति ८—घण्टा ९—सौरभ १०—प्रभात
समीर ११—सर्वदा १२—सुराही से शराब गिरने की आवाज १३—मिट्टी में धँसा
हुआ १४—घमने वाले मदिरा पात्र का स्वभाव १५—चिंतन १६—उड़ने के डैने
१७—तू दुखद समस्या की कठिनाई से परिचित नहीं १८—शोभा १९—अशान्ति
२०—अवकाश २१—संसार सभा ।

इस चमन में मैं सरापा^१ सोझो साजे^२ आजू
 और तेरी ज़िन्दगानी बे गुवाजे^३ आजू
 तोड़ लेना शाख से तुझको मेरा आई^४ नहीं
 यह नज़र सैर अज निगाहे चश्मे सूरत बीं नहीं^५
 आह यह दस्तेजफ़ाज़^६, ऐ गुले रंगीं नहीं
 किस तरह तुझको यह समझाऊँ कि मैं गुलचीं^७ नहीं
 काम मुझको दीदए हिक्मत^८ के उलझेड़ोंसे क्या
 दीदए^९ बुलबुल से मैं करता हूँ नज्जारा^{१०} तेरा
 सौ ज़बानों पर भी खामोशी तुझे मन्ज़ूर है
 राज़ वह क्या है तेरे सीने में जो मस्तूर^{११} है
 मेरी सूरत^{१२} तू भी इक बगें रियाजे तूर^{१३} है
 मैं चमन से दूर हूँ तू भी चमन से दूर है
 मुत्मइन^{१४} है तू, परीशां मिस्ले बू^{१५} रहता हूँ मैं
 ज़खिमए शमशीरे जौक़े जुस्तुजू^{१६} रहता हूँ मैं
 यह परीशानी मेरी सामाने जमईयत^{१७} न हो
 यह ज़िगर सोझी^{१८} चिरागे ख़ानए हिक्मत^{१९} न हो
 नातवानी^{२०} ही मेरी सर्मायए क़ुव्वत^{२१} न हो
 रश्के जामे जम^{२२} मेरा आईनएहैरत^{२३} न हो
 यह तलाशेमुत्तसिल^{२४} शमए जहां अफ़रोज^{२५} है
 तौसने इदराके इन्सा^{२६} को ख़राम आमोज^{२७} है

१-सर्वांगीण २-हर्षविषाद ३-पिघलना ४-नियम ५-यह दृष्टि केवल रूप देखने वाली दृष्टि है ६-अत्याचारी हाथ ७-फूल तोड़ने वाला ८-विज्ञान-दृष्टि ९-आँख १०-दर्शन ११-छिपा हुआ १२-समान १३-तूर पर्वत की बाटिका का एक पत्ता १४-संतुष्ट १५-सौरभ के समान १६-जिज्ञासा की इच्छा १७-संतुष्टि १८-जलाना १९-ज्ञान के घर का दीप २०-दुर्बलता २१-शक्तिभंडार २२-जमशेद का प्याला, जिसमें संसार भर की दशा देखी जाती थी २३-आश्चर्य दर्पण २४-निरंतर खोज २५-संसार को प्रकाशित करने वाला दीपक २६-मानव-ज्ञान का घोड़ा २७-चाल सिखाने वाला है ।

अहदे तिफ़ली

(शिशु काल)

ये दयारे नौ^१ जमीनो आस्मां मेरे लिए
बुसअते आगोशे मादर^२ इक जहां मेरे लिए
थी हर इक जुंबिश^३ निशाने लुत्फे जाँ^४ मेरे लिए
हफ़े बेमतलब^५ थी खुद मेरी जुबां मेरे लिए

दवें तिफ़ली^६ में अगर कोई ख़लाता था मुझे
शोरिशे जंजीरे दर^७ में लुत्फ़ आता था मुझे
तकते रहना हाथ वह पहरों तलक सूए क्रमर^८
वह फटे बादल में बे आवाजे पा^९ उसका सफ़र
पूछना रह रहे के उस के कोहो सहरा^{१०} की खबर
और वह हैरत दरोशे मस्तलहत^{११} आमेज पर

आख़ वज़फ़े दीद^{१२} थी, लब^{१३} माएले गुफ़्तार^{१४} था
बिल न था मेरा सरापा^{१५} जौक़े इस्तिफ़सार^{१६} था

अब्रे कोहसार

(पर्वत-मेघ)

है बलन्दी से फ़लक बोस^{१७} नशेमन^{१८} मेरा
अब्रे कुहसार हूँ गुलपाश^{१९} है दामन मेरा
कभी सहरा कभी गुलज़ार है मस्कन^{२०} मेरा
शहरो वीराना मिरा, बह्ल^{२१} मिरा, बन मेरा

१-नया देश २-माता की गोद का विस्तार ३-हिलना ४-हृदय-आनन्द
५-व्यर्थ बात ६-शैशव ७-द्वार की कुण्डी की खटखटाहट ८-चाँद की ओर
९-बिना पदध्वनि के १०-पर्वत-बन ११-उद्देश्य पूर्ण झूठ १२-दर्शन लीन
१३-अंठ १४-बोलने का इच्छुक १५-सम्पूर्ण १६-जिज्ञासा की इच्छा १७-गगन
चुंबी १८-निवास स्थान, घोंसला १९-पुष्प वर्षक २०-निवासस्थान २१-समुद्र ।

किसी वादी^१ में जो मन्ज़ूर हो सोना मुझको
 सज्जए कोह^२ है मरुमल का बिछौना मुझको
 मुझको क्रुद्रत ने सिखाया है दुरपशा^३ होना
 नाक्रए^४ शाहिदे रहमत^५ का हुदीखा^६ होना
 गमजदाए^७ दिले अपसुर्दए^८ देहक्रा^९ होना
 रौनक़े बजमे जवानाने गुलिस्तां होना
 बन के गेसू रखे हस्ती^{१०} पे बिखर जाता हूँ
 शानए^{११} मौजए सरसर^{१२} से संवर जाता हूँ ।
 दूर से दीदए^{१३} उम्मीद को तरसाता हूँ
 किसी बस्ती से जो खामोश गुज़र जाता हूँ
 सैर करता हुआ जिस दम लबे जू^{१४} आता हूँ
 बालियां नहर को गर्दाब^{१५} की पहनाता हूँ
 सज्जए मज़्रए नौखेज़^{१६} की उम्मीद हूँ मैं
 जादए बह^{१७} हूँ, पर्वुरदए खुर्शीद^{१८} हूँ मैं ।
 चश्मए कोह^{१९} को दी शोरिशे कुल्जुम^{२०} मैंने
 और परिन्दों को किया महवे तरन्नुम^{२१} मैंने
 सर पे सज्जा के खड़े होके कहा 'क्रुम'^{२२} मैंने
 गुन्चए गुल^{२३} को दिया जौक़े तबस्सुम^{२४} मैंने
 फ़ैज़^{२५} से मेरे नमूने हैं शबिस्तानों^{२६} के
 शोपड़े दामने कुहसार^{२७} में देहक्रानों के

१-तराई २-पर्वत-हरीत्मा ३-मुक्ताकर्पक ४-ऊंटनी ५-ईश्वरीय कृपा ६-हुदी
 गाने वाला । हुदी ऊंट वालों के गीत को कहते हैं ७-दुख दूर करने वाला ८-क्लिष्ट
 ९-किसान १०-संसार के मुख ११-कंधी १२-आंधी के थपेड़ों १३-आँख
 १४-नदी-तट पर १५-मँवर १६-खेत के छोटे पौदे १७-समुद्र जनित १८-सूर्य-
 पालित १९-गिरि-स्रोत २०-सागर की हलचल २१-संगीत-मग्न २२-'उठ' यह
 अरबी शब्द है, जिसके द्वारा हज़रत ईसा मसीह मुर्दों को जीवित कर देते थे २३-
 फल की कली २४-मुस्कान की रुचि २५-दान २६-शायन गृह २७-पर्वत की घाटी ।

बच्चे की दुआ (बालक की प्रार्थना)

लब पे आती है दुआ बन के तमन्ना मेरी
 जिन्दगी शमश्रु^१ की सूरत^२ हो खुदाया मेरी
 दूर दुनिया का मेरे दम से अंधेरा हो जाए
 हर जगह मेरे चमकने से उजाला हो जाए
 हो मेरे दम से यूं ही मेरे वतन की जीनत^३
 जिस तरह फूल से होती है चमन की जीनत
 जिन्दगी हो मेरी पर्वाने की सूरत यारब !
 इल्म की शमश्रु से हो मुझको मुहब्बत यारब
 हो मेरा काम गरीबों की हिमायत करना
 बर्दमन्दों^४ से जईफों^५ से मुहब्बत करना
 मेरे अल्लाह ! बुराई से बचाना मुझको
 नेक जो राह हो उस राह पे चलाना मुझको

परिन्दे की फरियाद (पक्षी का विलाप)

आता है याद मुझको गुजरा हुआ जमाना
 वह बारा की बहारें वह सब का चहचहाना
 आजादियां कहां वह अब अपने घोंसले की
 अपनी खुशी से आना अपनी खुशी से जाना
 लगती है चोट दिल पर आता है याद जिस दम
 शबनम^६ के आंसुओं पर कलियों का सुकुराना

वह प्यारी प्यारी सूरत वह कामिनी सी मूरत
आबाद जिसके दम से था मेरा आशियाना^१

आती नहीं सदाएं उसकी मेरे क़फ़स^२ में
होती मेरी रिहाई ऐ काश ! मेरे बस में
क्या बदनसीब हूँ मैं घर को तरस रहा हूँ
साथी तो हैं वतन में, मैं क़ैद में पड़ा हूँ
आई बहार, कलियाँ फूलों की हंस रही हैं
मैं इस अंधेरे घर में किस्मत को रो रहा हूँ

इस क़ैद का इलाही दुखड़ा किसे सुनाऊँ
डर है यहीं क़फ़स में मैं ग़म से मर न जाऊँ
जब से चमन छुटा है यह हाल हो गया है
दिल ग़म को खा रहा है ग़म दिल को खा रहा है
गाना इसे समझ कर खुश हों न सुनने वाले
दुखते हुए दिलों की फ़रियाद यह सदा है

आजाद मुझ को कर दे ओ ! क़ैद करने वाले
मैं बेजबां हूँ क़ैदी तू छोड़ कर दुआ ले

आफ़ताब

(सूर्य गायत्री का अनुवाद)

ऐ आफ़ताब ! रूहो रवाने जहाँ^३ है तू
शीराज़ा बन्दे^४ दफ़्तर^५ कौनो मका^६ है तू
बाएस^७ है तू वजूदो अदम^८ की नमूद^९ का
है सब्ज^{१०} तेरे दम से चमन हस्तो बूद^{११} का

१-घोंसला २-पिजरा ३-संसार का प्राण ४-प्रबन्धक ५-कार्यालय ६-संसार
७-कारण ८-अस्तित्व, अनस्तित्व ९-प्रदर्शन १०-हरा ११-अस्तित्व ।

क्राएम ये उन्सुरों^१ का तमाशा तुझी से है
हर शै^२ में जिन्दगी का तक्राजा तुझी से है
हर शै को तेरी जल्वागरी^३ से सबात^४ है
तेरा ये सोजोसाज^५ सरापा हयात^६ है
वह आफ़ताब जिस से ज़माने में नूर^७ है
दिल है, ख़िरद^८ है, रूहे रवां है, शुऊर^९ है
ऐ आफ़ताब ! हम को ज़ियाए शुऊर^९ दे
चश्मे ख़िरद^{१०} को अपनी तजल्ली से नूर दे
है महफ़िले वजूद का सामांतराज^{११} तू
यज़दाने^{१२} साकिनाने^{१३} नशेबो फ़राज^{१४} तू
तेरा कमाल हस्तीए हर जानदार में
तेरी नुमूद सिल्लिए कोहसार में
हर चीज़ की हयात^{१५} का पर्वरदगार तू
जाईदगाने नूर^{१६} का है ताजदार तू
ने इब्तिदा^{१७} कोई, न कोई इन्तिहा^{१८} तेरी
आज़ादे क़दे अव्वलो आख़िर ज़िया तेरी

एक आजूँ

(एक कामना)

दुनिया की महफ़िलों से उकता गया हूँ या रब !
क्या लुत्फ़ अंजुमन^{१०} का जब दिल ही बुझ गया हो
शोरिश^{११} से भागता हूँ दिल ढूँढ़ता है मेरा
ऐसा सुकूत^{१२} जिस पर तक्ररीर भी फ़िदा हो

-
- १-तत्वों २-वस्तु ३-प्रकाश-दान ४-स्थिरता ५-हर्ष-विषाद ६-जीवन
७-प्रकाश ८-बुद्धि ९-विवेक १०-बुद्धि-प्रकाश ११-जानचक्षु १२-प्रबन्धक
१३-पालनकर्ता १४-निवासी १५-ऊंच-नीच १६-जीवन १७-प्रकाशजनित,
चाँद-तारे १८-आदि १९-अंत २०-सभा २१-अशान्ति २२-मौनता ।

मरता हूँ खामुशी पर, यह आर्जू है मेरी
 दामन में कोह के इक छोटा सा झोंपड़ा हो
 आजाद फ़िक्र से हूँ, उरलत^१ में दिन गुज़ारूँ
 दुनिया के राम का दिल से कांटा निकल गया हो
 लफ़्ज़त सख़्द^२ की हो चिड़ियों के चहचहों में
 चश्मे^३ की शोरिशों में बाजा सा बज रहा हो
 गुल की कली चिटक कर पैग़ाम दे किसी का
 सागर^४ ज़रा सा गोया मुझको जहांनुमा^५ हो
 हो हाथ का सरहाना, सज्जा का हो बिछौना
 शर्माए जिस से जल्वत^६ खल्वत^७ में वो अदा हो
 मानूस^८ इस क्रदर हो सूरत से मेरी बुलबुल
 नन्हे से दिल में उसके खटका न कुछ मेरा हो
 सफ़^९ बांधे दोनों जानिब बूटे हरे हरे हों
 नदी का साफ़ पानी तस्वीर ले रहा हो
 हो दिलफ़रेब^{१०} ऐसा कुहसार का नज़ारा
 पानी भी मौज बन कर उठ-उठ के देखता हो
 आगोश^{११} में ज़मीं की सोया हुआ हो सज्जा
 फिर फिर के झाड़ियों में पानी चमक रहा हो
 पानी को छू रही हो झुक-झुक के गुल की टहनी
 जैसे हसीन कोई आईना देखता हो
 मेंहदी लगाए सूरज जब शाम की दुल्हन को
 सुर्खी लिए सुनहरी हर फूल की क़बा^{१२} हो
 रातों के चलने वाले रह जाएँ थक के जिस दम
 उम्मीद उन की, मेरा टूटा हुआ दिया हो

१-एकान्त २-संगीत ३-स्रोत ४-प्याला ५-संसार दर्शक ६-प्रकटस्थान
 ७-एकान्त ८-परिचित ९-पंक्ति १०-मनमोहक ११-गोद १२-वस्त्र ।

बिजली चमक के उन को कुटिया मेरी दिखा दे
जब आस्मां प हर सू,^१ बावल घिरा हुआ हो
पिछले पहर की कोइल, वह सुबह की मुवज्जिन^२
में उस का हमनवा^३ हूँ वह मेरी हमनवा हो
कानों पे हो न मेरे देरोहरम^४ का एहसां
रौजन^५ ही झोंपड़ी का मुझको सहरनुमा^६ हो
फूलों को आए जिस दम, शबनम बुजू कराने
रोना मेरा बुजू हो नाला^७ मेरी दुआ हो
इस खामुशी में जाएँ इतने बलन्द नाले
तारों के काफ़िले को मेरी सदा दिरा^८ हो

हर दर्द मन्द दिल को रोना मेरा रुला दे
बेहोश जो पड़े हैं शायद उन्हें जगा दे

माहे नौ (नव शशि)

टूट कर खुशीद^१ की कशती^२ हुई राक़बि^३ नील^४
एक टुकड़ा तैरता फिरता है रूए आबे^५ नील

तश्ते गर्दू^६ में टपकता है शफ़क़^७ का खूने नाब^८
नश्तरे^९ कुदरत ने क्या खोली है फ़स्दे^{१०} आफ़ताब

१-ओर, दिक् २-अजान देनेवाली ३-सहवाणी ४-मंदिर और मस्जिद
५-छिद्र ६-प्रभातदर्शक ७-विलाप ८-यात्रा आम्रभ का घंटा ९-सूर्य १०-नौका
११-जलमग्न १२-मिस्र देश की एक नदी १३-पानी के ऊपर १४-आकाश
की थाली १५-संध्या अरुणिमा १६-शुद्ध रक्त १७-शल्य अस्त्र १८-रग से
रक्त निकालना ।

चर्खे^१ ने बाली चुरा ली है उरूसे^२ शाम की
 नील के पानी में या मछली है सीमे खाम^३ की
 क्राफ़िला तेरा रवाँ^४ बे मिन्नते बांगे विरा^५
 गोशे^६ इन्सां सुन नहीं सकता तेरी आवाज़े पा^७
 घटने बढ़ने का समाँ^८ आँखों को दिखलाता है तू
 है बतन तेरा किधर ? किस देस को जाता है तू ?
 साथ ऐ सय्यार^९ साबित^{१०} नुमा^{११} ले चल मुझे
 खारे हसरत^{१२} की खलिश^{१३} रखती है अब बेकल मुझे
 नूर का तालिब^{१४} हूँ घबराता हूँ इस बस्ती में मैं
 तिरुलके^{१५} सीमाब पा^{१६} हूँ, मक्तबे हस्ती^{१७} में मैं

शायर

कवि

क्रौम गोया^{१८} जिस्म^{१९} है, अफ़रद^{२०} है आज्ञाए^{२१} क्रौम
 मंज़िले सन्मत्^{२२} के रह पैमा^{२३} है दस्तो पाए^{२४} क्रौम
 महफ़िले नरमे^{२५} हुकूमत, चेहरए ज़ेबाए^{२६} क्रौम
 शायरे रंगीनवा है, दीदए बीनाए^{२७} क्रौम
 मुन्तलाए दर्द^{२८} कोई उदव^{२९} हो रोती है आँख
 किस क़दर हमदर्द सारे जिस्म की होती है आँख

-
- १-आकाश २-वधू ३-कच्ची चांदी ४-गतिशील ५-घंटे की ध्वनि का एहसान
 उठाए बिना ६-कान ७-पदध्वनि ८-दृश्य ९-चल-नक्षत्र १०-स्थिर
 ११-दिखाई देने वाला १२-अपूर्ति का कांटा १३-पीड़ा १४-इच्छुक
 १५-बालक १६-अस्थिर पग वाला १७-संसार पाठशाला १८-मानो
 १९-शरीर २०-व्यक्तिगण २१-अंग २२-उद्योग २३-पथिक २४-हाथ पाँव
 २५-प्रबन्ध २६-शोभित, सुन्दर २७-दिव्य दर्शक नेत्र २८-पीड़ित २९-अंग ।

मौजे दरिया (सरिता ऊर्मि)

मस्तुरिब^१ रखता है मेरा दिले बेताब^२ मुझे
 ऐन हस्ती^३ है तड़प सूरते सीमाब^४ मुझे
 मौज^५ है नाम मेरा, बह^६ है पायाब^७ मुझे
 हो न जंजीर कभी हल्कए गर्दाब^८ मुझे
 आब^९ में मिस्ले हवा जाता है तौसन^{१०} मेरा
 खारे माही^{११} से न अटका कभी दामन मेरा
 मैं उछलती हूँ कभी जड़े में क.मिल^{१२} से
 जोश में सर को पटकती हूँ कभी सहिल^{१३} से
 हूँ वो रहरो^{१४} कि मुहब्बत है मुझे मंजिल से
 क्यों तड़पती हूँ यह पूछे कोई मेरे दिल से
 जहमते तंगिए दरिया से गुरेजा^{१५} हूँ मैं
 वुसुअते^{१६} बह की फुर्कत में परीशां हूँ मैं

रुखसत ऐ बज्मे जहां !

रुखसत ऐ बज्मे जहां ! सूए^{१७} वतन जाता हूँ मैं ।
 आह ! इस आबाद बीराने में घबराता हूँ मैं
 बस कि मैं अफ़सुर्दा^{१८} बिल हूँ दर खुरे^{१९} महफ़िले नहीं
 तू मेरे क़ाबिल नहीं है मैं तेरे क़ाबिल नहीं

१-विकल २-बेचैन ३-पूर्ण जीवन ४-पारे के समान ५-तरंग ६-सागर
 ७-पाँव से पार करने योग्य ८-भँवर का चक्कर ९-जल १०-घोड़ा ११-मछली
 के काँटा १२-पूर्णिमा के चाँद के आकर्षण १३-तट १४-पथिक १५-भागने
 वाली १६-सागर की विशालता १७-और १८-मलीन १९-योग्य ।

क्रंद है दबरे सुल्तानो,^१ शबिस्ताने^२ वजीर ।
 तोड़ कर निकले गा जन्जीरे तिलाई^३ का असीर
 गो^४ बड़ी लज्जत तेरी हंगामा आराई में है ।
 अज्जन्बीयत सी मगर तेरी शनासाई^५ में है
 मुद्दतों तेरे खुद आराओं^६ से हम सुहबत^७ रहा ।
 मुद्दतों बेताब मौजेबह^८ की सूरत रहा
 मुद्दतों बंठा तेरे हंगामे इश्त^९ में मैं ।
 रोशनी की जुस्तजू करता रहा जुल्मत^{१०} में मैं
 मुद्दतों ढूँढ़ा किया नज्जारए^{११} गुल खार में
 आह ! वह यूसुफ़ न हाथ आया तेरे बाज़ार में
 चश्मे हैरा^{१२} ढूँढ़ती अब और नज्जारे को है
 आर्जू साहिल की मुझ तूफ़ान के मारे को है

छोड़ कर मानिन्दे^{१३} बू तेरा चमन जाता हूँ मैं
 रुखसत ऐ बरमे जहाँ सूप वतन जाता हूँ मैं
 घर बनाया है सुकूते^{१४} दामने कुहसार में ।
 आह यह लज्जत कहाँ मौसीक़िए गुफ़्तार^{१५} में
 हमनशीने^{१६} नर्ग़िसे शहला,^{१७} रफ़ीक़े^{१८} गुल हूँ मैं
 है चमन मेरा वतन, हमसायए बुलबुल हूँ मैं
 शाम को आवाज़ चश्मों की सुलाती है मुझे
 सुबह फ़र्शें सब्ज से कोयल जगाती है मुझे

बरमे हस्ती में है सब को महफ़िल आराई^{१९} पसंद
 है दिले शाएर को लेकिन कुंजे तनहाई^{२०} पसंद

१-सम्राट् २-शयनकक्ष ३-सुनहरी ४-यद्यपि ५-परिचय ६-अपने
 को संवारने वाले ७-सहवासी ८-विलास ९-अन्धकार १०-दृश्य
 ११-विस्मित आँख १२-समान १३-एकान्त १४-कथन-संगीत १५-साथी
 १६-नर्ग़िस के फूल के समान लाल डोरे वाली काली आँख १७-मित्र
 १८-सभा सजाना १९-एकांत स्थान ।

है जुनूँ^१ मुझ को कि घबरातः हूँ आबादी में मैं
 ढुंढता फिरता हूँ किसको कोह की वादी में मैं
 शौक किस का सब्जा ज़ारों में फिरता है मुझे
 और चशमों के किनारों पर सुलाता है मुझे
 ताना जन^२ है तू कि शंदा कुंजे उज्जलत का हूँ मैं
 देख ऐ गाफ़िल पयामी^३ बरूमे क़ुदरत का हूँ मैं
 हमवतन शम्शाद^४ का, कुन्नी^५ का मैं हमराज^६ हूँ
 इस चमन की ख़ामुशी में गोश बर आवाज^७ हूँ
 कुछ जो सुनता हूँ तो औरों को सुनाने के लिए
 देखता हूँ कुछ तो औरों को दिखाने के लिए
 आशिके उज्जलत है दिल, नाज़ाँ^८ हूँ अपने घर पे मैं
 ख़न्दाज़न^९ हूँ मस्नदे वारा व अस्कन्दर पे मैं
 लेटना ज़ेरे शज़र रखता है जादू क अतर
 शाम के तारे पे जब पड़ती है रह रह कर नज़र

इल्म के हैरत-उदे^{१०} में है कहाँ इस की नमद^{११}

गुल की पत्ती में नज़र आता है राज़े^{१२} हस्तोबूद^{१३}

(एमसन)

जुगनू

स्वर्ण कीट

जुगनू की रोशनी है काशानए चमन में
 या शम्भ्र जल रही है फूलों की अंजुमन में
 आया है आस्मां से उड़ कर कोई सितार।
 या जान पड़ गई है महताब की किरन में

१-पागलपन २-व्यंग करने वाला ३-संदेश दाता ४-एक सुन्दर वृक्ष ५-एक पक्षी ६-मित्र ७-ध्वनि पर कान लगाए हुए ८-गावित ९-हंसने वाला १०-आश्चर्य गृह ११-दर्शन १२-रहस्य १३-अस्तित्व ।

या शब की सलतनत में दिन का सफ़ीर^१ आया
 गुर्बत^२ में आ के चमका, गुमनाम था बतन में
 तुक्मा कोई गिरा है महताब की क़बा का
 ज़र्ज़ा है या नुमायां सूरज के पंरहन^३ में
 हुस्ने कदीम^४ की यह पोशीदा इक झलक थी
 ले आई जिसको क़ुदरत ख़तवत से अंजुमन में
 छोटे से चाँद में है जुल्मत भी रोशनी भी
 निकला कभी गहन से आया कभी गहन में

पर्वाना इक पतंगा, जुगनू भी इक पतंगा
 वह रोशनी का तालिब,^५ यह रोशनी सरापा

हर चीज़ को जहाँ में क़ुदरत ने दिलबरी^६ दी
 पर्वाना को तपिश दी जुगनू को रोशनी दी
 रंगीनवा बनाया मुग़नि बे ज़बां^७ को
 गुल को ज़बान दे कर तालीमे ख़ामुशी दी
 नज़ज़ारए शफ़क़ की ख़ूबी ज़वाल^८ में थी
 चमका के उस परी को थोड़ी सी ज़िन्दगी दी
 रंगीं किया सहर को बांकी दुलहन की सूरत
 पहना के लाल जोड़ा शबनम की आरसी दी
 साया दिया शजर को, पर्वाज दी हवा को
 पानी को दी रबानी, मौजों को बेकली दी

यह इम्तियाज़^९ लेकिन इक बात है हमारी
 जुगनू का दिन वही है जो रात है हमारी

हुस्ने अज़ल की पैदा हर चीज़ में झलक है
 इत्सा में वह सुखन है, गुंचे में वह चटक है

१-राजदूत २-परदेश ३-वस्त्र ४-आदि सौन्दर्य ५-इच्छुक ६-मनोआकर्षण
 ७-पक्षीगण ८-अवनति ९-विभेद ।

यह चांद आसमां का, शाएर का बिल है गोया
वां चांदनी है जो कुछ यां दर्द की कसक है
अन्दाजे गुफ्तुगू ने धोके दिए हैं वर्ना
नयमा है बए बुलबुल, बू फूल की चहक है
कसरत^१ में हो गया है बहद^२ का राज मल्लकी^३
जुगनू में जो चमक है वह फूल में महक है

यह इलितलाफ़^४ फिर क्यों, हंगामों का महल^५ हो ?
हर शं में जब कि पिनहाँ खामोशिए अजल हो

सुबह का सितारा

(प्रभात-तारा)

तुफ़े हमसाएगिए^१ शम्सोकमर को छोड़ूँ
और इस खिदमते पेशामे सहर को छोड़ूँ

मेरे हक में तो नहीं तारों की बस्ती अच्छी
इस बलन्दी से ज़मीं वालों की^२ पस्ती^३ अच्छी

आस्मां क्या अदम आबाद^४ वतन है मेरा
सुबह का दामने सब चाक कफ़न है मेरा

मेरी क्रिस्मत में है हर रोज़ का मरना जीना
साक्रिएमौत^५ के हाथों से सुबही^६ पीना

न ये खिदमत न ये इज्जत न ये रिफ़अत अच्छी
इस घड़ी भर के चमकने से तो जुल्मत अच्छी

१-अनेकता २-एकता ३-निहित ४-विभिन्नता ५-अवसर ६-पड़ोस

७-मृत्युलोक ८-यमदूत ९-प्रभात समय की मदिरा ।

मेरी क्रुदरत^१ में जो होता तो न अस्तुर^२ बनता
 क़ारे^३ दरिया में चमकता हुवा गौहर^४ बनता
 बां भी मौजों की कशाकश से जो दिल धबराता
 छोड़ कर बह कहीं, जेरे गुलू^५ हो जात

है चमकने में मज़ा हुस्न का ज़ेवर बन कर
 जीनते ताजे सरे बानूए क़ैसर^६ बन कर
 एक पत्थर के जो टुकड़े का नसीबा जागा
 खातमे दस्ते सुलेमां का नगी^७ बन के रहा

ऐसी चीजों का मगर वह^८ में है काम शिकस्त^९
 है गुहरहाए गिरांमाया^{१०} का अंजाम शिकस्त
 जिन्दगी वह है कि जो हो न शनासाए अजल^{११}
 क्या वह जीना है कि हो जिस में तक्राजाए अजल

है यह अंजाम अगर जीनते आलम होकर
 क्यों न गिर जाऊँ किसी फूल पे शन्नम होकर
 किसी पेशानी के अफ़शां के सितारों में रहूँ
 किसी मज़लूम की आहों के शरारों में रहूँ

अश्क बन कर सरे मिज़ां^{१२} से अटक जाऊँ मैं
 क्यों न उस बीबी की आँखों से टपक जाऊँ मैं
 जस का शौहर हो रवां^{१३} हो के ज़िरह^{१४} में मस्तूर^{१५}
 सूर मैदाने बरा^{१६} हुब्रे वतन^{१७} से मजबूर

यासो^{१८} उम्मीद का नज़्जारा जो दिखल ती हो
 जिसकी खामोशी से तक्ररीर भी शर्माती हो

१-शक्ति २-तारा ३-गहराई ४-मोती ५-ग्रीवा-शोभा ६-किसी रानी के मुकुट की शोभा ७-सुलेमान पैगम्बर की अँगूठी का नगीना ८-संसार ९-टूटना १०-बहुमूल्य मोती ११-मृत्यु १२-पलक की नोक १३-कवच १४-छिपा हुआ १५-रणक्षेत्र १६-देशानुराग १७-नैराश्य ।

जिस को शीहर की रजा^१ ताबे शकेबाई^२ दे
और निगाहों को हया ताकते गोयाई^३ दे

जर्द, रुसत की घड़ी आरिजे गुलगूं^४ हो जाए
कशिशे^५ हुस्ने रामे हिज्र से अप्रजूं^६ हो जाए

लाख वह जन्त^७ करे पर में टपक ही जाऊँ
सागरे दीदए पुर्नम^८ से छलक ही जाऊँ

खाक में मिल के हयाते अबदी^९ पा जाऊँ
इश्क का सोज जमाने को दिखाता जाऊँ

—:०:—

रावी-तट

मुकूते^{१०} शाम में महवे^{११} सुरूद^{१२} है रावी
न पूछ मुझसे जो है कैफ़ियत मेरे दिल की

पयामे सज्दा का यह जीरो बम,^{१३} हुआ मुझको
जहाँ तमाम सवादे हरम^{१४} हुआ मुझको

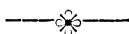
सरे किनारए आगे रवां^{१५} खड़ा हूँ मैं
खबर नहीं मुझे लेकिन कहाँ खड़ा हूँ मैं

शराबे सुर्ख से रंगीं हुआ है दामने शाम
लिए हुए है फ़लक दस्ते राशा दार^{१६} मे जाम

अबम^{१७} को काफ़िलए रोज़े तेजगाम^{१८} चला,
शक्रक नहीं है यह सूरज के फूल है गोया

१-इच्छा २-धैर्य शक्ति ३-वाक् शक्ति ४-पुष्प के समान गाल ५-आकर्षण
६-अधिक ७-सहन ८-अश्रुयुक्त नेत्र का प्याला ९-अनन्त जीवन
१०-मौनता ११-मान १२-संगीत १३-उतार-चढ़ाव १४-काबा का क्षेत्र
१५-बहता पानी १६-काँपते हाथों १७-प्रलय १८-तीव्र गामी दिन ।

खड़े हैं दूर वो अजमत फ़जाएँ^१ तनहाई
 मुनारे खाब गहे शहसवारे चुगताई
 फ़सानए सितमे इन्किलाब है यह महल
 कोई जमाने सलफ़^२ की किताब है ये महल
 मुक़ाम क्या है सुरूदे ख़मोश^३ है गोया
 शजर,^४ ये अंजुमने बें ख़रोश^५ है गोया
 रवाँ है सीनए दर्या पे इक सफ़ीनए^६ तेज,
 हुआ है मौज^७ से मल्लाह जिस का गर्म सतेज^८
 सुबुक रवी^९ में है मिस्ले निगाह यह कश्ती
 निकल के हलक़ए हड़े नज़र^{१०} से दूर गई
 जहाजे ज़िंदगिए आवमी रवाँ है यों ही
 इदद^{११} के ढ़ह में दंदा^{१२} यों ी, निहां^{१३} है यों ही
 शिकस्त^{१४} से ये कभी आशना^{१५} नहीं होता
 नज़र से छिपता है लेकिन फ़ना^{१६} नहीं होता



इस्लाम

मुहब्बत का जुनूँ बाक़ी नहीं है ।
 मुसलमानों में खूँ बाक़ी नहीं है ॥
 सफ़े^{१७} कज,^{१८} दिल परीशाँ, सिज्दा बे ज़ौक़ ।
 कि ज़वे^{१९} अन्दरूँ बाक़ी नहीं है ॥
 रगों में वह लुहूँ बाक़ी नहीं है ।
 वह दिल वह आज़ूँ बाक़ी नहीं है ॥

१-महात्म्य वर्द्धक २-बीते हुए ३-मूक संगीत ४-वृक्ष ५-उत्साहहीन सभा
 ६-नौका ७-लहर ८-युद्धरत ९-तीव्र गति १०-दृष्टि सीमा के क्षेत्र
 ११-स्थायित्व १२-प्रकट १३-अप्रकट १४-टूटना १५-परिचित १६-निरस्तित्व
 १७-नमाज़ की पंक्तियाँ १८-टेढ़ी १९-आन्तरिक उद्वेग

नमाजोरोजा ओ क़ुर्बानी ओ हज ।

यह सब बाक़ी है, तू बाक़ी नहीं है ॥

तेरे शीशे^१ में मय^२ बाक़ी नहीं है ।

बता क्या तू मेरा साक़ी नहीं है ?

समुन्दर से मिले प्यासे को शबनम^३

बख़ीली^४ है यह रज्जाक़ी^५ नहीं है ।



आत्म-ज्ञान

आशना अपनी हकीकत से हो ऐ बहकां^६ ज़रा ।

बाना तू, खेती भी तू, बारां^७ भी तू, हासिल^८ भी तू ॥

आह किसकी जुस्तजू^९ आबारा रखती है तुझे ।

राह तू, रहरौ भी तू, रहबर भी तू, मंजिल भी तू ॥

कांपता है बिल तेरा अन्देशये तूफ़ां से क्या ।

ना खुदा^{१०} तू, बह^{११} तू, कश्ती भी तू, साहिल^{१२} भी तू ॥

देख आकर कूचये^{१३} चाके गरेबां में कभी ।

क्रंस^{१४} तू, लैला भी तू, सहरा भी तू, महिल^{१५} भी तू ॥

बाय नाबानी कि तू मुहताजे साक़ी हो गया ।

मय भी तू, मीना^{१६} भी तू, साक़ी भी तू, महफ़िल भी तू ॥

शोला बन कर फूंक दे, खाशाके^{१७} ग़ैरल्लाह^{१८} को ।

खौफ़े बातिल^{१९} क्या कि है ग़ारतगरे^{२०} बातिल भी तू ॥

१-मदिरा की सुराही २-मदिरा ३-ओस ४-कृपणता ५-दानशीलता
 ६-किसान ७-वर्षा ८-पैदावार ९-खोज १०-नाविक ११-समुद्र १२-तट
 १३-गली १४-मजनू का नाम १५-ऊँट पर औरतों की सवारी के लिए पर्दादार
 जगह १६-मदिरा की सुराही १७-घासफूस १८-ईश्वर के अतिरिक्त १९-
 असत्य २०-नाश करने वाला ।

तू ही नादां चन्द कलियों पर क्रनाश्रत^१ कर गया ।

वर्ना गुलशन में इलाज तंगिये दामां भी है ॥

जनतंत्रवाद

इस राज को इक भई फ़रंगी ने किया फ़ाश^२ ।

हरचन्द कि दाना^३ इसे खोला नहीं करते ॥

जम्हूरियत^४ इक तर्जें हुकूमत^५ है कि जिसमें ।

बन्दो^६ को गिना करते हैं तोला नहीं करते ॥

मुहब्बत

(प्रेम)

उरुसे शब^७ की जुलफ़ें थीं अभी ना आशना^८ ख़म से^९

सितारे आस्मां के बे ख़बर थे लज्जते रम^{१०} से ।

क्रमर^{११} अपने लिबासे नौ^{१२} में बेगाना सा लगता था

न था वाकिफ़ अभी गदिश के आईने मुसल्लम^{१३} से ।

अभी इस्का^{१४} के जुल्मत ख़ाने^{१५} से उभरी ही थी दुनिया

मज़ाक़े ज़िन्दगी^{१६} पोशीदा था पहनाए आलम^{१७} से ।

कमाले नज़्मे हस्ती^{१८} की अभी थी इब्तिदा^{१९} गोया

हुवैदा^{२०} थी नगीने की तमन्ना चश्मे ख़ातम^{२१} से ।

सुना था आलमे बाला^{२२} में कोई कीमियागर^{२३} था

सफ़ा^{२४} थी जिसकी ख़ाकेपा^{२५} में बढ़कर सागरेजम^{२६} से ।

१-संतुष्टि २-प्रकट ३-चतुर ४-लोकतंत्र ५-शासनपद्धति ६-मनुष्यों
७-रजनी वधु ८-अज्ञात ९-बंकिमता १०-दौड़ भाग ११-चन्द्रमा १२-
नवीन १३-सर्वमान्यनियम १४-ब्रह्माण्ड १५-तिमिरालय १६-जीवन-अभिर्भूति
१७-संसार का विस्तार १८-जीवन व्यवस्था की पूर्णता १९-आरंभ २०-
प्रकट २१-अंगूठी की आँख २२-देव-लोक २३-रासायनिक २४-निर्मलता
२५-पदधूलि २६-फ़ारस के सम्राट जमशेद का पानपात्र ।

लिखा था अंश^१ के पाए पे इक अक्सीर^२ का नुस्खा
छिपाते थे फ़रिश्ते जिस को चश्मे रूहे आदम से ।

निगाहें ताक में रहती थीं लेकिन कीमियागर को
वह इस नुस्खे को बढ़कर जानता था इस्मे आजम^३ से ।

बड़ा तस्बीह खानी^४ के बहाने अंश की जानिब,
तमन्नाए दिली आखिर बर आई सइये पैहम^५ से ।

फिराया फ़िक्के अजजा^६ ने उसे मैदाने इम्कां^७ में
छिपेगी क्या कोई शय^८ बारगाहे हक^९ के महरम^{१०} से ।

चमक तारे से मांगी, चाँद से दागे जिगर मांगा
उड़ाई तीरगी^{११} थोड़ी सी, शब की जुल्फ़े बरहम^{१२} से ।

तड़प बिजली से पाई, हूर^{१३} से पाकीजगी पाई
हरारत ली नफ़सहाए मसीहे इब्ने मरियम^{१४} से ।

जरा सी फिर रूबूबीयत^{१५} से शाने बेनियाजी^{१६} ली
मलक^{१७} से आजिजी,^{१८} उफ़तादगी तक्दीरे शबनमसे^{१९} ।

फिर इन अजजा को घोला चश्मे हैवां^{२०} के पानी में
मुरक्कब^{२१} ने मुहब्बत नाम पाया अंशों आजम^{२२} से ।

मुहब्बिस^{२३} ने ये पानी हस्तीए नौखेज^{२४} पर छिड़का
गिरह खोली हुनर ने उसके गोया कारे^{२५} आलम से ।

१-परमेश्वर सिंहासन २-रसायन ३-महामंत्र ४-ईश-वन्दना ५-निरंतर प्रयास
६-अंशों की प्राप्ति की चिन्ता ७-ब्रह्माण्ड ८-वस्तु ९-परमेश्वर-सभा
१०-रहस्य-ज्ञाता ११-कालिमा १२-रजनी के बिखरे केश १३-अप्सरा १४-ईसा
पैगम्बर की फूँकों से ताप लिया १५-ईश्वर की पालनक्रिया शक्ति १६-बे परवाही
१७-फ़रिश्ते १८-विनय १९-अस का भाग्य २०-अमृत-स्रोत २१-सम्मि-
श्रित, (रसायन) २२-महासिंहासन २३-रासायनिक २४-नव जन्मित जीवन
२५-जग के कार्य ।

हुई जुबिश अयाँ,^१ जरीं ने लुटे खाब^२ को छोड़ा
गले मिलने लो उ५ उठ के अपने अपने हमदम^३ से ।

खरामेनाज^४ पाया आफ़ताबों^५ ने सितारों ने
चटक गुँचों ने पाई, बाग़ पाए लालाजारों^६ ने ।



हकीकते हुस्न

(जर्मन भाषा से अनुवादित)

ख़दा से 'हुस्न ने इक रोज़ यह सब ल किया;
जहाँ में क्यों न मुझे तूने लाजवाल^७ किया
मिला जवाब कि तस्वीरखाना^८ है दुनिया
शब्रे दराजे अदम^९ का फ़साना है दुनिया
हुई है रों तग़य्युर^{१०} से जब नुबूद^{११} इसकी
वही हसीं है हकीकत^{१२} जवाल^{१३} है जिसकी
कहीं करीब था ये गुप्तगु क़मर^{१४} ने सुनी
फ़लक^{१५} पे ग्राम हुई, अस्तरे सहर^{१६} ने सुनी
सहर ने तारे से सुन कर सुनाई शबनम को
फ़लक की बात बता दी ज़मी के महरम^{१७} को
भर आये फूल के आँसू पयामे शबनम से
कली का नन्हा सा दिल खून हो गया राम से
चमन से रोता हुआ मौसमे बहार गया
शबाब^{१८} सैर को आया था, सोगवार^{१९} गया

१-प्रकट २-निद्रा-सुख ३-सखा-संगी ४-हावपूर्ण विचरण ५-सूर्यो ६-पुष्प
बाटिकाओं ७-अमर ८-चित्रशाला ९-मृत्यु की दीर्घ रात्रि १०-परिवर्तन
११-उत्पत्ति १२-वास्तविकता १३-विनाश १४-चन्द्रमा १५-गगन
१६-प्रभात नक्षत्र १७-रहस्य ज्ञाता १८-यौवन १९-शोकाकुल ।

आशिके हर्जई

है अजब मज्मअर अजदाद^१ ऐ 'इकबाल' तू
रौनकें हंगामर महकिल भी है तनहा भी है

तेरे हंगामों से ऐ दीवानर रंगीं नव !

जीनते^२ गुल्शन भी है आराइशें^३ सहरा भी है

हम नशीं तारों का है तू रिफ्रमे पेर्वाज^४ से
ऐ जमीं फर्शी ! कदम तेरा फलक^५ मां भी है

ऐन शुलेमय^६ में पेशानी है तेरी सज्दा रेज^७

कु^८ तेरे मस्लक^९ में रों मशरे मोना^{१०} भी है

मिस्ले बूए गुल लिबासे^{११} रंग से उरियां^{१२} है तू
है तो हिक्मत आफरीं^{१३} लेकिन तुझे सौदा^{१४} भी है ?

जानिदे मंजिल रव^{१५} ये नक्शे पा^{१६} मानिन्दे मौज

और फिर उपतादा^{१७} मिस्ले साहिजे दरिया भी है

हुस्ने निस्वानी^{१८} है बिजली तेरी फितरत के लिए

फिर अजब ये है कि तेरा इश्क^{१९} ये पर्वा भी है

तेरी हस्ती का है आईने तफ़सुन^{२०} पर मदार^{२१}

तू कभी इक आस्ताने^{२२} पर जबीं फर्शी^{२३} भी है ?

है हसीनों में 'वफ़ा ना आश्ना' तेरा खिताब^{२४}

ऐ तलव्वुन केश^{२५} ! तू मशहर भी रुस्वा^{२६} भी है

१-विभिन्नता का संग्रह २-शोभा ३-शृंगार ४-उड़ान की ऊँचाई ५-पृथ्वी

पर्यटन ६-आकाशमापक ७-ठीक शराब पीते समय ८-झुकी हुई ९-पंथ

१०-मदिरा की सुराही का स्वभाव ११-वस्त्र १२-नग्न १३-युक्तिजनक, ज्ञानी

१४-पागलपन १५-बिना पदचिह्न के १६-पड़ा हुआ १७-स्त्री सौन्दर्य

१८-मन बहलाव का नियम १९-आधार २०-चौखट २१-माथा रगड़ने वाला

२२-उपनाम २३-विभिन्नता प्रिय २४-बदनाम

ले के आया है जहाँ में आदते सीमाब^१ तू
तेरी बेताबी के सदक्के, है अजब बेताब तू

(२)

इश्क की आशुपतगी^२ ने कर दिया सहारा जिसे
मुश्ते खाक ऐसी निहाँ^३ जेरे कबा^४ रखता हूँ में

हैं हजारों इसके पहलू, रंग हर पहलू का और
सीने में हीरा कोई तराश हुवा रखता हूँ में
दिल नहीं शायर का, है कैफ़ीयतों^५ की रुस्तखेज^६
क्या खबर तुझको दुरूने सीना^७ क्या रखता हूँ में

आजू हर कैफ़ियत में इक नए जल्वे की है
मुज्तरिब^८ हूँ दिल सुकूं ना आशना रखता हूँ में

गो^९ हसीने ताजा^{१०} है हर लहजा^{११} मकसूदे नजर^{१२}

हुस्न से मजबूत पैमाने^{१३} वफ़ा रखता हूँ में

बे नियाजी^{१४} से है पैदा मेरी फ़ितरत^{१५} का नियाज^{१६}

सोजोसाजे जुस्तजू^{१७} मिस्ले सबा^{१८} रखता हूँ में

मूजिबे तस्कीं तमाशाए शरारे जस्ता ए^{१९}

हो नहीं सकता, कि दिल बर्क़आशना^{२०} रखता हूँ में

हर तकाजा इश्क की फ़ितरत का हो जिससे खमोश

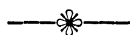
आह ! वह कामिलतजल्ली^{२१} मुद्आ^{२२} रखता हूँ में

जुस्तजू^{२३} ; ल^{२४} की लिए फिरती है अज्जा^{२५} में मुझे

हुस्न पायां^{२६} है दर्दे ला दवा रखता हूँ में

१-पारा २-अस्तव्यस्तता ३-निहिंन ४-वस्त्र के नीचे ५-भावों ६-उथल-पुथल
७-हृदय के भीतर ८-परीशान ९-यद्यपि १०-नवीन ११-क्षण १२-आँखों
का उद्देश्य १३-प्रतिज्ञा १४-बेपर्वाई, संतुष्टि १५-प्रकृति १६-आवश्यकता
१७-हर्षविषाद की जिज्ञासा १८-वर्गंत-समीर १९-उड़ती हुई चिंगारियों का
दृश्य मेरे लिए शांति का कारण २०-विजली के समान तड़पने वाला २१-पूर्ण
आलोक २२-उद्देश्य २३-जिज्ञासा २४-संपूर्ण २५-अंशों २६-रसाम ।

जिन्दगी उलफ़त की बंद अंजामियों से है मेरी
 इशक़ को आज़ादे दस्तूरे^१ बफ़ा रखता हूँ मैं
 सच अगर पूछो तो अफ़लासे तख़य्युल^२ है बफ़ा
 दिल में हर बस इक नया महशर^३ बपा^४ रखता हूँ मैं
 फ़ैजे साक़ी^५ शब्नम आसा^६, ज़फ़े दिल दरिया तलब^७
 तिशनएदायम^८ हूँ, आतिश^९ ज़ेरे पा^{१०} रखता हूँ मैं
 मुझ को पैदा कर के अपना नुक्ताचौं^{११} पैदा किया
 नक्श^{१२} हूँ, अपने मुसब्विर^{१३} से गिला^{१४} रखता हूँ मैं
 महफ़िले हस्ती में जब ऐसा तुनुक जल्वा^{१५} था हुस्न
 फिर तख़य्युल^{१६} किस लिए ला इन्तिहा^{१७} रखता हूँ मैं
 दरबियाबाने तलब पैवस्ता मी कोशेम मा^{१८}
 मौजे बहरेमो शिकस्तेखेश बर दोशेम मा^{१९}



नवाए ग़म

(शोकालाप)

जिन्दगानी है मेरी मिस्ले रबाबे^{२०} ख़ामोश
 जिसकी हर रंग के नग़मों^{२१} से है लबज़े^{२२} आगोश^{२३}
 बर्बते कौनो मकां^{२४} जिसकी ख़मोशी पे निसार^{२५}
 जिसके हर तार में हैं सैंकड़ों नग़मों के मज़ार

१-नियम २-कल्पना की निर्धनता ३-प्रलय ४-उत्पन्न ५-साक़ी की दान-
 शीलता ६-ओस के समान है ७-हृदय-पात्र सागर का इच्छुक है ८-सदा से तृषित
 ९-आग १०-पैरों के नीचे ११-छिद्रान्वेषी १२-चित्र १३-चित्रकार
 १४-शिकायत १५-क्षणिक प्रकाश वाला १६-कल्पना १७-असीम १८-हम
 जिज्ञासा के बन में निरंतर प्रयत्न करते रहते हैं १९-हम सागर की लहर
 हैं और अपने बिगाड़ का सामान स्वयं अपने कन्धों पर लिए फिरते हैं २०-बीणा
 २१-संगति २२-परिपूर्ण २३-गोद २४-संसार बीणा २५-निछावर ।

महशरिस्ताने नवा^१ का है अमी^२ जिस का सुकूत^३
और मिन्नत कशे^४ हंगाम नहीं जिस का सुकूत

आह उम्मीद मुहब्बत की बर आई^५ न कभी
चोट मिजराब^६ की इस साज^७ ने खाई न कभी

मगर आती है नसीमे^८ चमने तूर^९ कभी
सन्ते गर्दू^{१०} से हवाए नफ़से^{११} हर कभी

छेड़ आहिस्ता से देती है मेरा तारे हयात^{१२}
जिससे होती है रिहा^{१३} रूहे गिरफ्तारे हयात

नमए यास^{१४} की धीमी सी सदा^{१५} उठती है
अशक^{१६} के काफ़िले को बागों विरा उठती है

जिस तरह रिफ़अते शन्नम^{१७} है मज्जाके रम^{१८} से
मेरी फ़ितरत की बलन्दी है नवाए गम से ।

—००—

तन्हाई

(एकांत)

तन्हाइए शब^{१९} में है हजी^{२०} क्या अन्जुम^{२१} नहीं तेरे हम नशी^{२२} क्या
यह रिफ़अते^{२३} आत्माने खामोश खाबीदा^{२४} जमीं, जहाने खामोश

१-वणिक प्रलय स्थान २-धरोहर रक्षक ३-मौनता ४-आभारी, मुहताज
५-पूर्ण हुई ६-सितार बजाने का यंत्र ७-वाद्य ८-प्रभात समीर ९-तूर पर्वत
१०-आकाश की ओर ११-अप्सरा की सांस १२-जीवन-तंत्री १३-स्वतंत्र
१४-निराशा १५-स्वर १६-आँसू १७-ओस का महत्व १८-भागने का स्वभाव
१९-रात २०-उदास २१-तारे २२-साथी २३-ऊँचाई २४-निद्रामग्न ।

यह चाँद, यह दस्तोदर^१ ये कुहसार^२ फ़ितरत^३ है तमाम नस्तरन^४ जार
मोती खुश रंग प्यारे प्यारे यानी तेरे आँसुओं के तारे
किस शै^५ की तुझे हवस^६ है ऐ बिल !
क्रुबरत तेरी हम नफ़स^७ है ऐ बिल !

पयामे इश्क़

(प्रेम-सन्देश)

सुन ऐ तलबगारे^८ बरें पहलू ! मैं नाज़ हूँ तू नियाज़^९ होजा
मैं ग़ज़नवी सोमनाथे बिल का हूँ, तू सरापा अयाज़ हो जा
नहीं है वाबस्ता^{१०} ज़ेरे गर्दू^{११} कमाल शाने सिकन्दरी से
तमाम सामां है तेरे सीने में तू भी आईना साज़^{१२} हो जा
गरज़ है पैकारे ज़िन्दगी^{१३} से, कमाल^{१४} पाए हिलाल^{१५} तेरा
जहाँ का फ़र्ज़ क़दीम^{१६} है तू, अवा मिसाले नमाज़ हो जा
न हो क़नाअतशआरे^{१७} गुलचीं, इसी से क़ायम है शान तेरी
वफ़ूरे गुल^{१८} है अगर चमन में, तू और वामन बराज़ होजा
गए वो अय्याम, अब ज़माना नहीं है सहरा नवदियों^{१९} का
जहाँ में मानिन्दे शम्ए सोज़ां^{२०} मियाने महफ़िल^{२१} गुबाज़^{२२} होजा
वजूब अफ़ाद^{२३} का मजाज़ी^{२४} है, हस्तिए क़ौम है हक़ीक़ी
फ़िवा हो मिल्लत^{२५} पे, यानी आतशज़ने तिलिस्मे मजाज़^{२६} होजा
ये हिन्द के फ़िर्का साज़ 'इक़बाल' आज़री^{२७} कर रहे हैं गोया
बचा के वामन बुतों से अपना, गुबारे राहे हिजाज़^{२८} हो जा

१-बन और घाटी २-पर्वत ३-प्रकृति ४-वह स्थान जहाँ सेवती के फूल उगते हैं
५-वस्तु ६-इच्छा ७-सहचर ८-याचक, इच्छक ९-श्रद्धा, प्रेम १०-निर्भर
११-आकाश के नीचे १२-दर्पणकार १३-जीवन संग्राम १४-पूर्णता १५-नया
चाँद १६-चिर कर्तव्य १७-संतोषशील १८-पुष्प बाहुल्य १९-जंगल जंगल
घूमना २०-दहनशील २१-सभा के बीच २२-पिघलने वाला २३-व्यक्तियों
२४-लाक्षणिक, अवास्तविक २५-समुदाय, जाति २६-अवास्तविकता के आडम्बर
को आग लगाने वाला २७-मूर्ति-रचना २८-अरब देश ।

पैवस्ता रह शजर से उमीदे बहार रख

डाली गई जो फ़स्ले ख़जां में शजर से टूट
मुम्किन नहीं हरी हो सहाबे बहार^१ से
है लाजवाल्^२ अहदे ख़जां^३ इसके वास्ते
कुछ वास्ता नहीं है इसे बर्गोबार^४ से
है तेरे गुलसितां में भी फ़स्ले ख़जां का दौर^५
ख़ाली है जेबे गुल ज़रे कामिल अय्यार^६ से
जो नग़्मा जन^७ थे ख़ल्वते अय्यार^८ में तयूर^९
रुस्तत हुवे तेरे शजरे सायादार से
शाख़े बुरीबा^{१०} से सबक्र अन्दोज़^{११} हो कि तू
ना आशना है क़ाएबए रोज़गार^{१२} से

मिल्लत^{१३} के साथ राब्तए उस्तवार^{१४} रख
पैवस्ता^{१५} रह शजर से उमीदे बहार रख

साक़ी

नशा पिला के गिराना तो सब को आता है
मज़ा तो जब है कि गिरतों को थाम ले साक़ी
जो बाबा कश^{१६} थे पुराने वो उठते जाते हैं
कहीं से आबे बक्राए दवाम^{१७} ले साक़ी

कटी है रात तो हंगामा गुस्तर^{१८} में तेरी,
सहर^{१९} करीब है अल्लाह का नाम ले साक़ी

- १-बसंत-मेघ २-अंतहीन ३-पतझड़ का काल ४-पत्ती और फल ५-काल
६-ख़रा सोना ७-संगीत रत ८-परिजनों के एकांत निवास ९-पक्षीगण
१०-कटी हुई ११-सीख १२-संसार के नियम १३-राष्ट्र १४-दृढ़ सम्पर्क
१५-सम्बन्धित १५-शराबी १७-अनंत जीवनदायक रस १८-शोरोगुल
१९-प्रभात

फूल

तुझे क्यों फ़िक्र है ऐ गुल ! बिले सबचाके^१ बुलबुल की
 तू अपने पैरहन^२ के चाक^३ तो पहले रफू कर ले ।
 तमन्ना आबरू की हो अगर गुल्जारे हस्ती^४ में,
 तो काँटों में उलझ कर ज़िन्दगी करने की खू^५ कर ले ।
 सनूबर^६ बाग में आज़ाद भी है पाबगिल^७ भी है
 इन्हीं पाबन्दियों से हासिल आज़ादी को तू कर ले ।
 तुनुक बल्ली^८ को इस्तिराना^९ से पैगामे ख़जालत^{१०} दे
 न रह मिन्नत कशे शन्नम^{११}, नगू^{१२} जामोसुबू^{१३} कर ले ।
 नहीं यह शाने खुदबारी^{१४} चमन से तोड़कर तुझको
 कोई दस्तार^{१५} में रख ले कोई ज़ेबे गुलू^{१६} कर ले ।
 चमन में गुंचए गुल से यह कहकर उड़ गई शन्नम
 मज़ाके^{१७} जौरे गुलची^{१८} हो तो पैदा रंगोबू कर ले ।
 अगर मन्ज़ूर हो तुझको ख़ज़ां ना आशना रहना
 जहाने रंगोबू से पहले क़त्ए आर्ज़ू^{१९} कर ले ।
 इसी में देख मुज़्मर^{२०} है कमाले ज़िन्दगी तेरा
 जो तुझको जीनते दामन^{२१} कोई आईनारू^{२२} कर ले ।

—०—

१-शत विदीर्ण २-वस्त्र ३-फटा ४-संसार ५-अभ्यास ६-चीड़ वृक्ष
 ७-मिट्टी में धंसा हुआ ८-कृपणता अल्पदान ९-संतुष्टि बेपर्वाही १०-लज्जा,
 पश्चात्ताप ११-ओस का आभारी १२-उलटा १३-प्याला १४-स्वाभिमान
 १५-पगड़ी १६-ग्रीवा की शोभा १७-स्वभाव १८-माली का अत्याचार १९-
 कामना त्याग २०-निहित २१-अंचल की शोभा २२-चन्द्रमुखी ।

मैं और तू

न सलीका^१ मुझमें कलीम^२ का, न करीना^३ तुझमें खलील^४ का
 मैं हिलाके^५ जादुए सामरी^६, तू क़तीले^७ शेवए आज़री^८
 मैं नवाए सोलताबर गुलू^९, तू परीदा रंग^{१०}, रमीदा बू^{११}
 मैं हिकायते ग़मे आज़ू^{१२}, तू हदीसे मातमे बिलबरी^{१३}
 मेरा ऐश ग़म, मेरा शहद सम^{१४}, मेरी बूद^{१५} हमनफ़से अदम^{१६}
 तेरा बिल हरम^{१७}, गिर्वे अज़म^{१८}, तेरा दी^{१९} ख़रीदए काफ़िरी^{२०}
 बसे ज़िन्दगी^{२१}, रमे ज़िन्दगी^{२२}, ग़मे ज़िन्दगी^{२३}, समे ज़िन्दगी^{२४},
 ग़मे रम न कर, समे ग़म न खा, कि यही हूँ शाने क़लन्दरी^{२५}
 तेरी छाक में है अग़र शरर^{२६}, तो ख़ियाले फ़क्रो ग़ना^{२७} न कर
 कि जहाँ मैं नाने शईर^{२८} पर है मदारे कुव्वते हैबरी^{२९} ।
 कोई ऐसी तज़े तवाफ़^{३०} तू मुझे ऐ चरागे हरम^{३१} बता
 कि तेरे पतंग को फिर अता^{३२} हो वही सरिश्ते समन्दरी^{३३}
 गिलए ज़क्राए वफा नुमा^{३४} कि हरम को अहले हरम^{३५} से है
 किसी बुतकदे^{३६} में बयां करूँ तो कहे सनम^{३७} भी 'हरी हरी'

१-रीति २-हज़रत मूसा पैग़म्बर ३-डंग ३-हज़रत इब्राहीम पैग़म्बर
 ५-मृत ६-एक प्रसिद्ध जादूगर ७-हत ८-एक मूर्तिकार ९-कण्ठ के भीतर
 की दग्ध वाणी १०-उड़ा हुआ रंग ११-उड़ा हुआ सुगन्ध १२-कामना की
 दुखद कहानी १३-मनोहरता के अन्त की शोक-कहानी १४-विष १५-
 अस्तित्व १६-मृत्यु-संगिनी १७-काबा मस्जिद १८-ग़ैर अरब देशों के हाथ
 बन्धक १९-धर्म २०-कुफ़्र के हाथ बिका हुआ २१-जीवनप्राण २२-जीवन-
 पलायन २३-जीवन दुख २४-जीवन विष २५-योगी २६-चिंगारी २७-
 फ़क़ीरी और बेपर्वाही २८-जौ की रोटी २९-हज़रत अली की शक्ति ३०-
 परिक्रमा-रीति ३१-काबा ३२-प्रदान ३३-समन्दर नामक पक्षी का स्वभाव
 जो अपने राग ही से अग्नि उत्पन्न करके स्वयं उसमें जल मरता है ३४-मित्रतारूपी
 अत्याचार की निन्दा ३५-काबा वालों ३६-मन्दिर ३७-बुत ।

न सतीजा गाहे जहाँ नई, न हरीके पंजा फ़िगन^१ नए
 वही फ़ितरते 'असदुल्लही', वही मर्हबी^२, वही अंतरी^३
 हरम ऐ शहेअरबो अजम^४ कि खड़े हैं मुन्तिजरे करम^५,
 ह गदा^६ कि तूने अता^७ किया है जिन्हें दिमागो सिकन्दरी^८

—०—

सितारा

हर का खौफ़ कि है खत्रए सहर तुझको ?

अआले हुस्न^१ की क्या मिल गई खबर तुझको ?

मताए नूर^२ के लुट जाने का है डर तुझको ?

है क्या हिरासे^३ फ़ना सूरते शरर^४ तुझको ?

मीं से दूर बिया आस्मां ने घर तुझको

मेसाले माह उड़ाई क़बाए जर^५ तुझको

ग़ज़ब है फिर तेरी नहीं सी जान डरती है !

तमाम रात तेरी कांपते गुज़रती है ।

मकने वाले मुसाफ़िर ! अज़ब ये बस्ती है

तो औज^६ एक का है दूसरे की पस्ती है ।

अज़ल^७ है लाखों सितारों की इक बिलावते मेह्न^८

फ़ना की नींद मये जिन्दगी की मस्ती है ।

—संसार का संग्राम-स्थल १—पंजा लड़ाने वाले प्रतिद्वन्दी ३—हज़रत अली
 ग़ उपनाम ४—इस्लाम का एक शत्रु ५—इस्लाम का एक शत्रु ६—अर्थात्
 ग़म्बरे इस्लाम ७—कृपा प्रतीक्षक ८—भिक्षु ९—प्रदान १०—एक बादशाह का नाम
 १—रूप का परिग्राम १२—प्रकाश-सम्पत्ति १३—मृत्यु का भय १४—चिगारी

विदाए गुंचा' में है राजे आफ़रीनिशे गुल'
 अदम' अदम है कि आईना बारे हस्ती' है
 सुकूं महाल है क्रुबरत के कारखाने में,
 सिबात' एक तघय्युर' को है ज़माने में

पुष्पोपहार प्रदान होने पर (फूल का तोहफा अता होने पर)

वो मस्ते नाज़° जो गुलशन में जा निकलती है
 कली कली की जबां से हुआ निकलती है
 इलाही ! फूलों में वह इन्तेखाब' मुझको करे
 कली से रश्के गुले आफ़ताब' मुझको करे,
 तुझ वह शाख से तोड़े, जड़े नसीब'° तेरे
 तड़पते रह गए गुल्ज़ार में रक़ीब'¹¹ तेरे
 उठा के सदमए फ़ुर्क़त'¹² विसाल'¹³ तक पहुँचा
 तेरी हयात'¹⁴ का जौहर कमाल तक पहुँचा ।
 मेरा कंवल'¹⁵ कि तसद्दुक'¹⁶ हैं जिसपे अह्ने नज़र'¹⁷
 मेरे शबाब'¹⁸ के गुलशन को नाज़ है जिसपर
 कभी ये फूल हम आगोशे मुद्दआ'¹⁹ न हुआ
 किसी के दामने रंगों से आशना न हुआ
 शिगुफ़ता'²⁰ कर न सकेगी कभी बहार उसे
 फ़सुर्दा'²¹ रखता है गुलची'²² का इन्तिज़ार उसे

१-कली का अन्त २-पुष्पोत्पत्ति ३-मृत्यु ४-जीवन का प्रतीक ५-स्थायित्व
 ६-परिवर्तन ७-रूप गविता ८-निर्वाचित ९-सूर्य्य पुष्प के समान १०-अहो-
 भाग ११-शत्रु १२-बिरह का दुख १३-मिलन १४-जीवन १५-कमल
 १६-निष्ठावर १७-दृष्टिवान १८-यौवन १९-मनोकामना से आर्लिगन बद्ध
 २०-प्रफुल्ल २१-उदास २२-माली ।

रात और शायर

(१)

रात

क्यों मेरी चाँदनी में फिरता है तू परीशां
 खामोश सूरते गुल, मानिन्दे बू परीशा
 तारों के मोतियों का शायद है जौहरी तू
 मछली है कोई मेरे दर्याएँ नूर की तू,
 या तू मेरी जर्बी का तारा गिरा हुआ है,
 रिफ्रैक्ट^१ को छोड़कर जो पस्ती में जा बसा है
 खामोश हो गया है तारे रुबाबे हस्ती^२
 है मेरे आईने में तस्वीरे खाबे हस्ती
 दरिया की तह में चश्मे गर्दाब^३ सो गई है
 साहिल से लग के मौजे बेताब सो गई है
 बस्ती जमीं की कैसी हंगामा आफ़री^४ है
 यों सो गई है जैसे आबाब ही नहीं है
 शायर का दिल है लेकिन नाआशना मुकुं से
 आजाब रह गया तू क्योंकि मेरे फ़सू^५ से ।

(२)

शायर

मैं तेरे चाँद की खेती में गुहर^६ बोता हूँ
 छुप के इन्सानों से मानिन्दे सहर^७ रोता हूँ
 दिन की शोरिश^८ में निकलते हुए शमति है
 उरलते^९ शब में मेरे अशक टपक जाते हैं

१-ऊँचाई २-संसार वीणा का तार ३-भँवर की आँख ४-अशान्तिजनक
 ५-जादू ६-मोती ७-प्रभात के समान ८-अशान्ति ९-एकान्त ।

मुझमें फ़रियाब जो पिन्हां^१ है सुनाऊँ किसको
 तपिशो शौक का नज़्जारा दिखाऊँ किसको
 बक्त्^२ ऐमन^३ मेरे सीना पे पड़ी रोती है
 देखने वाली है जो आँख कहां सोती है
 सिफ़ते शम्ए लहव^४ मुर्दा है मह्फ़िल मेरी
 आह ऐ रात ! बड़ी दूर है मंज़िल मेरी ।
 अहवे हाज़िर^५ की हवा रास नहीं है उसको
 अपने नुक़सान का एहसाह नहीं है उसको
 ज़बते^६ पैग़ामे मुहब्बत से जो घबराता हूँ
 तेरे ताबिन्दा^७ सितारों को सुना जाता हूँ ।

—०—

बज्मे अंजुम (तारों की सभा)

सूरज ने जाते जाते शामे सियह क़बा^१ को
 तश्ते उफ़ुक^२ से लेकर लाले के फूल मारे
 पहना दिया शफ़क़ ने सोने का सारा ज़ेवर
 क़ुबूरत ने अपने गहने चाँदी के सब उतारे !
 मह्मिल में ख़ामुशी के लैलाए जुल्मत^३ आई
 चमके उरूसे शब^४ के मोती वह प्यारे प्यारे
 वह दूर रहने वाले हंगामए जहाँ से,
 कहता है जिनको इंसां अपनी ज़बां में “तारे”
 मह्बे फ़लक़ फ़रोज़ी^५ थी अंजुमन फ़लक़ की
 अशो बरों से आई आवाज़ इक मलक^६ की

१—गुप्त २—तूर पर्वत की बिजली ३—समाधि दीपक के समान ४—वर्तमान युग
 ५—सहन ६—चमकदार ७—काले वस्त्र वाली सन्ध्या ८—क्षितिज की थाली
 ९—तिमिर सुन्दरी १०—निशा-बधु ११—आकाश को प्रकाशित करने में लीन
 १२—फ़रिश्ता ।

ऐ शब के पासवानो ! ऐ आस्मां के तारो
ताबिन्दा^१ क्रौम सारी गर्वूँ नशीं^२ तुम्हारी
छेड़ो सुरूब ऐसा, जाग उठें सोने वाले,
रहबर है क्राफ़िलों की ताबे जबीं^३ तुम्हारी
आईने क्रिस्मतों के तुमको यह जानते हैं,
शायद सुनें सबाएँ अहले जमीं तुम्हारी

रुस्तत हुई खमोशी तारों भरी फ़जा^४ से
वुस्त्रत^५ थी आस्मां की मामूर^६ इस नवा^७ से

हुस्ने अजल है पैदा तारों की बिलबरी में
जिस तरह अक्से गुल हो शब्नम की आसीं में
आईने नौ^८ से डरना तजें कुहन^९ पर अड़ना
मंजिल यही कठिन है क्रौमों की ज़िन्दगी में
यह कारवाने हस्ती है तेजगाम^{१०} ऐसा,
क्रौमें कुचल गई है जिसकी रवा रवी में
आँखों से हैं हमारी गायब हज़ारों अंजुम
दाख़िल हैं वो भी लेकिन अपनी बिरादरी में
इक उम्र में न समझे इसको ज़मीन वाले
जो बात पा गए हम थोड़ी सी ज़िन्दगी में,
हैं ज़ब्बेबाहमी^{११} से कायम निज़ाम^{१२} सारे
पोशीदा है यह नुक्ता तारों की ज़िन्दगी में ।”

—०—

१-चमकने वाली २-गगन-आसीन ३-माथे की चमक ४-आकाश ५-फैलाव
६-भरी हुई ७-वाणी ८-नया विधान ९-पुरानी रीति १०-तीव्रगामी
११-पारस्परिक आकर्षण १२-व्यवस्था ।

नसीहत (उपदेश)

मैंने 'इकबाल' से अजराहे नसीहत^१ ये कहा

आमिले रोजा^२ है तू और न पाबन्दे नमाज,

तू भी है शेवए अबबि रिया^३ में कामिल,

बिल में लन्दन की हवस लब प तेरे जिन्ने हिजाज^४

झूठ भी मस्तहत आमेज तेरा होता है

तेरा अन्दाजे तमल्लुक^५ भी सरापा एजाज

खत्म तक्रोर तेरी मद्दहते सरकार^६ पे है

फ़िक्रे रौशन है तेरा मूजिदे आईने नियाज^७

दरे हुक्काम भी है तुझको मक्कामे महमूद^८

पालिसी भी तेरी पेचीदा तर अज जुल्फ़े अयाज^९

और लोगों की तरह तू भी छुपा सकता है

पर्दे खिदमते दी^{१०} में हवसेजाह^{११} का राज

नज़र आजाता है मस्जिद में भी तू ईद के दिन

असरे वाज से होती है तबीअत भी गुदाज^{१२}

बस्त परवुर्द^{१३} तेरे मुल्क के अलबार भी है

छेड़ना फ़र्ज है जिन पर तेरी तश्हीर^{१४} का साज

इस पे तुरा है कि तू शेर भी कह सकता है

तेरी मीनाए सुखन^{१५} में है शराबे शीराज^{१६}

१-उपदेश स्वरूप २-व्रतधारी ३-पाखण्डियों की रीति ४-मक्के-मदीने की चर्चा ५-चापलूसी का ढंग ६-राज की प्रशंसा ७-भक्तिविधान का रचयिता ८-सबसे अच्छा स्थान ९-महमूद बादशाह का दास १०-धर्म ११-सम्मान-लोलुपता १२-नर्म १३-हाथ के पाले हुए १४-ख्याति १५-कविता की सुराही १६-ईरान का एक नगर ।

जितने औसाफ़^१ हैं लीडर के वह हैं तुझमें सभी
तुझको लाजिम है कि हो उठके शरीरके तगोताज^२

गमे सय्याद^३ नहीं और परोबाल भी है
फिर सबब क्या है नहीं तुझको बिमागे पर्वाज
“आक्रिबत मंजिले मा वादिए खामोशां अस्त,^४
हालिया गुल्गुला दर गुम्बदे अफ़लाक अन्दाज ।”^५

—०—

इन्सान

मज्जर^६ चमनिस्तां के जेबा^७ हों कि नाजेबा^८
मह्-रुमे अमल^९ नगिस^{१०} मज्जरे तमाशा^{११} है
रफ़तार की लज्जत का एहसास^{१२} नहीं इसको
फ़िन्नत ही सनूबर^{१३} की मह्-रुमे तमन्ना^{१४} है
तस्लीम^{१५} की खूगर^{१६} है जो चीज है दुनिया में
इन्सान की हर क़ुव्वत् सर्गमें तक्काज^{१७} है
इस जर्ग को रहती है बुस्रत^{१८} की हवस हरबस
यह जर्ग नहीं शायद सिमटा हुवा सह्रा^{१९} है
चाहे तो बदल डाले हैअत^{२०} चमनिस्तां की
यह हस्तीए वाना^{२१} है, बीना^{२२} है, तवाना^{२३} है

१-विशेषता २-दौड़धूप ३-बधिक ४-हम सब का अन्तिम ठिकाना समाधि क्षेत्र है ५-इसलिये जहाँ तक हो सके आकाश के गुम्बद में शोर मचा लें ६-दृश्य ७-सुन्दर ८-असुन्दर ९-क्रिया से वंचित १०-एक फूल जो आँख के समान होता है ११-देखने को बाध्य १२-विचार १३-चीड़ का वृक्ष १४-कामनाल रहित १५-स्वीकार करने १६-स्वभाववाली १७-मांगना १८-विस्तार १९-जंग २०-रूप २१-ज्ञानवान २२-देखने वाला २३-शक्तिवान ।

शिकवा

क्यों जियांकार बनूं सूद फ़रामोश रहूं
फ़िक्के फ़र्दा न करूं महवे रामे दोश रहूं
नाले बुलबुल के सुनूं और हमातन गोश रहूं
हमनबा ! मैं भी कोई गुल हूं कि ख़ामोश रहूं

जुअ्रत आमोज मेरी ताबे सुखन है मुझको
शिकवा' अल्लाह से ख़ाकमबदहन^१ है मुझको

है बजा शेवए तस्लीम^१ मैं मशहूर है हम
क्रिस्सए बर्द सुनाते हैं कि मजबूर हैं हम
साज ख़ामोश हैं, फ़रियाब से मामूर^२ है हम
नाला आता है अगर लब पे तो माजूर है हम

ऐ खुदा शिकवए अर्बाबे वफ़ा भी सुन ले
ख़ूगरे हम्ब^३ से थोड़ा सा गिला भी सुन ले

थी तो मौजूब अजल से ही तेरी जाते क़दीम
फूल था जेबे चमन, पर न परीशां थी शमीम
शर्ते इंसाफ़ है, ऐ साहबे अल्लाफ़े अमीम
बूए गुल फैलती किस तरह जो होती न नसीम

हमको जमईयते ख़ातिर यह परीशानी थी
वर्ना उम्मत तेरे महबूब^४ की दीवानी थी

हमसे पहले था अजब तेरे जहाँ का मन्ज़र
कहीं मस्जूब थे पत्थर कहीं माबूब शजर
ख़ूगरे पंकरे महसूस^५ थी इंसां की नज़र
मानता फिर कोई अनदेखे खुदा को क्यों कर

१-शिकायत २-मेरे मुंह में धूल ३-सर झुकाने की आदत ४-भरे हुए
५-प्रशंसा सुनने का अभ्यस्त ६-मुहम्मद हासब ७-साकार पूजा की अभ्यस्त ।

तुझको मालूम है लेता था कोई नाम तेरा
 ऋग्वेते बाजूए मुस्लिम ने किया काम तेरा
 बस रहे थे यहीं सल्जूकी भी तूरानी भी
 अहलेची चीन में ईरान में सासानी भी
 इसी मामूरे^१ में आबाद थे यूनानी भी
 इसी दुनिया में यहूदी भी थे नसरानी भी
 पर तेरे नाम पे तल्वार उठाई किसने
 बात जो बिगड़ी हुई थी वह बनाई किसने
 थे हमीं एक तेरे मारका आराओ में,
 खुशकियों में कभी लड़ते कभी दरियाओं में
 दों अजानें कभी यूरोप के कलीसाओं में
 कभी अफ़रीक़ा के तपते हुए सहाराओं में
 शान आँखों में न जचती थी जहाँदारों की
 कलमा पढ़ते थे हम छांव में तल्वारों की
 हम जो जीते थे तो जंगों की मुसीबत के लिए
 और मरते थे तेरे नाम की अजमत के लिए
 थी न कुछ तेराजनी अपनी हुकूमत के लिए
 सरबक्रफ़^२ फिरते थे क्या दह्ल में दौलत के लिए
 क़ौम अपनी जो ज़रोमाले जहाँ पर मरती
 बुतफ़रोशी के इवज बुत शिकनी क्यों करती
 टल न सकते थे अगर जंग में अड़ जाते थे
 पांव शेरों के भी मैदान से उखड़ जाते थे
 तुझ से सरकश हुआ कोई तो बिगड़ जाते थे
 तेरा क्या चीज है हम तोप से लड़ जाते थे
 नक़्श तौहीद का हर दिल पे बिठाया हमने ।
 जेरे खंजर भी यह पैग़ाम सुनाया हमने ।

तू ही कह दे कि उखाड़ा बरे खैबर किस ने
 शहर क़ैसर का जो था उसको किया सर किसने
 तोड़े मल्लूक़ खुदावन्द के पैकर किस ने
 काट कर रख दिये कुपफ़ार^१ के लश्कर किस ने

किस ने ठण्डा किया आतशकदए ईरां को
 किसने फिर ज़िन्दा किया तज़कराए यज्दां^२ को

कौन सी क़ौम फ़क़त तेरी तलबगार हुई
 और तेरे लिये ज़हमत कशे पैकार हुई
 किसकी शमशीरे ज़हांगीर ज़हांदार हुई
 किसकी तक्वीर से दुनिया तेरी बेदार हुई

किसकी हैबत से सनम सहमे हुए रहते थे
 मुंह के बल गिर के 'हुवल्लाहु अहब' कहते थे

आ गया ऐन लड़ाई में अगर वक्ते नमाज़
 क़िब्ला रू हो के ज़मींबोस हुई क़ौमे हिजाज़
 एक ही सफ़ में खड़े हो गये महमूदो अयाज़
 न कोई बन्दा रहा और न कोई बन्दा नवाज़

बन्दओ साहबो^३ मुहताजो ग़नी^४ एक हुए
 तेरी सरकार में पहुँचे तो सभी एक हुए ।

महफ़िले कौनो मकां में सहरो शाम फिरे
 मये तौहीब को लेकर सिफ़ते ज़ाम फिरे
 कोह में दश्त में लेकर तेरा पैग़ाम फिरे
 और मालूम है तुझको कभी नाकाम फिरे

दश्त तो दश्त हूँ वरिया भी न छोड़े हम ने
 बह्ले जुल्मात में दौड़ा दिए घोड़े हम ने

सफ़हए बह्ल से बातिल को मिटाया हम ने
 नौ-ए-इंसां को गुलामी से छड़ाया हमने

१-काफ़िरों २-भगवत चर्चा ३-नौकर और मालिक ४-ग़रीब और अमीर ।

तेरे काबे को जबीनों से बसाया हमने
 तेरे क़ुर्आन को सीनों से लगाया हमने
 फिर भी हम से यह गिला है कि वफ़ादार नहीं
 हम वफ़ादार नहीं तू भी तो दिलदार नहीं
 उम्मतें और भी हैं उन में गुनहगार भी हैं
 इज्जत वाले भी हैं मस्ते मए पिनवार भी हैं
 उन में काहिल भी हैं ग़ाफ़िल भी हैं हुद्दयार भी हैं
 सैकड़ों हैं कि तेरे नाम से बेज़ार भी हैं
 रहमतें हैं तेरी अग़ियाद के काशानों पर
 बर्क़ गिरती हैं तो बेचारे मुसलमानों पर
 बुत सनमख़ानों में कहते हैं मुसलमान गए
 हैं खुशी उन को कि काबे के निगहबान गए
 मंज़िले दह्ल से ऊँटों के हुदीख़ान गए
 अपनी बग़लों में दबाए हुए क़ुर्आन गए
 ख़न्दाज़न कुफ़्र है एहसास तुझे है कि नहीं
 अपनी तौहीद का कुछ पास तुझे है कि नहीं
 यह शिकायत नहीं, है उनके ख़जाने मामूर
 नहीं महफ़िल में जिन्हें बात भी करने का शऊर
 कहर तो यह है कि काफ़िर को मिलें हूरोकुसूर
 और बेचारे मुसल्मां को फ़क्रत वादए हर
 अब वह अल्लाफ़ नहीं हम पे इनायात नहीं
 बात यह क्या है कि पहली सी मदारात नहीं
 क्यों मुसलमानों में है दौलते दुनिया नायाब
 तेरी क़ुदरत तो है वह जिसकी न हब है न हिसाब
 तू जो चाहे तो उठे सीनए सहरा से हुबाब
 रहरव दस्त हो सैलीज़दए मौजे मुराब

ताने अगियार^१ है, रुस्वाई है नादारी है
 क्या तेरे नाम पे मरने का इवज खारी है
 बनी अगियार की अब चाहने वाली दुनिया
 रह गई अपने लिए एक खियाली दुनिया
 हम तो रुस्त हुए औरों ने संभाली दुनिया
 फिर न कहना, हुई तौहीद से खाली दुनिया
 हम तो जीते हैं कि दुनिया में तेरा नाम रहे
 कहीं मुमकिन है कि साक़ी न रहे जाम रहे
 तेरी महफ़िल भी गई चाहने वाले भी गए
 शब की आहें भी गई सुब्ह के नाले भी गए
 दिल तुझे दे भी गए अपना सिला ले भी गए
 आ के बैठे भी न थे और निकाले भी गए
 आए उदशाक़^२ गए वादए फ़र्दा^३ ले कर
 अब उन्हें ढूंढ़ चिराग़े रुखे जेबा ले कर
 दर्द लैला भी वही क़स का पहलू भी वही
 नज्द के दस्तो जबल में रमे आहूँ^४ भी वही
 इश्क़ का दिल भी वही, हुस्न का जादू भी वही
 उम्मत अहमदे मुसिल^५ भी वही तू भी वही
 फिर य आज़ुर्दग़िए ग़ैर सबब क्या मानी
 अपने शंदाओं पे यह चश्मे ग़ज़ब^६ क्या मानी
 तुझको छोड़ा कि रसूले अरबी को छोड़ा
 बुत गरी पेशा किया, बुत शिकनी को छोड़ा
 इश्क़ को इश्क़ की आशुफ़ता सरी को छोड़ा
 रस्मे सल्मानों उवैसे करनी^७ को छोड़ा

आग तक्बीर की सीनों में दबी रखते ।
 ज़िन्दगी मिस्ले बिलाले हबशी रखते ।

१-शत्रुओं का व्यंग्य २-प्रेमी गण ३-भविष्य का वादा ४-हरिन की चीकड़
 ५-मुसलमान जाति ६-क्रुद्ध दृष्टि ७-पैगम्बर इस्लाम के दो प्रेमी ।

इश्क की खैर वह पहली सी अदा भी न सही
जादा पैमाइए तस्लीमो रजा भी न सही
मुस्तरिब दिल, सिफ़ते क़िबलानुमा भी न सही
और पाबन्दिए आईने वफ़ा भी न सही

कभी हम से कभी ग़रों से शनासाई है
बात कहने की नहीं तू भी तो हरजाई है

सरे फ़ारां पे किया दीन को कामिल तूने
इक इशारे में हज़ारों के लिए दिल तूने
आतशअन्वोज़ किया इश्क का हासिल तूने
फूंक दी गर्मिए ख़ुसार से महफ़िल तूने

आज क्यों सीने हमारे शररआबाद नहीं
हम वही सोलतासामां हैं तुझे याद नहीं

वादिए नज़्द में वह शोरे सलासिल न रहा
क़ैस दीवानए नज़्ज़ारए महमिल न रहा
हौसले वह न रहे हम न रहे बिल न रहा
घर यह उजड़ा है कि तू रौनक़े महफ़िल न रहा

ऐ ख़ुश आं रोज़ कि आई व बसद नाज़ आई'
बे हिजाबाना सूए महफ़िले मा बाज़ आई'

बादा कश ग़ैर हें गुल्शन में लबे जू बंटे
सुनते हें जाम बक़्र नरामए कू कू बंटे
दूर हंगामए गुल्ज़ार से यकसू बंटे
तेरे दीवाने भी हें मुन्तज़िरे हू बंटे

अपने पर्दानों को फिर जौक़े ख़ुद अफ़रोज़ी बे
बक़्रें देरीना को फ़र्माने जिगर सोज़ी बे

१-धन्य है वह दिन कि तुम हमारे पास आ रहे हो और सैकड़ों नाज़ के साथ आ रहे हो २-और हमारी महफ़िल में मुंह से पर्दा उठाए हुए आ रहे हो ।

क्रौमे आबारा अनां ताब है फिर सूए हिजाज
ले उड़ा बुलबुले बेपर को मज्जाक्रे पर्वाज
मुज्तरिब बाग के हर गुंचे में है बूए नियाज
तू जरा छेड़ तो दे, तिशनए मिज्जाब है साज

नगमे बेताब हैं तारों से निकलने के लिए
तूर मुज्तर है उसी आग में जलने के लिए

मुश्किलें उम्मते महूम की आसां कर दे
मोरे बे माया को हम दोशे सुलेमां कर दे
जिन्से नायाब मुहब्बत को फिर अर्जा कर दे
हिन्द के दौर नशीनों को मुसल्मां कर दे

जूए खूं मी चकद अज हसरते देरीनए मा'
मी तपद नाला ब नशतर कबए सीनए मा'

बूए गुल ले गई बेरूने चमन राजे चमन
क्या क्रियामत है कि खुद फूल हैं गम्माजे चमन
अहदे गुल खत्म हुआ टूट गया साजे चमन
उड़ गए डालियों से जम्जमा पर्वाजे चमन

एक बुलबुल है कि है महवे तरन्नुम अब तक
उस के सीने में है नगमों का तलातुम अब तक

कुमरियां शाखे सनूबर से गुरेजां भी हुईं
पत्तियां फूल की झड़ झड़ के परेशां भी हुईं
वह पुरानी रविशें बाग की वीरां भी हुईं
डालियां पैरहने बर्ग से उर्यां भी हुईं

क्रंदे मौसम से तबीयत रही आजाद उसकी
काश गुलशन में समझता कोई फ़र्याद उसकी

१-हमारी चिर निराशाओं के कारण रक्त की एक नदी निकल रही है ।

२-और हमारे अंतर के शल्यागार मे हमारा क्रन्दन गर्म हो रहा है ।

लुत्फ मरने में है बाक़ी न मज़ा जीने में
कुछ मज़ा है तो यही ख़ूने ज़िगर पीने में
कितने बेताब हूँ जौहर मेरे आईने में
किस क़वर जल्वे तड़पते हूँ मेरे सीने में

इस गुलिस्तां में मगर देखने वाले ही नहीं
दाग़ जो सीने में रखते हों वह लाले ही नहीं

पाक उस बुलबुले तन्हा की नवा से दिल हों
जागने वाले इसी बांगे बरा से दिल हों
यानी फिर ज़िन्दा नये अह्वे वफ़ा से बिल हों
फिर उसी बावए देरीना के प्यासे बिल हों

अजमी ख़ुम है तो क्या मैं तो हिजाज़ी है मेरी
नग़मा हिन्दी है तो क्या लं तो हिजाज़ी है मेरी

—०:०—

जवाबे शिकवा

दिल से जो बात निकलती है असर रखती है
पर नहीं, ताक़ते पर्वाज़^१ मगर रखती है
कुदसियुल् अस्ल^२ है, रिफ़अत^३ पे नज़र रखती है
ख़ाक़ से उठती है गर्दू^४ पे गुज़र रखती है

इश्क़ था फ़ितना ग़रो सरकशो चालाक़ मेरा
आसमां चीर गया नालाए बेबाक़ मेरा

पीरे गर्दू^५ ने कहा सुन के कहीं है कोई
बोले सय्यारे सरे अशोबरी^६ है कोई
चांद कहता था, नहीं अहले ज़मीं है कोई
कहकशां कहती थी पोशीबा यहीं है कोई

१—उड़ने की शक्ति २—फ़रिश्तों की जाति ३—ऊँचाई ४—ऊँचे आकाश के ऊपर ।

कुछ जो समझा मेरे शिकवे को तो रिश्तां समझा
 मुझको जन्नत से निकाला हुआ इन्सां समझा
 थी फ़रिश्तों को भी हैरत कि यह आवाज है क्या
 अर्श वालों प भी खुलता नहीं यह राज है क्या
 ता सरे अर्श भी इन्सां की तगोताज^१ है क्या
 आ गई छाक की चुटकी को भी पर्वाज है क्या

ग़ाफिल आबाब से मुक्काने ज़मीं^२ कैसे हैं
 शोखो गुस्ताख यह पस्ती के मकीं कैसे हैं
 इस क्रबर शोख कि अल्लाह से भी बर्हम^३ हैं
 था जो मस्जूदे मलायक^४ यह वही आदम है
 आलिमे कैफ़ है दानाए रमूजे कम है
 हां मगर इज्ज^५ के असरार से नामहरम है

नाज है ताक़ते गुप्तार प इंसानों को
 बात करने का सलीका नहीं नादानों को
 आई आवाज रामअंगेज है अफ़साना तेरा
 अश्के बेताब से लबरेज है पैमाना तेरा
 आसमांगीर^६ हुआ नारए मस्ताना तेरा
 किस क्रबर शोखजुबां है दिले दीवाना तेरा

शुक्र शिकवे को किया हुस्ने अदा से तूने
 हम सुखन कर दिया बन्दों को खुदा से तूने
 हम तो मायल बकरम हैं कोई साइल ही नहीं
 राह बिखलाएँ किसे रहरवे मंज़िल ही नहीं
 तबियत आम तो है जौहरे क़ाबिल ही नहीं
 जिससे तामीर हो आदम की यह वह गिल ही नहीं

१-दौड़ धूप २-पृथ्वी वासी ३-विगड़े हुए ४-फ़रिश्तों ने जिसको सर
 झुकाया था ५-नम्रता ६-गगन-व्यापी ।

कोई क़ाबिल हो तो हम शाने कई^१ देते हैं
दुंदने वालों को दुनिया भी नई देते हैं

हाथ बेजोर हैं इल्हाव^२ के दिल खूगर हैं
उम्मीती बाएसे रुस्वाइए पंगम्बर हैं
बुत शिकन उठ गए बाक़ी जो रहे बुतगर हैं
था बराहीम पिदर और पिसर आज़र हैं

बादा आशाम नए, बादा नया, खुम भी नए
हरमे काबा नया, बुत भी नए, तुम भी नए

वह भी दिन था कि यही मायए रानाई था
नाज़िशे मौसमे गुल लालए सहराई था
जो मुसलमान था अल्लाह का सौदाई था
कभी महबूब तुम्हारा यही हरजाई था

किसी यकजाई से अब अहदे गुलामी कर लो
मिल्लते अहमदे मुसल को मुक़ामी कर लो

किस क़दर तुम पे गिरां सुबह की बेदारी है
हम से कब प्यार है, हां नींब तुम्हें प्यारी है
तबए आज़ाद पे क़ंदे रमज़ां^३ भारी है
तुम्हीं कह दो यही आईने वफ़ादारी है

कौम मज़हब से है, मज़हब जो नहीं तुम भी नहीं
जब्बे बाहम जो नहीं महफ़िले अंजुम भी नहीं

जिन को आता नहीं दुनिया में कोई फ़न तुम हो
नहीं जिस क़ौम को पर्वाए नशेमन^४ तुम हो
बिजलियां जिस में हों आसूदा, वह ख़िर्मन तुम हो
बेच खाते हैं जो अस्लाफ़^५ के मदफ़न^६ तुम हो

१-ईरान के प्राचीन सम्राट-वंश "कै" की शान २-अधर्म ३-रोज़ा (व्रत)
एखने की पाबन्दी ४-घर की पर्वा ५-पूर्वजों ६-क़ब्र ।

हो निको नाम जो क़ब्रों की तिजारत कर के
 क्या न बेचोगे जो मिल जाएँ सनम पत्थर के
 सफ़हए वह से बातिल^१ को मिटाया किसने
 नौए इन्सां को गुलामी से छुड़ाया किसने
 मेरे काबे को जबीनों से बसाया किसने
 मेरे क़ुअ्रान को सीनों से लगाया किसने

थे वो आबा^२ तो तुम्हारे ही मगर तुम क्या हो
 हाथ पर हाथ धरे मुन्तज़िरे फ़र्ब^३ हो

क्या कहा बह्ने मुसल्मां है फ़क़त वावए हूर
 शिकवा बेजा भी करे कोई तो लाज़िम है शऊर
 अद्ल^४ है फ़ातिरे हस्ती^५ का अज़ल^६ से दस्तूर
 मुस्लिम आई हुआ काफ़िर तो मिले हूरो क़सूर

तुम में हूरों का कोई चाहने वाला ही नहीं
 जल्वए तूर तो मौजूद है मूसा ही नहीं ।

मनफ़अत^७ एक है इस क़ौम की, नुक्सान भी एक
 एक ही सब का नबी, दीन भी, ईमान भी एक
 हरमे पाक भी, अल्लाह भी, क़ुअ्रान भी एक
 कुछ बड़ी बात थी होते जो मुसल्मान भी एक

फ़िर्का बन्दी है कहीं और कहीं जातें हैं
 क्या ज़माने में पनपने की यही बातें हैं

कौन है तारिके आईने रसूले मुस्तार^८
 मस्लहत वक्त की है किस के अमल का मेयार
 किसकी आंखों में समाया है शिअ्रारे अग़ियार^९
 हो गई किसकी निगह तर्ज़े सलफ़ से बेज़ार

१-असत्य २-पूर्वज ३-भविष्य ४-न्याय ५-सृष्टि-रचयिता ६-आदि
 ७-लाभ ८-पैग़म्बर इस्लाम के नियमों को तोड़ने वाला ९-दूसरों का ढंग ।

क़ल्ब में सोज नहीं, रुह में एहसास नहीं
कुछ भी पैग़ामे मुहम्मद का तुम्हें पास नहीं

जा के होते हैं मसाजिद में सफ़ आरा तो ग़रीब
ज़हमते रोज़ा जो करते हैं ग़वारा तो ग़रीब
नाम लेता है अगर कोई हमारा तो ग़रीब
पर्वा रखता है अगर कोई तुम्हारा तो ग़रीब

उमरा नशए दौलत में हैं गाफ़िल हम से
ज़िन्दा है मिल्लते बँजा ग़ुरबा के दम से

वायजे क़ौम की वह पुख़्ता ख़याली न रही
बर्क़ तबई न रही शोला मक़ाली न रही
रह गई रस्मे अज़ां रूहे बिलाली न रही
फ़ल्सफ़ा रह गया तल्कीने ग़ज़ाली न रही

मस्जिदें मसियाख़ां हैं कि नमाज़ी न रहे
यानी वह साहबे औसाफ़े हिजाज़ी न रहे

शोर है हो गए दुनिया से मुसल्मां नाबूद
हम यह कहते हैं कि थे भी कहीं मुस्लिम मौजूद
वज़्र^१ में तुम हो नसारा,^२ तो तमद्दुन^३ में हनूब^४
यह मुसल्मान ! जिन्हें देख के शर्माएं यहूद

यूं तो सय्यद भी हो मिर्जा भी हो अफ़ग़ान भी हो
तुम सभी कुछ हो बताओ तो मुसल्मान भी हो

दमे तक्ररीर थी मुस्लिम की सदाक़त बेबाक
अद्ल उस का था क़बी, लौसे मराअ़ात से पाक
शजरे फ़ितरते मुस्लिम था हया से नमनाक
था शुजाअ़त में वह इक हस्तिए फ़ौक़ुलइबराक

खुदगुवाजी न मे कैफ़ीयते सहबायश बूद^१
खाली अज खेश शुवन सूरते मीनायश बूद^२

हर मुसल्मां रगे बातिल के लिए नशतर था
उसके आईनाए हस्ती में अमल जौहर था
जो भरोसा था उसे कुव्वते बाजू पर था
है तुम्हें मौत का डर उसको खुदा का डर था

बाप का इल्म न बेटे को अगर अजबर हो
फिर पिसर क़ाबिले मीरासे पिबर क्यों कर हो
हर कोई मस्ते मए जौके तन आसानी^३ है
तुम मुसल्मां हो यह अन्दाजे मुसल्मानी है
हैदरी फ़क़ है नै दौलते उस्मानी है
तुम को अस्लाफ़ से क्या निस्बते रूहानी है

वह ज़माने में मुअज़्जिज़ थे मुसल्मां हो कर
और तुम सवार हुए तारिके कुआँ हो कर
तुम हो आपस में ग़ज़बनाक वह आपस में रहीम
तुम ख़ताकारो ख़ताबीं वह ख़तापोशो करीम
चाहते सब हैं कि हों औजे सुरय्या पे मुकीम
पहले वैसा कोई पैदा तो करे क़ल्बे सलीम

तख़्ते फ़ग़फ़ूर भी उन का था सरीरे कै भी
यूँ ही बातें हैं कि तुम में वह हमीयत है भी
ख़ुदकुशी शेवा तुम्हारा वह ग़य़ूरो ख़ुद्दार
तुम उख़ुव्वत से गुरेज़ां वह उख़ुव्वत पे निसार
तुम हो गुफ़्तार सरापा वह सरापा किर्दार
तुम तरसते हो कली को वह गुलिस्ताँ बकनार

१—अपने आप को पिघलाना उसकी शराब की विशेषता थी २—और अपने आप खाली होना उसकी सुराही का स्वभाव था ३—सरल जीवन ।

अब तलक याद है कौमों को हिकायत उनकी
 नक़्श है सफ़हए हस्ती पे हिकायत उनकी
 मिस्ले अंजुम उफ़्रके कौम प रौशन भी हुए
 बुते हिन्दी की मुहब्बत में बरहमन भी हुए
 शौक़े पर्वाज़^१ में महजूरे^२ नशेमन भी हुए
 बे अमल थे ही जवाँ दीन से बदज़न^३ भी हुए

उनको तहज़ीब ने हर बन्द से आज़ाद किया
 ला के काबा से सनमख़ाने में आबाद किया

क़ैस ज़हमत कशे तनहाइए सहरा न रहे
 शहर की खाय हवा बादिया पैमां न रहे
 वह तो दीवाना है बस्ती में रहे या न रहे
 यह ज़रूरी है हिजाबे रखे लंला न रहे

गिलए जौर न हो शिकवए बेदाद न हो
 इश्क़ आज़ाद है क्यों हुस्न भी आज़ाद न हो
 अहदे नौ बर्क़ है आतश जाने हर ख़िर्मन है
 ऐमन उस से कोई सहरा न कोई गुलशन है
 इस नई आग का अक्वामे कुहन ईंधन है
 मिल्लते ख़ल्मे रुसुल शोला ब पैराहन है

आज भी हो जो बराहीम का ईमां पैदा
 आग कर सकती है अन्दाज़े गुलिस्तां पैदा
 देख कर रंगे चमन हो न परीशां माली
 क़ौकबे गुंचा से शाखें हैं चमकने वाली
 ख़सो ख़ाशाक से होता है गुलिस्तां ख़ाली
 गुल बर अन्दाज़ है ख़ूने शुहबा^४ की लाली

रंग गर्दू^१ का ज़रा देख तो उन्नाबी है ।
 यह निकलते हुए सूरज की उफ़ुक़ताबी है

१-उड़ने का शौक २-नीड़-विहीन ३-बुरे विचार रखने वाला ४-शहीदों का रक्त ।

उम्मतें गुलशने हस्ती में समरचीदा भी हैं
 और महरूम समर भी हैं खिजां बीदा भी हैं
 सैकड़ों नल्ल हैं काहीदा भी बालीदा भी हैं
 सैकड़ों बत्ने चमन में अभी पोशीदा भी हैं

नल्ले इस्लाम नमूना है बरोमन्दी का
 फल है यह सैकड़ों सदियों की चमन बन्दी का

पाक है गर्वें बतन से सरे दामां तेरा
 तू वो यूसुफ है कि हर मिल् है कन्ध्रां तेरा
 क्राफिला हो न सकेगा कभी वीरां तेरा
 गंदे यक बांगे दिरा कुछ नहीं सामां तेरा

नल्ले शम्शस्ती व दर शोला बवद रेशाए तो
 अक्रिबत सोज बुवद सायाए अन्देशाए तो

तू न मिट जायेगा ईरान के मिट जाने से
 नशाए मैं को तअल्लुक नहीं पैमाने से
 है अयां यूरिशो तातार के अफसाने से
 पास्बां मिल गए काबे को सनमखाने से

कश्तिए हक का जमाने में सहारा तू है
 अखे नौ रात है धुंधला-सा सितारा तू है
 है जो हंगामा बया यूरिशो बल्गारी का
 ग्राफिलों के लिए पैगाम है बेदारी का
 तू समझता है यह सामां है दिल आज़ारी का
 इम्तेहाँ है तेरे ईसार का खुदारी का

क्यों हिरासां है सहीले फ़रसे आवा से
 नूरे हक बुझ न सकेगा नफ़से आवा से

१—तू दीपक का वृक्ष है और तेरी जड़ें शोला में दौड़ती हैं ३—तेरी चिंता की
 छांव परिणामनाशक होती है ।

चश्मे अक़वाम से मलफ़ी है हक़ीक़त तेरी
है अभी महफ़िले हस्ती को ज़रूरत तेरी
ज़िन्दा रखती है ज़माने को ह्रारत तेरी
कौकबे किस्मते इम्कां है ख़िलाफ़त तेरी

वक़ते फ़ुर्सत है कहाँ, काम अभी बाक़ी है
नूरे तौहीद का इत्माय अभी बाक़ी है
मिस्ले बू क्रैद है गुंचे में परीशां हो जा
रखत बरदोश हवाए चमनिस्तां हो जा
है तुनुक माया तो ज़र्रे से बियाबां होजा
नगमए मौज से हंगामए तूफ़ां होजा

कुव्वते इश्क़ से हर पस्त को बाला कर दे
बहल में इस्मे मुहम्मद से उजाला कर दे
हो न यह फूल तो बुलबुल का तरन्नुम^१ भी न हो
चमने बहल^२ में कलियों का तबस्सुम भी न हो
यह न साक़ी हो तो फिर मैं भी न हो ख़ुम भी न हो
बज़्मे तौहीद भी दुनिया में न हो तुम भी न हो

खेमा अफ़लाक़^३ का इस्तादा^४ इसी नाम से है
नब्बे हस्ती तपिश आमादा इसी नाम से है

दश्त में दामने कुहसार में मैदान मे है
बहल मे मौज की आग़ोश में तूफ़ान में है
चीन के शहर मराक़िश^५ के बियाबान में है
और पोशीदा मुसल्मान के ईमान में है

चश्मे अक़वाम यह नज़्ज़ारा अ़बद तक देखे
रिफ़़अते^६ शाने 'रक़अना' लक़ ज़िक़क़^७ देखें

१-गान २-ससार वाटिका ३-आकाश विवर ४-ख़डा ५-एक नगर
६-उच्चता ७-"हमने तेरे वर्णन को उच्चता प्रदान कर दी है" यह पैग़म्बरे
इस्लाम के सम्बन्ध में क़ुआन की एक आयत है ।

मर्दुमे चश्मे जमीं यानी वह काली दुनिया
वह तुम्हारे शुहबा पालने वाली दुनिया
गर्मिए मिह की पल्लुर्दा हिलाली दुनिया
इश्क वाले जिसे कहते हैं बिलाली दुनिया

तपिशअन्दोज है इस नाम से पारे की तरह
गोता जन नूर में है आख के तारे की तरह

अक्ल है तेरी सिपर, इश्क है शम्शीर तेरी
मेरे बवंश ! खिलाफत है जहाँगीर तेरी
मासिवल्लाह^१ के लिए आग है तक्बीर तेरी
तू मुसल्मां हो तो तक्वीर है तद्बीर तेरी

को मुहम्मद से बफ़ा तूने तो हम तेरे
यह जहाँ चीज है क्या लौहो क़लम^२ तेरे हैं

—००—

खिताब व जवानाने इस्लाम

(इस्लाम के जवानों से)

कभी ऐ नौजवां मुस्लिम ! तदब्बुर^३ भी किया तूने ?

वह क्या गर्दू^४ था तू जिसका है एक टूटा हुआ तारा

तुझे उस क्रौम ने पाला है आगोशे^५ मुहब्बत में
कुचल डाला था जिसने पाँव से ताजे सरे बारा^६

तमद्दुन आफ़रों अल्लाक़,^७ आईने जहाँबारी^८

वो सहराए अरब, यानी शूतुर बानों का गहवारा^९

अल्लाह के अतिरिक्त पूज्य २-ईश्वर की लेखनी और भाग्य पुस्तक
चिंतन ४-आकाश ५-गोद ६-एक प्रसिद्ध बादशाह ७-नागरिकता
पन्न करने वाला स्वभाव ८-शासन-विधान ९-झूला ।

समां “अल्फ़क्रे फ़लरी”^१ का रहा शाने अमारत^२ में
 “ब आबोरंगो, खालो खत, चे हाजत रूप ज़ेबा रा”^३
 गवाई^४ में भी वह अल्लाह वाले थे गयूर^५ इतने
 कि मुनइम^६ को गदा^७ के डर से बहिशश^८ का न था यारा^९
 गरज मैं क्या कहूं तुझसे कि वह सहरा नशों क्या थे
 जहांगीरो^{१०} जहांदारो जहांबानो जहानआरा^{११}
 अगर चाहूं तो नक्शा खींच कर अल्फ़ाज में रखूं
 मगर तेरे तख़य्युल^{१२} से फ़ज़ूतर^{१३} है वो नज़्ज़ारा
 तुझे आबा^{१४} से अपने कोई निस्बत हो नहीं सकती
 कि तू गुफ़्तार^{१५}, वह किर्दार^{१६}, तू साबित^{१७}, वह सय्यारा^{१८}
 गंवा दी हमने जो अस्लाफ़^{१९} से मीरास पाई थी
 सुरय्या से ज़मीं पर आस्मां ने हमको दे मारा
 हुक्मूत का तो क्या रोना कि वह एक आरिज़ी^{२०} शं थी
 नहीं दुनिया के आईने मुसल्लम^{२१} से कोई चारा
 मगर वह इल्म के मोती, किताबें अपने आबा की
 जो देखें उनको योरूप में तो दिल होता है सीपारा^{२२}
 “गनी रोज़े सियाहे पीर कन्आं रा तमाशा कुन”^{२३}
 कि नूरे दीबाअश रौशन कुनद चश्मे जुलेखा रा^{२४} ॥

—:०:—

१-हज़रत मुहम्मद साहब का कथन कि “निर्धनता मेरा गौरव है” २-अमीरी
 ३-सुन्दर मुखड़े के लिए बनाव-सिगार की क्या आवश्यकता ४-दीन दशा
 ५-स्वाभिमानी ६-धनी ७-दीन ८-दान ९-साहस १०-संसार विजयी
 ११-संसार को सजाने वाला १२-कल्पना १३-अधिकतर १४-पूर्वज
 १५-बात १६-कर्म १७-अचल नक्षत्र १८-चल नक्षत्र १९-पूर्वज
 २०-अस्थायी २१-सर्वमान्य नियम २२-तीस टुकड़े २३-ऐ गनी ! कन्आ नगर
 के बूढ़े याकूब के दुर्भाग्य को देख २४-कि उसके नेत्र की ज्योति मिस्र की स्त्री
 जुलेखा की आँख को प्रकाशमान कर रही है ।

तरानए मिल्ली

चीनो अरब हमारा, हिन्दोस्तां हमारा !
 मुस्लिम हैं हम वतन है सारा जहां हमारा
 तौहीद^१ की अमानत सीनों में है हमारे
 आसां नहीं मिटाना नामो निशां हमारा
 दुनिया के बुतकदों^२ में पहला वह घर खुदा का
 हम उसके पासबां है वह पासबां^३ हमारा
 तेगों के साये में हम पलकर जवां हुए हैं
 खंजर हिलाल का है कौमी निशां हमारा
 मगरिब^४ की वादियों में गूंजी अज़ां हमारी
 थमदा न था किसी से सैले रवां^५ हमारा
 बातिल^६ से दबने वाले ऐ आसमां नहीं हम
 सौ बार कर चुका है तू इस्तेहां हमारा
 ऐ गुलसिताने उन्दुल्स^७ ! वह दिन है याद तुझको
 था तेरी डालियों में जब आशियां हमारा !
 ऐ मौजे दज़्ला^८ ! तू भी पहचानती है हमको
 अबतक है तेरा दरिया अफ़सानाखां^९ हमारा
 ऐ अर्ज़े^{१०} पाक ! तेरी हुर्मत^{११} पे कट मरे हम
 है खूं तेरी रगों में अब तक रवां हमारा
 सालारे^{१२} कारवा है मोरे हिजाज़^{१३} अपना
 इस नाम से है बाक़ी आरामे जां हमारा
 'इक़बाल' का तराना बांगे दिरा^{१४} है गया
 होता है जादा पैमा^{१५} फिर कारवां हमारा

१-एकेश्वरवाद २-मूर्ति गृहों ३-रक्षक ४-योरूप ५-धारा ६-असत्य
 ७-स्पेन ८-इराक़ देश की एक नदी ९-कहानी कहने वाला १०-अरब की
 पवित्र भूमि ११-सम्मान १२-नेता १३-अरब के सर्दार अर्थात् हज़रत पैग़म्बरे
 इस्लाम १४-क्राफ़िला के यात्रा आरंभ की घोषणा १५-पथगामी ।

दुआ (ईश्वर प्रार्थना)

या रब ! दिले मुस्लिम को वह जिन्दा तमन्ना दे
 जो क़ल्ब^१ को गर्मा दे जो रूह^२ को तड़पा दे
 फिर वादिए^३ फ़ारा^४ के हर ज़र्रे को चमका दे
 फिर शौक़े तमाशा दे फिर जौक़े तक्राजा दे
 महल्ले तमाशा^५ को फिर बीदए बीना^६ दे
 देखा है जो कुछ मंने औरों को भी दिखला दे
 भटके हुए आहू^७ को फिर सूप हरम^८ ले चल
 इस शहर के खूगर^९ को फिर वुस्त्रते सहरा^{१०} दे
 पैदा दिले वीरां में फिर शोरिशे महशर^{११} कर
 इस महमिले खाली को फिर शाहिदे^{१२} लैला दे
 इस दौर^{१३} की जुल्मत में हर क़ल्बे परेशां को
 वह दागे मुहब्बत दे जो चांद को शर्मा दे
 रिफ़अत में मकासिद^{१४} को हमदोशे^{१५} सुरय्या^{१६} कर
 खुद्दारिए साहिल^{१७} दे आज़ादिए दरिया दे
 बेलीस^{१८} मुहब्बत हो बेबाक सदाक़त हो
 सीनों में उजाला कर, दिल सूरते मीना^{१९} दे
 एहसास इनायत कर आसारे मुसीबत का
 इन्जो^{२०} की शोरिश^{२१} में अन्देशए फ़र्दा^{२२} दे ।
 में बुलबुले नालां हूँ इक उजड़े गुलिस्तां का
 तासीर^{२३} का सायल हूँ मुहताज को दाता दे

१—हृदय २—प्राण ३—घाटी ४—अरब देश का एक पर्वत ५—दर्शन से वंचित ६—दिव्य-
 दर्शी नेत्र ७—मृग ८—काबा की ओर ९—अभ्यस्त १०—वन की विशालता ११—
 प्रलय का कोलाहल १२—प्रेमिका १३—युग १४—उद्देश्यों १५—समकक्ष १६—एक
 उच्चतम नक्षत्र १७—नदी तट का स्वाभिमान १८—निर्लिप्त १९—मदिरा की सुराही
 के समान २०—वर्तमान २१—कोलाहल २२—भविष्य की चिन्ता २३—प्रभाव ।

क़ता

कल एक शोरीदा^१ खाबगाहे नबी^२ पे रो रो के कह रहा था
 कि मिलो हिन्दोस्तां के मुस्लिम बिनाए मिल्लत^३ मिटा रहे हैं
 ये जायराने हरीमे मगरिब^४ हज़ार रहबर बनें हमारे
 हमें भला इनसे वास्ता क्या जो तुमसे नाआश्ना रहे हैं
 ग़ज़ब हैं यह “मुशिदाने खुवबीं”^५ खुदा तेरी क़ौम को बचाये
 बिगाड़ कर तेरे मुस्लिमों को यह अपनी इज़्ज़त बना रहे हैं
 सुनेगा “इक़बाल” कौन इनको यह अंजुमन ही बदल गई है
 नए ज़माने में आप हमको पुरानी बातें सुना रहे हैं

—:०:—

गररए शब्वाल

या

ईद का चाँद

गररए शब्वाल^१ ! ऐ नूरे निगाहे रोज़ादार !
 आ, कि ये तेरे लिये मुस्लिम सरापा इतिज़ार
 तेरी पेशानी पे तहरीरे पयामे ईद है
 शाम तेरी क्या है मुबहे ऐश की तम्हीब^२ है
 सर्गुज़श्ते मिल्लते बैज़ा^३ का तू आईना है
 ऐ महे नौ^४ ! हम को तुमसे उल्फ़ते बेरीना^५ है
 जिस अलम^६ के साये में तेरा आज़मा^७ होते थे हम
 दुश्मनों के खून से रंगीं क़बा^८ होते थे हम

१—पागल २—पैग़म्बर साहब की समाधि ३—धर्म का आधार ४—योरूप के यात्री
 ५—स्वार्थी गुरुजन ६—ईद के चाँद ७—भूमिका ८—मुस्लिम जाति की आत्मकथा
 ९—नवशशि १०—चिरकालीन प्रेम ११—ध्वज १२—युद्धरत १३—वस्त्र-रंजित।

तेरी क्रिस्मत में हम आगोशी^१ उसी रायत^२ की है
 हुस्ने रोज़अफ़ज़ू^३ से तेरे आबरू मिल्लत^४ की है
 आइना पर्वर^५ है क़ौम अपनी, वफ़ा आई^६ तेरा
 है मुहब्बत ख़ेज^७ यह पैराहने सीमी^८ तेरा

औजे गर्दू^९ से ज़रा दुनिया की बस्ती देख ल
 अपनी रिफ़अत^{१०} से हमारे घर की पस्ती^{११} देख ले

क्राफिले देख और उनकी बर्क़ रफ़्तारी^{१२} भी देख
 रहरवे बर्मादा^{१३} की मंज़िल से बेजारी^{१४} भी देख
 देखकर तुझको उफ़ुक^{१५} पर हम लुटाते थे गुहर^{१६}
 ऐ तही सागर^{१७} ! हमारी आज नाबारी^{१८} भी देख
 फ़िक़्रा आराई^{१९} की जंजीरों में हैं मुस्लिम असीर^{२०}
 अपनी आज़ाबी भी देख, उनकी गिरफ़्तारी भी देख
 देख मस्जिद में शिकस्ते^{२१} रिश्तए तस्बीहे शौख
 बुतकदे^{२२} में बर्हमन की पुख़्ता जुझारी^{२३} भी देख
 काफ़िरों की मुस्लिम आईनी^{२४} का भी नज़्जारा कर
 और अपने मुस्लिमों की मुस्लिम आज़ारी^{२५} भी देख
 बारिशो संगे हवाबिस^{२६} का तमाशाई भी हो
 उम्मते मर्हम^{२७} की आईना बीवारी^{२८} भी देख
 हाँ तमल्लुक़ पेदागी^{२९} देख आबरू वालों की तू
 और जो बे आबरू थे, उनकी खुदारी^{३०} भी देख

१-आर्लिगन २-पताका ३-परिवर्द्धनशील सौन्दर्य ४-जाति ५-मित्र का आदर करने वाला ६-नियम ७-प्रेमजनक ८-रजत वस्त्र ९-आकाश की ऊँचाई १०-उच्चता ११-निम्नता १२-विद्युत गति १३-विवश पथिक १४-उदासीनता १५-क्षितिज १६-मोती १७-शून्य पात्र १८-दीनता १९-दल बन्दी २०-वन्दी २१-टूटना २२-मन्दिर २३-धर्म पर निष्ठा २४-मुसलमानों का चलन २५-मुस्लिम को कष्ट देना २६-दुर्घटनाओं के पत्थर २७-मरी हुई मुस्लिम जाति २८-शीशे के घर में रहना २९-चापलसी ३०-आत्म सम्मान ।

जिसको हमने आशना^१ लुफ्फे तकल्लुम^२ से किया
 उस हरीफे^३ बेजुबां की गर्म गुप्तारी^४ भी देख
 साजे इश्रत^५ की सबा^६, मारिब^७ के ऐबानों^८ में सुन
 और ईरां में जरा मातम की तैय्यारी भी देख
 चाक कर दो तुर्क नावां ने खिलाफत की क़बा^९
 साबगी मुस्लिम की देख औरों की अय्यारी भी देख

सूरते^{१०} आईना सब कुछ देख और ख़ामोश रह
 शोरिशे इम्नोज^{११} में मह्वे सुरूदे दोश^{१२} रह

—००—

सिक्लीया

(सिसिली द्वीप)

रो ले अब दिल खोलकर ऐ दीवए खूनाबा बार^{१३}

वह नज़र आता है तहज़ीबे हिजाज़ी^{१४} का मज़ार

था यहां हंगामा उन सह्रा नशीनों^{१५} का कभी

बहुर बाज़ीगाह^{१६} था जिनके सफ़ीनों^{१७} का कभी

जलज़ले जिन से शहन्शाहों के दरबारों में थे

बिजलियों के आशियाने जिन की तलवारों में थे

इक जहाने ताज़ा^{१८} का पैग़ाम था जिन का जुहर^{१९}

खा गई अल्ले कुहन^{२०} को जिन की तेगे ना मुबूर^{२१}

१-परिचित २-वार्ता ३-प्रतिद्वन्दी ४-वार्ता की कटुता ५-आनन्द वाद्य ६-स्वर
 ७-योरूप ८-भवनों ९-परिधान १०-समान ११-वर्तमान के कोलाहल
 १२-भविष्य-संगीत लीन १३-रक्त वर्षक आँख १४-अरब-सम्पत्ता १५-वन
 निवासियों १६-खेल का स्थान १७-जलं पोत १८-नवीन संसार
 १९-आविर्भाव २०-पुरातन काल २१-व्याकुल तलवार ।

मुर्दा आलम^१ खिन्दा जिनकी शोरिशो क्रुम^२ से हुआ
 आदमी आजाब जंजीरे तबह^३ क्रुम^३ से हुआ
 गलालों^४ से जिसके लज्जतगीर^५ अब तक गोश^६ है
 क्या वो तक्बीर अब हमेशा के लिए खामोश है ?
 आह ! ऐ सिस्ली ! समुन्दर की है तुझसे आबरू
 रहनुमा^७ की तरह इस पानी के सहारा में है तू
 जेब^८ तेरे खाल^९ से रुहसारे^{१०} बरिया को रहे
 तेरी शम्ओं से तसल्ली बह पैंमा^{११} को रहे
 हो सुबुक^{१२} चश्मे मुसाफिर पर तेरा मंजर^{१३} मुदाम^{१४}
 मौजे^{१५} रक्सां तेरे साहिल^{१६} की चटानों पर मुदाम
 तू कभी उस क़ौम की तहजीब का गह्वारा^{१७} था
 हुस्ने आलम सोज^{१८} जिसका आतशे नज्जारा^{१९} था
 नालाकश^{२०} शीराज^{२१} का बुलबुल^{२२} हुआ बग़दाद^{२३} पर
 वाग़^{२४} रोया खून के आँसू जहानाबाद^{२५} पर
 आस्मां ने दौलते गर्नाता^{२६} जब बर्बाद की
 इब्ने बद्रू^{२७} के बिले नाशाद ने फ़रियाद की
 राम नसीब 'इक़बाल' को बलशा गया मातम बेरा
 चुन लिया स़क्रवीर ने वह बिल कि बा महरम^{२८} तेरा
 है तेरे आसार में पोशीदा किसकी वास्तां
 तेरे साहिल की खमोशी में है अन्दाजे^{२९} बयां

-
- १-संसार २-'उठ' शब्द के कोलाहल ३-अन्ध विश्वास ४-ख्याति कोलाहल
 ५-आनन्दित ६-कर्ण ७-पथ प्रदर्शक ८-शोभा ९-तिल १०-कपोल ११-जल
 पथिक अर्थात् जल पोत १२-सरल १३-दृश्य १४-सर्वदा १५-नाचती लहरें
 १६-तट १७-झूला १८-संसार दाहक १९-दर्शन अग्नि २०-विलापकारी
 २१-ईरान का एक नगर २२-प्रसिद्ध फ़ारसी कवि शेख़सादी २३-एक
 नगर जिसे तातारियों ने उजाड़ डाला था २४-प्रसिद्ध कवि २५-दिल्ली
 २६-स्पेन का प्रसिद्ध नगर २७-एक अरबी कवि २८-मर्मज्ञ २९-वातों का ढंग ।

बर्ब अपना मुझसे कह, मैं भी सरापा बर्ब हूँ
जिसकी तू मंजिल था मैं उस कारवां की गर्ब हूँ

रंग तस्वीरे कुहन^१ में भर के बिखला दे मुझे
किस्सा अय्यामे सलफ़^२ का कह के तड़पा दे मुझे
मैं तेरा तोहफ़ा सूए^३ हिन्दोस्तां ले जाऊँगा
खुब यहाँ रोता हूँ औरों को वहाँ रलवाऊँगा

दयूँजए खिलाफ़त

अगर मुल्क हाथों से जाता है जाए
तू अहकामे हक़^४ से न कर बेवफ़ाई
नहीं तुझको तारीख़ से आगही^५ क्या
खिलाफ़त की करने लगा तू गबाई^६
खरीबें न हम जिसको अपने लहू से
मुसल्मां को है नंग^७ वह पावसाई^८

मरा अज शिकस्तन चुनां आर नआयब^९
कि अज वीगरां खास्तन मोमयाई^{१०}

१-पुरानी २-बीते हुए दिन ३-ओर ४-ईश्वरीय आदेशों ५-जानकारी
६-भिक्षा याचना ७-लज्जाजनक ८-बादशाही ९-मुझे टूट जाने में
उतनी लज्जा नहीं लगती १०-जितनी कि दूसरों से उसकी औषधि माँगने
में अनुभव होती है ।

अलीगढ़ विद्यालय के छात्रों के नाम

औरों का है पयाम^१ और, मेरा पयाम और है

इश्क के दर्द मन्द का तर्जें कलाम^२ और है

तायरे जेरे दाम^३ के नाले^४ तो [सुन चुके हो तुम

यह भी सुनो कि नालए तायरे बाम^५ और है

आती थी कोह से सबा,^६ राजे हयात^७ है मुकूँ,^८

कहता था मोरे नातवां^९ लुत्फे खराम^{१०} और है

जखे हरम^{११} से है फ़रोग^{१२}, अंजुमने हिजाज^{१३} का]

उस का मक्काम^{१४} और है उसका निजाम^{१५} और है ।

मौत है ऐशे जाविदां^{१६}, जौके तलब^{१७} अगर न हो

गर्दिशे^{१८} आदम है और, गर्दिशे जाम और है ।

शमए सहर^{१९} यह कह गई सोज^{२०} है जिन्दगी का साज^{२१}

ग़म कदए नुमूद^{२२} में शर्ते बवाम^{२३} और है ।

बादा^{२४} है नीम रस^{२५} अभी, शौक्र है नारसा^{२६} अभी,

रहने बो ख़ुम^{२७} के सर पे तुम ख़िश्ते कलीसिया^{२८} अभी ।

- १-सन्देश २-वार्ता शैली ३-जाल में फंसा पक्षी ४-विलाप ५-मुक्त पक्षी जो छत पर बैठा हो ६-आवाज ७-जीवन रहस्य ८-शान्ति ९-दुर्बल चिड़टी १०-गति का आनन्द ११-काबा का आकर्षण १२-विकास १३-अरब देश की सभा १४-स्थान १५-प्रबन्ध १६-स्थायी सुख १७-याचना का स्वभाव १८-चक्कर घूमना १९-प्रभात दीप २०-जलना २१-सुख २२-अस्तित्व का शोकालय अर्थ संसार २३-स्थायित्व का नियम २४-शराब २५-अर्द्ध-पक्व २६-अपूर्ण २७-शराब का घड़ा २८-गिर्जा की ईंटे ।

गज़लियात

(१)

गुल्ज़ारे हस्तोबूद^१ न बेगानावार^२ देख
है देखने की चीज़ उसे बार बार देख
आया है तू जहान में मिस्ले शरार^३ देख
दम दे न जाए हस्तीए नापाएदार^४ देख
माना कि तेरी दीद^५ के क़ाबिल नहीं हूँ मैं
तू मेरा शौक़ देख मेरा इन्तेज़ार देख

खोली है जौक़े दीद^६ ने आँखें तेरी अगर,
हर रहगुज़ार^७ में नक़्शे क़फ़ पाए यार^८ देख

(२)

न आते हमें इसमें तक़रार क्या थी
मगर वादा करते हुए आर^९ क्या थी
तुम्हारे पयामी^{१०} ने सब राज़ खोला
ख़ता इसमें बन्दे की सरकार क्या थी
भरी बज़म^{११} में अपने आशिक़ को ताड़ा
तेरी आँख मस्ती में हुशियार क्या थी
तअम्मुल तो था उनको आने में क़ासिद^{१२}
मगर यह बता तज्जें इन्कार क्या थी
खिचे खुद-ब-खुद जानिबे तूर^{१३} मूसा^{१४}
कशिश^{१५} तेरी ऐ शौक़े दीदार क्या थी

कहीं ज़िक़्र रहता है 'इक़बाल' तेरा
फ़सू^{१६} था कोई, तेरी गुफ़्तार^{१७} क्या थी

१-संसार २-अपरिचित के सामान ३-चिंगारी ४-अस्थायी जीवन ५-दर्शन
६-दर्शन-कामना ७-पथ ८-प्रीतम का पदचिह्न ९-संकोच १०-सन्देश
वाहक ११-सभा १२-सन्देश वाहक १३-एक पर्वत १४-एक पैग़म्बर
१५-आकर्षण १६-जादू १७-वार्ता ।

(३)

लाऊँ वह तिनके कहीं से आशियाने के लिए
 बिजलियाँ बेताब हों जिनको जलाने के लिए
 वाए नाकामी, फ़लक ने ताककर तोड़ा उसे
 मैंने जिस डाली को ताड़ा आशियाने के लिए
 आँख मिल जाती है हफ़तादो दो^१ मिल्लत से तेरी
 एक पैमाना तेरा सारे जमाने के लिए
 दिल में कोई इस तरह की आर्जू पूरी करूँ
 टूट जाए आस्मां मेरे मिटाने के लिए
 जम्भ्र कर ख़िर्मन^२ तो पहले दाना दाना चुन के तू
 आ ही निकलेगी कोई बिजली जलाने के लिए
 पास था नाकामिए सय्याद^३ का ऐ हमसफ़ीर^४
 वर्ना में श्रीर उड़ के आता एक दाने के लिए ?

इस चमन में मुग़ों दिल^५ गाए न आज़ादी का गीत
 आह ! यह गुलशन नहीं ऐसे तराने के लिए ।

(४)

क्या कहूँ अपने चमन से मैं जुदा क्योंकर हुआ
 और असीरे हलकए दामे हवा^१ क्योंकर हुआ
 जाए हैरत^२ है, बुरा सारे जमाने का हूँ मैं
 मुझको यह खलअत^३ शराफ़त का अता क्योंकर हुआ
 कुछ दिखाने देखने का था तक्राज़ा तुर पर
 क्या ख़बर है तुझको ऐ दिल फ़ैस्ता क्योंकर हुआ

१-बहतर सम्प्रदाय २-खलियान ३-आखेटक ४-साथी ५-हृदय का पंछी ६-इच्छाओं के जाल के घेरे का बन्दी ७-आश्चर्य का स्थान ८-राज प्रदत्त वस्त्र ।

है तलब^१ बे मुद्ग्रा^२ होने की भी इक मुद्ग्रा
 मुर्शि दिल^३ दामे तमन्ना^४ से रिहा^५ क्योंकर हुआ
 देखने वाले यहाँ भी देख लेते हैं तुझे
 फिर यह वादा हश् का सन्न आज़मा^६ क्योंकर हुआ
 हुस्ने कामिल ही न हो इस बे हिजाबी^७ का सबब
 वह जो था पर्वों में पिन्हां^८ खुद नुमा^९ क्योंकर हुआ
 मौत का नुस्खा अभी बाक़ी है ऐ दर्व फ़िराक^{१०}
 चारागर^{११} दीवाना है मैं ला-दवा क्योंकर हुआ
 तूने देखा है कभी ऐ दीदए इबरत^{१२} कि, गुल^{१३}
 हो के पैदा खाक से रंगीं क़बा^{१४} क्योंकर हुआ
 पुसिशे आमाल^{१५} से मक्सद था, रुस्वाई मेरी
 वर्ना जाहिर था सभी कुछ, क्या हुआ, क्योंकर हुआ

मेरे मिटने का तमाशा देखने की चीज़ थी
 क्या बताऊँ उनका मेरा सामना क्योंकर हुआ

(५)

अनोखी वज़्र^{१६} है सारे जमाने से निराले हैं
 ये आशिक़ कौन-सी बस्ती के यारब रहने वाले हैं
 इलाज़े दर्द में भी दर्द की लज़ज़त पे मरता हूँ
 जो थे छालों में काँटे नोके सूज़न^{१७} से निकाले हैं
 फला फूला रहे यारब, चमन मेरी उमीदों का
 ज़िगर का खून दे देकर ये बूटे मने पाले हैं
 रुलाती है मुझे रातों को ख़ामोशी सितारों की
 निराला इशक़ है मेरा, निराले मेरे नाले हैं

१-माँग २-निरुद्देश्य ३-हृदय का पंछी ४-कामना के जाल ५-मुक्त
 ६-धैर्य परीक्षक ७-अनावरण होना ८-छिपा ९-आत्म प्रदर्शक
 १०-विरह-व्यथा ११-चिकित्सक १२-उपदेश ग्राही आँख १३-फूल १४-
 रंगीन वस्त्रधारी १५-कर्मों के सम्बन्ध में पूछताछ १६-रीति १७-सूई ।

न पूछो मुझसे लज्जत खानुमां बब-
नशेमन^१ सैकड़ों मैंने बनाकर फूंक डाले हे
नहीं बेगानगी अच्छी, रफ़ीक़े राहे मंजिल^२ से
ठहर जा ऐ शरर^३, हम भी तो आखिर मिटने वाले हैं
उमीदे हूर^४ ने सब कुछ सिखा रक्खा है वाइज़^५ को
ये हज़रत देखने में सीधे सादे भोले भाले हैं

मेरे अशआर ऐ 'इक्बाल' क्यों प्यारे न हों मुझको
मेरे टूटे हुए दिल के यह बर्ब-अंगेज़ नाले हैं

(६)

जाहिर की आंख से न तमाशा करे कोई
हो देखना तो दीदए दिल वा^६ करे कोई
मन्सूर^७ को हुवा लबे गोया^८ पयामे मौत
अब क्या किसी के इश्क़ का दावा करे कोई
हो दीद का जो शौक्र तो आंखों को बन्द कर
है देखना यही कि न देखा करे कोई
मं इन्तेहाए इश्क़^९ हूँ तू इन्तेहाए हुस्न^{१०}
देखे मुझे कि तुझको तमाशा करे कोई
उज़्र आफ़रीने जुमें मुहब्बत है हुस्ने बोस्त^{११}
महशर^{१२} में उज़्रे ताज़ा^{१३} न पैदा करे कोई
छिपती नहीं है यह निगहे-शौक्र^{१४} हमनशी^{१५} !
फिर और किस तरह इन्हें देखा करे कोई
अड़ बंटे क्या समझ के भला तूर पर कलीम
ताक़त हो दीद की तो तक्राज़ा करे कोई

१-बे घर २-तीड़ ३-सहयात्री ४-अग्निकण ५-स्वर्ग सुन्दरी ६-उपदेशक ७-खोले
८-एक प्रसिद्ध संत ९-वक्ता-अधर १०-प्रेम की पराकाष्ठा ११-सौन्दर्य की
पराकाष्ठा १२-प्रेमिका का सौन्दर्य प्रेम अपराध का कारण उत्पन्न करने
वाला है १३-प्रलय स्थल १४-नया बहाना १५-उत्सुक दृष्टि १६-साथी ।

नज़ारे^१ को य जुबिशे मिज़्गां^२ भी बार है
 नगिस की आँख से तुझे देखा करे कोई
 खुल जाएं क्या मजे हैं तमन्नाए शौक्र में
 दो चार दिन जो मेरी तमन्ना करे कोई

(७)

जिन्हें मैं दूँदता था आस्मानों में ज़मीनों में !
 वह निकले मेरे जुल्मत खानए^३ दिल के मकीनों^४ में
 हकीकत अपनी आँखों पर नुमाया^५ जब हुई अपनी
 मकां निकला हमारा खानए दिल के मकीनों में
 अगर कुछ आशना^६ होता मजाके जुब्ह साईं^७ से
 तो संगे आस्ताने^८ काबा जा मिलता जबीनों^९ में
 कभी अपना भी नज़ारा किया है तूने ऐ मज्नुं !
 फिलैला की तरह तू खुद भी है महमिल नशीनों में
 महीने वस्ल के घड़ियों की सूरत उड़ते जाते हैं
 मगर घड़ियाँ जुदाई की गुज़रती हैं महीनों में
 मुझे रोकेंगा तू ऐ नाखुदा^{१०} क्या राक होने^{११} से
 कि जिनको डूबना हो डूब जाते हैं सफ़ीनों^{१२} में
 छिपाया हुस्न को अपने, कलीमुल्लाह^{१३} से जिसने
 वही नज़ आफ़रीं^{१४} है जल्वा पैरा^{१५} नाज़नीनों में
 जला सकती है शम्ए कुस्ता^{१६} को मौजे नफ़स^{१७} उनकी
 इलाही ! क्या छिपा होता है अह्ले दिल के सीनों में
 तमन्ना दर्विल की हो तो कर खिदमत फ़कीरों की
 नहीं मिलता यह गौहर बादशाहों के ख़जीनों में

१-दर्शन २-पलक का हिलना ३-हृदय के तिमिर गृह ४-वासिय ५-प्रकट
 ६-परिचित ७-माथा रगड़ने के आनन्द ८-चौखट का पत्थर ९-मस्तकों
 १०-नाविक ११-डूबने १२-नौकाओं १३-मूसा पैगम्बर १४-रूपगर्विता
 १५-छविमान १६-बुझे दीपक १७-साँस की लहर ।

न पूछ इन खिर्रा पोशों^१ की, इराबत^३ हो तो देख इनको
यदे बैजा^२ लिए बैठे हैं अपनी आस्तीनों में
तरसती हैं निगाहें नारसा जिसके नजारे को
वह रौनक अंजुमन की है इन्हीं खल्वत गुजीनों^४ में
किसी ऐसे शरर में फूंक अपने खिर्रने दिलको^५
कि खुशीदे क्रियामत भी हो तेरे खोशा चीनों में
मुहब्बत के लिये दिल ढूँढ़ कोई टूटने वाला
यह वह मैं^६ है जिसे रखते हैं नाजुक आबगीनों^७ में
सरापा हुस्न बन जाता है जिसके हुस्न का आशिक
भला ऐ दिल हसीन ऐसा भी है कोई हसीनों में ?
फड़क उठ्ठा कोई तेरी अदाए 'मा अरफना'^८ पर
तेरा रुखा रहा बड़ चढ़ के सब नाज आफरीनों में
नुमाया^९ होके दिखलावे कभी उनको जमाल^{१०} अपना
बहुत मुद्दत से चरचे हैं तेरे, बारीक बीनों में
खमोश ऐ दिल! भरी महफ़िल में चिल्लाना नहीं अच्छा
अदब पहला करीना^{११} है मुहब्बत के करीनों में
बुरा समझूं उन्हें, मुझ से तो ऐसा हो नहीं सकता
कि मैं खुद भी तो हूँ 'इक्बाल' अपने नुक्ता^{१२} चीनों में

(८)

तेरे इश्क की इन्तिहा चाहता हूँ
मेरी सादगी देख क्या चाहता हूँ

१-गुदड़ी धारियों २-श्रद्धा ३-श्वेतकर, मूसा की पैगम्बरी का
ईश्वरीय चिह्न, जब वह हाथ सामने करते थे तो वह प्रकाश मान दिखाई
देता था ४-एकान्तवासियों ५-हृदय के खलियान ६-शराय ७-बोतल
८-जजरत मुहम्मद साहब का कथन है कि हे ईश्वर तुम्हारी वास्तविकता का
जिस सीमा तक परिचय प्राप्त होना चाहिये हमें न हो सका ९-प्रकट
१०-छवि ११-ढंग १२-आलोचकों ।

सितम हो कि हो वादए बेहिजाबी'
 कोई बात सब आत्मा^१ चाहता हूँ
 यह जन्नत मुबारक रहे जाहिबों^२ को
 कि मैं आप का सामना चाहता हूँ
 जरा सा तो दिल हूँ मगर शोख^३ इतना
 वही 'लन्तरानी'^४ मुना चाहता हूँ
 कोई दम का मेहमां हूँ ऐ अहले महफिल !
 चिरागो सहर^५ हूँ बुझा चाहता हूँ

भरी बज्म में राज की बात कह दी
 बड़ा बे अदब हूँ सजा चाहता हूँ

(६)

कुशादा^६ वस्ते करम^७ जब वह बे नियाज^८ करे
 नियाजमन्द^९ न क्यों आजिजी^{१०} प नाज करे
 बिठा के अर्श पे रक्सा है तूने ऐ वाएज^{११}
 खुदा वो क्या है जो बन्दों से एहतेराज^{१२} करे
 मेरी निगाह में वह रिन्द^{१३} ही नहीं साक़ी ।
 जो होशियारी व मस्ती में इम्तेयाज^{१४} करे
 मुवाम^{१५} गोश व दिल^{१६} रह यह साज है ऐसा
 जो हो शिकस्ता^{१७} तो पैदा नवाए^{१८} राज करे ।
 कोई यह पूछे कि वाएज^{१९} का क्या बिगड़ता है ?
 जो बे अमाल^{२०} पे भी रह, मत^{२१} वह बेनियाज^{२२} करे

१-अनावरण होना २-वैय्य परीक्षक ३-संयमियों ४-चंचल ५-"तू मुझे कदापि न देख सकेगा" ? ६-प्रभात दीप ७-खुला हुआ ८-कृपा का हाथ ९-बेपर्वा १०-भक्त ११-नम्रता १२-उपदेशक १३-पहँच १४-शराबी १५-विभेद १६-सदा १७-दिल पर कान लगाए १८-टूटा हुआ १९-मर्मपूर्ण स्वर २०-उपदेशक २१-कर्महीन २२-दया २३-बेपर्वाह ।

मुखन^१ में सोज^२ इलाही कहाँ से आता है ?
 यह चीज वह है कि पत्थर को भी गुवाज^३ करे
 तमीजे^४ लाला व गुल से है नालए बुलबुल
 जहाँ में वा^५ न कोई चश्मे^६ इस्तेयाज करे
 गुरुरे जुहद^७ ने सिखला दिया है वाइज^८ को
 कि बन्दगाने खुदा पर जुबां दराज करे

हवा हो ऐसी कि हिन्दोस्तां से ऐ 'इक्बाल
 उड़ा के मुझको गुबारे रहे हिजाज^९ करे

(१०)

मजनू ने शह छोड़ा तो सह्रा भी छोड़ दे
 नरज़ारे की हवस हो तो लैला भी छोड़ दे
 वाएज^{१०} कमाले तर्क से मिलती है यां मुराद
 दुनिया जो छोड़ दी है तो उक्बा^{११} भी छोड़ दे
 तक्लीद^{१२} की रविश है तो बेहतर है खुवकुशी
 रस्ता भी छोड़ खिज्र का सौदा भी छोड़ दे
 मानिन्दे^{१३} खामा तेरी जबां पर है हर्फें गैर^{१४}
 बेगाना शं पे नाजिशे बेजा^{१५} भी छोड़ दे
 लुत्फे कलाम क्या जो न हो बिल में बर्दे इश्क
 बिस्मिल^{१६} नहीं है तू, तो तड़पना भी छोड़ दे
 शन्नम की तरह फूलों पे रो, और चमन से चल
 इस बाग में कयाम^{१७} का सौदा भी छोड़ दे
 है आशिकी में रस्म अलग सबसे बैठना
 बुतखाना भी, हरम^{१८} भी, कलीसा^{१९} भी छोड़ दे

१-कविता २-ताप, गर्मी ३-पिघला दे ४-विभेद ५-खुला ६-विभेदी नेत्र
 ७-तपस्या, संयम ८-उपदेशक ९-मदीने के पथ की धूल १०-त्याग में पूर्ण होने
 ११-अमरलोक १२-अनुकरण १३-लेखनी के समान १४-अन्य की बात
 १५-अनुचित गर्व १६-घायल १७-बास करने १८-मस्जिद १९-गिरजा ।

सौदागरी नहीं यह इबादत खुदा की है
 ऐ बे खबर जजा^२ की तमन्ना भी छोड़ दे
 अच्छा है दिल के साथ रहे पास्वान अक्ल^३
 लेकिन कभी-कभी उसे तनहा^४ भी छोड़ दे
 जीना वह क्या जो हो नफ़से गैर^५ पर मदार^६
 शहरत की ज़िन्दगी का भरोसा भी छोड़ दे
 शोखी सी है सवाले मुकर्रर^७ में ऐ कलीम ?
 शर्ते रजा^८ यह है कि तक्राजा भी छोड़ दे

वाएज़^९ सबूत लाए जो मै^{१०} के जवाज़^{१०} में
 'इकबाल' को यह ज़िद है कि पीना भी छोड़ दे

ग़ज़लियात

(१)

ज़िन्दगी इंसों की इक दम के सिवा कुछ भी नहीं
 दम हवा की मौज है, रम^{११} के सिवा कुछ भी नहीं
 गुल तबस्सुम^{१२} कह रहा था ज़िन्दगानी को मगर
 शमश्र बोली, गिरिये शम^{१३} के सिवा कुछ भी नहीं
 राजे हस्ती राज है जब तक कोई महरम^{१४} न हो
 खुल गया जिस दम, तो महरम के सिवा कुछ भी नहीं

जाएराने काबा से 'इकबाल' यह पूछे कोई ।

क्या हरम^{१५} का तुहफ़ा ज़मज़म^{१६} के सिवा कुछ भी नहीं

- १-बदला २-बुद्धि का रक्षक ३-अकेला ४-अन्य प्राणी ५-आधार ६-पुनः
 प्रश्न करने ७-ईश्वर की इच्छा पर संतुष्ट रहना ८-उपदेशक ९-शराब
 १०-अर्वाजित होने ११-पलायन १२-मुस्कान १३-शोक रुदन १४-मर्मज्ञ
 १५-काबा १६-काबा के कुएँ का पानी ।

(२)

इलाही अक्ले खजस्तापा^१ को ज़रा सी दीवानगी सिखादे
उसे है सौदाए^२ बखिया कारी, मुझे सरे पंरहन नहीं है
मिले मुहब्बत का सोज मुझको, तो बोले सुबहे अजल^३ फ़रिश्ते
मिसाले शमए मज़ार है तू, तेरी कोई अंजुमन नहीं है

यहाँ कहाँ हम नफ़स मयस्सर, ये देस ना आशना है ऐ दिल !
वो चीज़ तू मांगता है मुझसे कि ज़ेरे चख़ें कुहन^४ नहीं है ।
निराला सारे जहाँ से उसको अरब के मेमार^५ ने बनाया
बिना^६ हमारे हिसारे मिलत^७ की इत्तिहादे वतन नहीं है

कहाँ का आना, कहाँ का जाना, फ़रेब है इम्तियाज़े उक्बा^८
नुमूद^९ हर शौ में है हमारी, कहीं हमारा वतन नहीं है
मुदीरे^{१०} 'मस्जज़न' से कोई 'इषबाल' जा के मेरा पयाम कहे
जो काम कुछ कर रही है क़ौमों, उन्हें मज़ाक़े सुखन नहीं है

(३)

जमाना देखेगा जब भिरे दिल से महशर^{११} उट्टेगा गुप्तुगू का
मिरी ख़मोशी नहीं है गोया मज़ार है हफ़े आज़ू का
जो मौज़े दरिया लगी ये कहने सफ़र से कायम है शान मेरी
गुहर^{१२} ये बोला, सबक़^{१३} नशीनी है मुझको सामान आबरू का

न होतबीयत ही जिनकी क़ाबिल वो तबियत^{१४} से नहीं संवरते
हुवा न सरसब्ज़^{१५} रह के पानी में अवस^{१६} सर्वे^{१७} किनारेजू^{१८} का
कोई दिल ऐसा नज़र न आया, न जिसमें ख़ाबीदा^{१९} हो तमन्ना
इलाही ! तेरा जहान क्या है, निगार ख़ाना^{२०} है आज़ू का

१-पुण्यपद २-धुन ३-सृष्टि आरम्भ ४-पुरातन आकाश ५-निर्माता अर्थ
पैगम्बरे इस्लाम ६-नींव ७-धर्म प्राचीर ८-परलोक-भेद ९-अस्तित्व
१०-संपादक ११-प्रलय १२-मोती १३-सीप १४-शिक्षा-दीक्षा १५-हरा भरा
१६-प्रतिबिम्ब १७-एक वृक्ष १८-नदी १९-निद्रित २०-चित्रशाला ।

खुला ये मर कर कि जिन्दगी अपनी थी तिलिस्मे हवस^१ सरापा
जिसे समझते थे जिस्मे खाकी^२, गुबार था कूए आज़ू^३ का
अगर कोई शै नहीं है पिन्हां^४, तो क्यों सरापा तलाश हूँ मैं ?
निगह को नज्जारे की तमन्ना है, दिल को सौदा है जुस्तुजू^५ का

चमन में गुलचीं से गुन्चा कहता था, इतना बेदर्द क्यों है इन्सां ?

तेरी निगाहों में है तबस्सुम, शिकस्ता^६ होना मेरे सुबू^७ का
रियाजे हस्ती^८ के जर्रे-जर्रे से है मुहब्बत का जल्वा पंदा
हकीकते गुल को तू जो समझे, तो यह भी पैमां^९ है रंगो बू का

तमाम मझूं मेरे पुराने, कलाम मेरा खता सरापा
हुनर कोई देखता है मुझमें, तो ऐब है मेरे ऐबजू^{१०} का
सिपास^{११} शर्ते अदब है वर्ना, करम तेरा है सितम से बढ़कर
जरा सा इक दिल दिया है, वह भी, फ़रेब खुर्दा^{१२} है आज़ू का

कमाले वहदत अयां^{१३} है ऐसा कि नोके नश्तर से तू जो छेड़े
यकीं है मुझको गिरे रगे गुल से क़तरा इंसान के लहू का
गया है तकलीद^{१४} का ज़माना, मजाज^{१५} रस्ते^{१६} सफ़र उठाए
हुई हकीकत ही जब नुमायां^{१७} तो किसको यारा^{१८} है गुफ़्तुगू का ?

जो घर से 'इकबाल' दूर हूँ मैं, तो हों न महज़ू^{१९} अज़ीज़ मेरे
मिसाले गौहर बतन की फ़ुर्क़त कमाल है मेरी आबरू का

(४)

चमक तेरी अयां, बिजली में, आतिश^{२०} में, शरारे में
झलक तेरी हवैदा^{२१}, चांद में सूरज में तारे में

बलन्दी आस्मानों में, ज़मीनों में तेरी पस्ती
रवानी बहू^{२२} में, उफ़तादगी^{२३} तेरे किनारे में

१-लौभ का माया जाल २-पार्थिव शरीर ३-कामना की गली ४-निहित
५-खोज ६-खंडित ७-पात्र ८-संसार वाटिका ९-प्रतिज्ञा १०-छिद्रान्वेपी ११-
कृतज्ञता १२-प्रवंचित १३-स्पष्ट १४-अनुकरण १५-उपलक्ष्य १६-सामान १७-
प्रकट १८-साहस १९-छिन्न २०-आग २१-प्रकट २२-सागर २३-नश्चलता ।

शरीअत^१ क्यों गरीबांगीर^२ हो जौक्रे तकल्लुम की
छुपा जाता हूँ अपने दिल का मतलब इस्तआरे^३ मे
जो है बेदार^४ इन्सां में, वो गहरी नींद सोता है
शजर में, फूल में, हैवां मे, पत्थर मे, सितारे में
मुझे फूँका है सोजे कतरए अश्के मुहब्बत^५ ने
गजब की आग थी पानी के छोटे से शरारे मे
नहीं जिन्से सवाबे आखिरत^६ की आर्जू मुझको
वो सौदागर हूँ मैंने नफ़्अ देखा है खिसारे में
सुकूँ ना आश्ना रहना उसे सामाने हस्ती है
तड़प किस दिल की यारब ! छुप के आ बैठी है पारे में
सदाए लनतरानी^७ मुन के ऐ 'इक्बाल' में चुप हूँ
तक्राजों की कहाँ ताक़त है मुझ फ़ुर्क़त के मारे में

(५)

यों तो ऐ बज्मे जहाँ दिलकश थे हंगामे तेरे
इक ज़रा अफ़सुर्दगी^८ तेरे तमाशाओं मे थी
पा गई आसूदगी^९ कूए मुहब्बत मे वो खाक
मुद्दतों आवारा जो हिक्मत के सहाराओं मे थी
किस क़दर ऐ मै^{१०} ! तुझे रस्मे हिजाब^{११} आई पसन्द
पर्दे अंगूर से निकली तो मीनाओं^{१२} मे थी
हुस्न की तासीर पर ग़ालिब^{१३} न आ सकता था इल्म
इतनी नादानी जहाँ के सारे दानाओं^{१४} में थी

मैंने ऐ 'इक्बाल' योरूप में उसे ढूँढ़ा अबस^{१५}
बात जो हिन्दोस्तां के माह सीमाओं^{१६} मे थी,

१-धर्म-विधान २-गर्दन दबोचे । ३-व्यंजना ४-जाग्रत ५-प्रेम के अश्रुविन्दु
का दाह ६-परलोक पुण्य का सौदा ७-मुझे तू कदापि न देख सकेगा का स्वर
८-उदासीनता ९-चैन १०-शराब ११-आवरण में रहने की रीति १२-सुरा-
हियों १३-विजयी १४-बुद्धिमानी १५-व्यर्थ १६-चन्द्रमुखी सुन्दरियों ।

(६)

मिसाले पर्वते मैं तौफ़े जाम^१ करते हैं
 यही नमाज़ अदा मुब्होशाम करते हैं
 खुसूसियत नहीं कुछ इसमें ऐ कलीम तेरी
 शजर शजर भी खुदा से कलाम^२ करते हैं
 नया जहाँ कोई ऐ शम्अर ढूँढ़िए कि यहाँ
 सितम कशे^३ तपिशे नातमाम^४ करते हैं
 भली है हम नफ़सो^५ इस चमन में ख़ामोशी
 कि खुशनवाओं को पाबन्दे दाम^६ करते हैं
 गरज़^७ निशात^८ है शुले शराब से जिनकी
 हलाल चीज़ को गोया हराम करते हैं
 भला निभेगी तेरी हमसे क्योंकर ऐ वायज़^९ !
 कि हम तो रस्मे मुहब्बत को आम^{१०} करते हैं
 इलाही सेह^{११} है पीराने ख़िर्का पोश^{१२} में क्या
 कि इक नज़र से जवानों को राम^{१३} करते हैं
 मैं उनकी महफ़िले इशरत^{१४} से कांप जाता हूँ
 जो घर को फूंक के दुनिया में नाम करते हैं
 हरे रहो वतने 'माज़नी' के मैदानों !
 जहाज़ पर से तुम्हें हम सलाम करते हैं

जो बेनमाज़ कभी पढ़ते हैं नमाज़ 'इकबाल'
 बुला के देर^{१५} से मुझको इमाम करते हैं

-
- १-मदिरा के प्रतिबिंब के समान २-मदिरा पात्र की परिक्रमा ३-वार्ता
 ४-मंसार ५-अत्याचार सहन करने वाला ६-अपूर्ण दाह ७-सहप्राणियों
 ८-बन्दी ९-उद्देश्य १०-आनन्द ११-उपदेशक १२-प्रचलित १३-जादू
 १४-गुदड़ी पहने हुए गुह्रों १५-मोहित १६-आनन्द सभा १७-शिवालय ।

(७)

(मार्च १९०७ ई०)

जमाना आया है बेहिजाबी^१ का, आम दीदारे यार^२ होगा
 सुकूत^३ था पर्दा दार^४ जिसका वो राज़ अब आशकार^५ होगा
 गुज़र गया अब वो दौर^६ साक़ी कि छुप के पीते थे पीने वाले
 बनेगा सारा जहान मैखाना, हर कोई बादाख़ार^७ होगा
 कभी जो आवारए जुनूँ थे, वो बस्तियों में फिर आ बसेंगे
 बरहना पाई वही रहेगी, मगर नया ख़ारज़ार^८ होगा
 सुना दिया गोशे मुन्तज़िर^९ को हिजाज़^{१०} की ख़ामुशी ने आख़िर
 जो अह्द^{११} सहराइयों से बाँधा गया था फिर उस्तवार^{१२} होगा
 निकल के सहरा से जिसने रोमा की सल्तनत को उलट दिया था
 सुना है यह क़ुदसियों^{१३} से मैंने वो शेर फिर होशियार होगा
 किया मेरा तज़िकरा जो साक़ी ने बादाख़ारों^{१४} की अंजुमन में
 तो पीरे^{१५} मैखाना सुनके कहने लगा कि मुंहफट है ख़ार^{१६} होगा
 दयारे मगरिब^{१७} के रहने वालो, खुदा कि बस्ती बुकां नहीं है
 खरा जिसे तुम समझ रहे हो वो अब ज़रे कम अयार^{१८} होगा
 तुम्हारी तहज़ीब अपने खंजर से आपही खुदकुशी^{१९} करेगी
 जो शाखे नाज़ुक पे आशियाना बनेगा नापाएदार होगा
 सफ़ोनए बग़ैगुल^{२०} बना लेगा क़ाफ़िला मोरे नातवां^{२१} का
 हज़ार मौजों की हो कशाकश मगर यह दरिया से पार होगा
 चमन में लाला^{२२} दिखाता फिरता है दाग़ अपना कली कली को
 ये जानता है कि इस दिखावे से दिल जलों में शुमार होगा

१-बेपर्देगी २-प्रेमी का दर्शन ३-मौनता ४-छिपाने वाली ५-प्रकट ६-युग
 ७-शराबी ८-कंटक क्षेत्र ९-प्रतीक्षक कान १०-अरब ११-प्रण १२-स्थापित
 १३-फ़रिश्तों १४-शराबियों १५-गुरु १६-अपमानित १७-योरूप १८-घटिया
 सोना १९-आत्म-हत्या २०-पुष्प-पत्र की नौका २१-कमज़ोर च्यूटी ।
 २२-लाल ग का एक फूल ।

जो एक था ऐ निगाह ! तूने हजार करके हमें दिखाया
 यही अगर कैफ़ियत है तेरी तो फिर किसे एतबार होगा
 कहा जो क्रुमरी से मैंने इक दिन यहाँ के आज़ाद पाबगिल^१ हैं
 तो गुचे कहने लगे हमारे चमन का यह राज़दार होगा
 खुदा के आशिक तो हैं हजारों बनों में फिरते हैं मारे मारे
 मैं उसका बन्दा बनूँगा जिसको खुदा के बन्दों से प्यार होगा
 ये रस्मे^२ बस्मे^३ फ़ना है ऐ दिल ! गुनाह है जुबिंशे नज़र भी
 रहेगी क्या आबरू हमारी जो तू यहाँ बेकरार होगा
 मैं जुल्मते शब में लेके निकलूँगा अपने दर्मादा^४ कारवां को
 शररफ़शां होगी आह मेरी, नफ़स मेरा शोला बार होगा
 नहीं है गैर अज़ नुमूद^५ कुछ भी जो मुद्आ^६ तेरी ज़िन्दगी का
 तो इक नफ़स^७ में जहाँ से मिटना मुझे मिसाले शरार^८ होगा
 न पूछ 'इकबाल' का ठिकाना अभी वही कैफ़ियत है उसकी
 कहीं सरे रहगुज़ार^९ बैठा सितम कशे इन्तिज़ार^{१०} होगा



गज़लियात

(१)

ऐ बादे सबा^{१०} ! कमली वाले^{११} से जा कहियो पैग़ाम मेरा
 क़ब्ज़े से उम्मत^{१२} बेचारी के दीं भी गया दुनिया भी गई
 यह मौजे परीशां खातिर^{१३} को पैग़ाम लबे साहिल^{१४} ने दिया
 है दूर विसाले बह^{१५} अभी, तू दरिया में धबरा भी गई

१-निट्टी में धंसे पाँव वाले, अर्थ वंदी २-मृत्यु लोक की नीति ३-पिछड़े हुए,
 ४-पैदा होने के अतिरिक्त ५-उद्देश्य ६-साँस ७-चिंगारियों के समान ८-रास्ते
 के किनारे ९-प्रतीक्षा से पीड़ित १०-मंद समीर ११-हज़रत मुहम्मद साहब
 १२-अनुयायी १३-व्याकुल चित्त १४-तट के अधर १५-सागर का मिलन ।

इज्जत भी मुहब्बत की कायम ऐ कैस^१ ! हिजाबे महमिल^२ से
महमिल जो गया इज्जत भी गई गैरत भी गई लैला भी गई
की तर्क तगो दौ^३ कतरे ने तो आबरूए गौहर^४ भी मिली
आवारगिए फ़ितरत भी गई और कश्मकशे दरिया भी गई
निकली तो लबे 'इक्बाल' से है, क्या जानिए किसकी है यह सदा
पैगामे, सुकूं पहुंचा भी गई दिल महफ़िल का तड़पा भी गई

(२)

ये सुरूदे^५ कुमरियो बुलबुल फ़रेबे गोश^६ है
बातिने^७ हंगामा आबादे^८ चमन ख़ामोश है
तेरे पैमानों का है यह ऐ मए मगरिब^९ असर
ख़न्दाज़न^{१०} साक़ी है सारी अंजुमन बेहोश है
दह^{११} के ग़म खाने में तेरा पता मिलता नहीं
जुर्म था क्या आफ़रीनिश^{१२} भी कि तू रूपोश^{१३} है
आह ! दुनिया दिल समझती है जिसे वह दिल नहीं
पहलुए इन्सां में इक हंगामए ख़ामोश है
जिन्दगी की रह में चल, लेकिन ज़रा बच बच के चल
यह समझले कोई मीनाख़ाना^{१४} बारेदोश^{१५} है

जिसके दम से दिल्लियो लाहौर हम पहलू^{१६} हुए
आह ऐ इक्बाल वह बुलबुल भी अब ख़ामोश है

(३)

नाला है बुलबुले शोरीदा^{१७} तेरा ख़ाम^{१८} अभी
अपने सीने में उसे और ज़रा थाम अभी

१-मजनु २-पालकी का आवरण ३-भाग दौड़ ४-मोती का सम्मान
५-मगीत ६-कर्ण-भ्रम ७-अंतर ८-कौलहल पूर्ण स्थान ९-पाश्चात्य सभ्यता
की मदिरा १०-हंसने वाला ११-संसार १२-मृष्टि रचना १३-विलुप्त
१४-काच की सुराहियों का आकार १५-स्कंध-भार १६-समालिगित
१७-विक्षिप्त १८-अपक्व ।

पुल्टा होती है अगर मस्लहत अन्देश^१ हो अक्ल
 इश्क हो मस्लहत अन्देश तो है खाम अभी
 बेखतर^२ कूद पड़ा आतिशे नमरूद^३ में इश्क
 अक्ल है महवे^४ तमाशाए लबे बाम^५ अभी
 इश्क फर्मूदए^६ कासिद से सुबुक गामे^७ अमल
 अक्ल समझी ही नहीं मानिए पैगाम अभी
 शेवए^८ इश्क है आजादियो दह आशोबी^९
 तू है जुआरिए^{१०} बुतखानए अय्याम^{११} अभी
 उज्जे पहुँच^{१२} ये कहता है बिगड़ कर साक्ती
 है तेरे दिल में वही काविशे अंजाम^{१३} अभी
 सइए^{१४} पैहम है तराजूए कमोकैफे^{१५} हयात
 तेरी मीजां^{१६} है शुमारे सहरोशाम अभी
 अब्रनैसां ये तुनुक बलशीए^{१७} शन्नम कब तक
 मेरे कुहसार के लाले^{१८} है तिही जाम^{१९} अभी
 बाद गार्दने^{२०} अजम^{२१} वह अरबी मेरी शराब
 मेरे सागर में झिजकते हैं मैं आशाम^{२२} अभी

खबर 'इकबाल' की लाई है गुलिस्तां से नसीम^{२३}

नौ गिरफ्तार^{२४} फड़कता है तहे दाम^{२५} अभी

१-परिणाम दर्शी २-निःशंक ३-नमरूद बादशाह का अग्नि-कुण्ड ४-तल्लीन
 ५-छत के ऊपर ६-पंदेश वाहक के वचन ७-कर्म रत ८-रीति-नियम,
 ९-संसार को उजाड़ना १०-जनेऊ-धारी ११-काल १२-संयम का बहाना
 १३-परिणाम की चिन्ता १४-सतत् चेष्टा १५-स्वाद और आनन्द १६-तुला
 यंत्र १७-कृपणता १८-कटोरी के समान एक लाल फूल १९-खाली प्याले
 वाला २०-मदिरा पीने वाला २१-अरब के अतिरिक्त सब देश २२-सुरा-
 पायी २३-प्रभात-समीर २४-नया बन्दी २५-जाल के नीचे ।

(४)

पर्दा चेहरे से उठा अंजुमन^१ आराई कर
चश्मे मेहरो महो अंजुम^२ को तमाशाई कर
तू जो बिजली है तो ये चश्मे पिनहां^३ कब तक ?
बेहिजाबाना^४ मेरे दिल से शनासाई कर
नफ़से गर्म^५ की तासीर है एजाजे हयात^६
तेरे सीने में अगर है तो मसीहाई^७ कर
कब तलक तूर पे दर्यजागरी^८ मिस्ले कलीम^९
अपनी हस्ती से अयां शोलए सीनाई^{१०} कर
हो तेरी खाक के हर जरें से तामीरे हयात^{११}
दिल को बेगानए अन्दाजे कलीसाई^{१२} कर
इस गुलिस्तां में नहीं हद से गुज़रना अच्छा
नाज़ भी कर तो बअन्दाजए रानाई कर^{१३}
पहले खुदार्^{१४} तो मानिन्दे सिकन्दर हो ले
फिर जहाँ में हवसे शौकते दाराई^{१५} कर
मिल ही जाएगी कभी मंज़िले लैला 'इक्बाल'
कोई दिन और अभी बादिया^{१६} पैमाई कर

(५)

फिर बादे बहार आई 'इक्बाल' ! गज़लखां^{१७} हो
गुन्चा है अगर गुल हो, गुल है तो गुलिस्तां हो
तू खाक की मुट्ठी है अज्जा^{१८} की हरारत से
बरहम^{१९} हो परीशां हो, वुसअत^{२०} में बियाबां हो

१-सभा सजाना २-सूर्य, चन्द्रमा तथा तारे ३-गुप्त कटाक्ष ४-प्रत्यक्षतः ५-गरम
सांस ६-जीवन चमत्कार ७-प्राण दान ८-भिक्षा-वृत्ति ९-मुसा पैगम्बर १०-
भगवान की ज्योति ११-जीवन निर्माण १२-गिर्जाघर की रीति १३-बांकपन
१४-स्वाभिमान १५-ईरानी सम्राट् दारा का प्रताप १६-जंगल जंगल
धूमना १७-गज़ल गाने वाला १८-अंशों १९-अस्त-व्यस्त २०-विस्तार ।

तू जिन्से मुहब्बत है, कीमत है गिरां तेरी
 कम माया^१ है सौदागर इस देश में अर्जा^२ हो
 क्यों साज के पर्दे में मस्तूर^३ हो लै तेरी ?
 तू नमए रंगीं है हर गोश^४ पे उरियां^५ हो
 ऐ रहरवे फ़र्जाना^६ ! रस्ते में अगर तेरे
 गुलशन है तो शन्नम हो, सह्रा है तो तूफ़ां हो

सामां की मुहब्बत मे मुज्मर^७ है तन आसानी
 मक्सद है अगर मंजिल, गारत गरे सामां^८ हो

(६)

कभी ऐ हकीकते मुन्तज़र^९ ! नज़र आ लिबासे मजाज़^{१०} में
 कि हज़ारों सज्दे तड़प रहे हैं मेरी जबीने नियाज़^{११} में

तरब आश्नाए खरीश^{१२} हो, तो नवाए महरमे गोश^{१३} हो
 वो सुरूद क्या कि छिपा हुआ हो सुकूते पदों साज^{१४} में
 तू बचा बचा के न रख इसे, तेरा आइना है वह आइना
 कि शिकस्ता हो तो अज़ीज तर है निगाहे आइना साज में

दमे तौफ़^{१५} किर्मके शम्अ^{१६} ने यह कहा कि वह असरे कुहन^{१७}
 न तेरी हिकायते सोज़^{१८} मे, न मेरी हदीसे गुदाज़^{१९} में
 न कहीं जहां में अमां मिली, जो अमां मिली तो कहां मिली
 मेरे जुमें खाना खराब^{२०} को तेरे अपवे बन्दानवाज़^{२१} में

न वह इश्क में रहीं गर्मियां न वह हुस्न में रहीं शोखियां
 न वह ग़ज़नवी में तड़प रही न वह खम है जुल्फ़े अयाज़ में

१-कम पूँजी वाले २-सस्ता ३-निहित ४-कान ५-आवरण हीन, नग्न
 ६-चतुर पथगामी ७-निहित ८-सामग्री का विनाशक ९-प्रतिक्षित वास्तविकता
 १०-भौतिक रूप ११-श्रद्धालु मस्तक १२-कौलाहल-रसज्ञ १३-कर्न गोचर शब्द
 १४-साज के पर्दे की नीरवता १५-परिक्रमा के समय १६-मोमवत्ती का पतंगा
 १७-पुराना प्रभाव १८-ताप कथा १९-पिघलने का वर्णन २०-गृहनाशक
 अपराध २१-भक्त पर कृपा करने वाली क्षमा।

जो मैं सर बसज्दा हुआ कभी तो जमीं से आने लगी सदा
तेरा दिल तो है सनम^१ आशना तुझे क्या मिलेगा नमाज में

(७)

तहे दाम^२ भी गजल आशना^३ रहे तायराने चमन^४ तो क्या
जो फुगा^५ दिलों में तड़प रही थी नवाए जेरे लबी^६ रही
तेरा जल्वा कुछ भी तसल्लिए दिले नासबूर^७ न कर सका
वही गिरियए सहरो^८ रहा, वही आहे नीम शबी^९ रही
न खुदा रहा, न सनम रहे, न रक्कीबे दैरो हरम रहे
न रही कहीं असदुल्लही^{१०} न कहीं अबूलहबी^{११} रही
मेरा साज अगर्चे सितम रसीदए^{१२} जल्माहाए^{१३} अजम रहा
वो शहीदे जौके वफा हूँ मैं कि नवा^{१४} मेरी अरबी रही

(८)

गर्चे तू जिन्दानिए अस्बाब^{१५} है
क्लब^{१६} को लेकिन जरा आजाद रख
अक्ल को तन्कीद^{१७} से फुसंत नहीं
इश्क पर आमाल^{१८} की बुनियाद रख
ऐ मुसल्मां ! हर घड़ी पेशे नजर
आयए^{१९} 'ला युख्लिफुल् मीआद^{२०}' रख
यह 'लिसानुल् अख^{२१}' का पैगाम है
'इन्न वादल्लाहि हक्कुन'^{२२} याद रख

१-मूर्ति २-जाल के नीचे ३-प्रेम गान लीन ४-वाटिका का पंछी ५-क्रन्दन ६-मन्द
स्वर ७-व्याकुल ८-प्रभात-क्रन्दन ९-अर्द्धरात्रि का आर्तनाद १०-इस्लाम के चौथे
खलीफा हजरत अली का उपनाम, यहाँ उनकी वीरता की ओर संकेत है ११-इस्लाम
के एक शत्रु का नाम यहाँ उसकी शत्रुता की ओर संकेत किया गया है १२-
अत्याचार पीड़ित १३-सितार बजाने के यन्त्रों द्वारा १४-गीत-स्वर १५-कारणों
का बन्दी १६-हृदय १७-आलोचना १८-कर्मों १९-आयत (कुरआन का सूत्र)
२०-ईश्वर अपने वादे के विरुद्ध नहीं करता २१-प्रसिद्ध उर्दू कवि 'अक्बर'
इलाहवादी की उपाधि "युग-वाणी" २२-निःसन्देह ईश्वर का वादा सच्चा है ।

जरीफ़ाना (हास्य-रस)

(१)

मश्रिक^१ में उसूले दीन^२ बन जाते हैं
मगरिब^३ में मगर मशीन बन जाते हैं
रहता नहीं एक भी हमारे पल्ले
वां एक के तीन तीन बन जाते हैं

(२)

लड़कियाँ पढ़ रही हैं अंगरेजी
ढूँढ़ ली क़ौम ने फ़लाह^४ की राह
रविशे^५ मगरिबी है मर्दे नज़र
वज़ए^६ मश्रिक को जानते हैं गुनाह
यह ड़ामा दिखाएगा क्या सीन ?
पर्दा उठने की मुन्तज़िर^७ है निगाह

(३)

शेख़ साहब भी तो पर्दे के कोई हामी नहीं
मुफ़्त में कालेज के लड़के उनसे बदज़न^८ हो गए
वाज़^९ में फ़र्मा दिया कल आपने यह साफ़-साफ़
पर्दा आखिर किससे हो जब मर्द ही जन^{१०} हो गये

(४)

यह कोई दिन की बात है ऐ मर्दे होशमन्द
ग़ैरत न तुझमें होगी, न जन ओट चाहेगी
आता है अब वह दौर^{११} कि औलाद के एवज़
कौन्सिल की मेम्बरी के लिये बोट चाहेगी

१-एशिया २-धर्म नियम ३-योरूप ४-कल्याण ५-रीति ६-चलन
७-प्रतीक्षक ८-दुर्विचार रखने लगे ९-उपदेश १०-स्त्री ११-युग ।

(५)

तालीमे मगरिबी है बहुत जुअरत आफ़रीं^१
 पहला सबक है बैठ के कालेज में मार डोंग
 बसते हैं हिन्द में जो खरीदार ही फ़क़त
 आगा भी ले के आते हैं अपने वतन से हींग
 मेरा यह हाल बूट की 'टो'^२ चाहता हूँ मैं
 उनका यह हुक्म देख, मेरे फ़र्श पर न रींग
 कहने लगे कि ऊँट है भद्दा सा जानवर
 अच्छी है गाय रखती है क्या नोकदार सींग

(६)

तहज़ीब के मरीज़ को गोली से फ़ायदा
 दफ़ए मरज़ के वास्ते 'पिल'^३ पेश कीजिए
 थे वह भी दिन के खिदमते उस्ताद के इवज़
 दिल चाहता था हृदियए^४ दिल पेश कीजिए
 बदला ज़माना ऐसा कि लड़का पस अज़^५ सबक
 कहता है मास्टर से कि 'बिल पेश कीजिए'

(७)

इन्तिहा भी इसकी है, आखिर खरीदें कब तलक
 छत्रियां, रुमाल, मफ़लर, पैरहन, जापान से
 अपनी ग़फ़लत की यही हालत अगर कायम रही
 आएंगे शस्साल^६ काबुल से, कफ़न जापान से

(८)

हाथों से अपने दामने दुनिया निकल गया
 रुख़सत हुआ दिलों से ख़ियाले मन्नाद^७ भी
 क़ानूने वक़फ़ के लिये लड़ते थे शेख़ जी
 पूछो तो वक़फ़ के लिए है जायबाद भी ?

१-साहसप्रद २-नोक ३-गोली ४-उपहार ५-उपरांत ६-शव को नहलाने वाले ७-प्रलोक विश्वास ।

(६)

वो मिस बोली इरादा खुदकुशी^१ का जब किया मैं ने
मुहज्जब है तो ऐ आशिक ! क्रदम बाहर न धर हद से

न जुअ्त है न खंजर है तो क्रस्दे^२ खुदकुशी कैसा
यह माना ददे नाकामी गया तेरा गुजर हद से
कहा मैं न कि ऐ जाने जहाँ कुछ नक्द दिलवा दो
किराये पर भंगा लूंगा कोई अफ़ग़ान सरहद से

(१०)

नादां थे इस क्रदर कि न जानी अरबकी क्रद्र
हासिल हुआ यही न, बचे मार पीट से
मगरिब में है 'जहाजे बियाबां' शतुर का नाम
तुकों ने काम कुछ न लिया इस फ़लीट से

(११)

मेम्बरी इम्पीरियल कौन्सिल की कुछ मुश्किल नहीं
वोट तो मिल जाएंगे पैसे भी दिलवाएंगे क्या ?
मिर्जा ग़ालिब खुदाबख़्शे बजा फ़र्मा गए
“हमने यह माना कि दिल्ली में रहें खायेंगे क्या ?”

(१२)

दलीले मेहरोवफ़ा^३ इससे बड़ के क्या होगी
न हो हुजूर से उल्फ़त तो यह सितम न सहें
मुसिर^४ हैं हल्का कमेटी में कुछ कहें हम भी
मगर रजाए^५ कलक्टर को भांप लें तो कहें
सनद तो लीजिए लड़कों के काम आएंगी
वो मेहबान हैं अब, फिर रहें रहें न रहें

१-आत्म-हत्या २-निश्चय ३-प्रेम एवं भक्ति ४-आग्रही ५-इच्छा ।

जमीन पर तो नहीं हिन्दियों को जा^१ मिलती
मगर जहाँ में है खाली समुन्दरों की तहें
मिसाले कश्तीए बेहिस^२ मुतीए फर्मा^३ है
कहो तो बस्तए साहिल^४ रहें, कहो तो बहें

(१३)

फर्मा रहे थे शेख तरीके अमल पे वाज
कुपफार हिन्द के हैं तिजारत में सख्त कोश^५
मुश्किल है वह जो रखते हैं मश्किल से लेन देन
लेकिन हमारी कौम है महरूमे अक्लोहोश
नापाक चीज होती है काफिर के हाथ की
सुनले अगर है गोश^६ मुसल्मां का हक नियोश^७
इक बादा कश भी वाज^८ की महफिल में था शरीक
जिसके लिए नसीहतें वायज थी बारे गोश^९
कहने लगा सितम है कि ऐसे क्यूद^{१०} की
पाबन्द हो तिजारते सामाने खुर्दोनोश^{११}
मैंने कहा कि—“आपको मुश्किल नहीं कोई
हिन्दोस्तां में है कस्मा गो भी मैं फ़रोश^{१२}”

(१४)

देखिए चलती है मश्किल की तिजारत कब तक
शीशए दीं के इवज जामो सुबू लेता है
है मदावाए जुनू^{१३}, नशरे तालीमे जदीद^{१४}
मेरा सर्जन रगे मिल्लत से लहू लेता है

१-स्थान २-निश्चल नौका ३-आज्ञा पालक ४-तट पर बंधे ५-अति सचेष्ट ६-कान ७-सत्य श्रोता ८-उपदेश ९-कर्ण भार १०-बन्धनों ११-खाने पीने १२-मदिरा-विक्रेता १३-पागल पन का इलाज १४-आधुनिक शिक्षा ।

(१५)

गाय इक रोज़ हुई ऊँट से यों गर्में सुखन
 “नहीं इक हाल पै दुनिया मे किसी शै को करार
 में तो बदनाम हुई तोड़ के रस्सी अपनी
 सुनती हूँ आपने भी तोड़ के रख दी है मिहार
 हिन्द में आप तो अजरूए सियासत हैं अहम
 रेल चलने से मगर दश्ते अरब में बेकार
 कल तलक आपको था गाय की महफ़िल से हज़ार^१
 थी लटकते हुए होंठों पे सदाए ज़िन्हार^२
 आज यह क्या है कि हम पर है इनायत इतनी
 न रहा आईनए दिल में वो देरीना गुबार ।”
 जब ये तक्रोर सुनी ऊँट ने शर्मा के कहा
 “है तेरे चाहने वालों में हमारा भी शुमार
 रश्के सद शमज़ए उस्तुर^३ है तेरी एक कुलेल
 हम तो हैं ऐसी कुलेलों के पुराने बीमार
 तेरे हंगामों की तासीर यह फैली बन में
 बे जबानों में भी पैदा है मज़ाके गुफ़्तार
 एक ही बन में है मुद्दत से बसेरा अपना
 गर्चे कुछ पास नहीं, चारा भी खाते हैं उधार
 गोसफ़न्दो^४ शुतुरो^५ गाव पलंगो^६ खरे लंग^७
 एक ही रंग में रंगीं हो तो है अपना बक्रार^८
 बाराबां हो सबक़ आमोज़ जो यकरंगी का
 हम ज़बां हो के रहें क्यों न तयूरे^९ गुल्ज़ार

१-परहेज़ २-कदापि नहीं ३-ऊँट के सैकड़ों चाव-चोंचलों से बढ़
 कर ४-भेड़-बकरी ५-ऊँट ६-गाय, हरिन ७-गदहा ८-प्रतिष्ठा
 ९-पक्षी गण ।

वे वही जाम हमें भी कि मुनासिब है यही
तू भी सरशार^१ हो तेरे रुफ़का^२ भी सरशार
दल्के 'हाफ़िज़' ब चेह अरज़द ब मयश रंगीं कुन^३
वांगहश. मस्तोख़राब अज़ रहे बाज़ार बेयार^४

(१६)

रात मच्छर ने कह दिया मुझसे
माजरा अपनी नातमामी का
मुझको देते हैं एक बूंद लहू
सिला^५ शब भर की तिश्ना कामी^६ का
और यह बिस्वादार बे जहमत
पी गया सब लहू असामी का

(१७)

यह आयए नौ^७ जेल से नाज़िल हुई मुझपर
गीता में है कुर्आन तो कुर्आन में गीता
क्या ख़ूब हुई आशतीए^८ शौख़ो बरह्मन
इस जंग में आख़िर न यह हारा न वह जीता
मन्दिर से तो बेज़ार था पहले ही से 'बद्री'
मस्जिद से निकलता नहीं जिद्दी है 'मसीता'

(१८)

उठा कर फ़ैक दो बाहर गली में
नई तहज़ीब के अण्डे हैं गन्दे
एलेक्शन, मेम्बरी, कौंसिल, सदारत
बनाए ख़ूब आज़ादी ने फन्दे

१-मस्त २-साथी गण ३-'हाफ़िज़ की गुदड़ी बहुत तुच्छ वस्तु है, उसे मदिरा से रंगीन कर दो ४-और तब हाफ़िज़ को मदमस्त और दशाग्रस्त अवस्था में बाज़ार के पथसे ले जाओ ५-बदला ६-तृष्णा ७-नई आयत ८-संधी ।

मियां नज्जार^१ भी छीले गए साथ
निहायत तेज है योरूप के रन्दे

(१६)

हम मश्कि^२ के मिस्कीनों^३ का दिल मगुरिब^४ में जा अटका है
बां कन्टर सब बिल्लूरी है, यां एक पुराना मटका है

इस दौर में सब मिट जाएंगे, हां बाक़ी वह रह जाएगा
जो क़ाएम अपनी राह पे है और पक्का अपनी हट का है
ऐ शैख़ो बरहमन ! सुनते हो, क्या अहले बसीरत^५ कहते हैं
गर्वू^६ ने कितनी बलंदी से इन क़ौमों को दे पटका है

या बाहम^७ प्यार के जलसे थे, दस्तूरे मुहब्बत कायम था
या बहस में उर्दू हिन्दी है, या क़ुर्बानी या झटका है

(२०)

“अस्ले शहूदो शाहिदो मशहूद एक हैं”
‘ग़ालिब’ का क़ौल सच है तो फिर ज़िक्के ग़ैर क्या
क्यों ऐ जनाबे शैख़ सुना आपने भी कुछ ?
कहते थे काबा वालों से कल अहले बैर^८ क्या ?
हम पूछते हैं मुस्लिमे आशिक़ मिज़ाज से
उल्फ़त बुतों से है तो बरहमन से बैर क्या ?

ज़र्बे कलीम से

ग़ज़ल

तेरी मताये^९ हयात^{१०} इल्मो हुनर का सुखर^{११}
मेरी मताये हयात एक दिले ना सबूर^{१२}

१-बढ़ई २-एशिया ३-दीनों ४-योरूप ५-दिव्य चक्षु, बुद्धिमान ६-आकाश
७-परस्पर ८-बुतखाने वाले ९-पूँजी १०-जीवन ११-नशा १२-असंतुष्ट ।

मोजजाये^१ अहले फ़िक्र, फ़लसफ़ाये पेच पेच
मोजजाये अहले ज़िक्र, मूसा ओ फ़िरऔनो तूर
मसलेहतन कह दिया मंने मुसलमान थे
तेरे नफ़स^२ में नहीं गर्मीये मौमुअशूर^३
एक ज़माने से है चाक गरीबां मेर!
तू है अभी होश में, मेरे जनों का कसूर
फ़ैजे^४ नज़र के लिये ज़बते सुखन चाहिए
हरफ़े परीशां न कह अहले नज़र के ठुज़ूर^५
ख़वार^६ जहाँ में कभी हो नहीं सकती वह कौम
इश्क़ हो जिसका जसूर^७ फ़क़ हो जिसका ग़यूर^८

जमानए हाज़िर का इनसान

‘इश्के नापीदो ख़िरद मीगज़दश सूरते मार’^९
अक्ल को ताबये फ़रमाने^{१०} नज़र कर न सका
ढूँढने वाला सितारों की गुज़रगाहों का
अपने अफ़कार^{११} की दुनिया में सफ़र कर न सका
अपनी हिकमत के ख़मोपेच^{१२} में उलझा ऐसा
आज तक फ़ैसलाये नफ़ोज़रर^{१३} कर न सका
जिसने सूरज की शुआओं को गिरफ़्तार किया
ज़िन्दगी की शबे तारीक^{१४} सहर कर न सका

तालिब इल्म (विद्यार्थी)

खुदा तुझे किसी तूफ़ान से आशाना^{१५} कर दे
कि तेरे बह^{१६} की मौजों^{१७} में इज़तिराब^{१८} नहीं

१-जादू २-श्वास ३-कियामत का दिन ४-कृपा ५-सामने ६-ज़लील ७-प्रभाव
शील पक्का ८-लज्जा वाला ९-कच्चा प्रेम, और ज्ञान साप की तरह डस्ते हैं
१०-आज्ञाकारी ११-विचारों १२-भूल भुलैयाँ १३-लाभ हानि १४-अंधेरी
रात १५-जानकार १६-समुद्र १७-लहरों १८-चंचलता ।

तुझे किताब से मुमकिन नहीं कराग^१ कि तू
किताब खा^२ है, मगर साहिबे किताब नहीं

जाबोद^३ से

(१)

ग़ारत गरे दी^४ है ये ज़माना, है इसकी निहाद^५ काफ़िराना
दरबारे शहनशही से खुश्तर, मर्दाने खुदा^६ का आस्ताना^७
लेकिन यह दौरे साहिरो^८ है, अन्दाज़ हें सबके जादुआना
सर चश्मए ज़िन्दगी हुआ खुशक बाकी है कहाँ, मये शयाना^९
ख़ाली इनसे हुआ दबिस्ता^{१०} थी जिनकी निगाह ताज़ियाना^{११}
जिस घर का मगर चराग़ तू है, है इसका मज़ाक़ आरिफ़ाना^{१२}
जौहर में हो ला इलाह तो क्या ख़ौफ़^{१३} तालीम हो गो फ़रंगियाना^{१४}
शाख़े गुलपर चहक व लेकिन कर अपनी खुदी में शायियाना^{१५}
वो बहू है आदमी कि जिसका ये क़तरा है बहरे देक़िराना^{१६}
देहकां^{१७} अगर न हो तनासां^{१८} हर दाना है सद हज़ार दाना

शाफ़िल म नशीं न वक्ते बाज़ीस्त

वक्ते हुनरस्तो कारसाज़ीस्त^{१९}

१-अवकाश २-किताब पढ़नेवाला ३-डा० इकबाल का चहेता पुत्र ४-धर्म
के लिये हानिकारक ५-बुनयाद ६-ईश्वर प्रेमी लोग ७-चौखट
८-जादूगरी का युग ९-रात की रखी हुई शराब १०-पाठशाला ११-कोड़ा
१२-भगवत प्राप्ति की चेष्टा करने वाला १३-यदि घड़ी में ईश्वर की अद्वैता
हो तो क्या भय है १४-पाश्चात्य १५-घोंसला १६-असीम १७-खेती करने
वाला १८-सुस्त और आराम पसन्द १९-सुस्त होकर मत बैठो क्योंकि यह
खेल का समय नहीं यह समय काम करने और परिश्रम का है ।

(२)

सीने में अगर न हो दिले गर्म रह जाती है ज़िन्दगी में खामी^१
 नखचीर^२ अगर हो जोरको^३ चुस्त आती नहीं काम कोहना दामी^४
 है आबेहयात^५ इसी जहाँ में शर्त इसके लिए है तिश्नाकामी^६
 गैरत है तरीकते हकीकी,^७ गैरत से है फ़क़ की तमामी
 ऐ जाने पियर नहीं है मुमकिन शांहीं^८ से तदर्ब^९ की गुलामी
 नायाब नहीं मताये गुफ़्तार^{१०}, सद अनवरीओ हजार जामी^{११}
 है मेरी बिसात^{१२} क्या जहाँ में बस एक फ़ुगाने ज़ेर दामी
 इक सिदके मकाल^{१३} है कि जिससे मैं चश्मे जहाँ में हूँ गिरामी^{१४}
 अल्लाह की देन है जिसे दे मीरास नही बुलंदनामी
 अपने नूरे नज़र^{१५} से क्या ख़ूब फ़रमाते हैं हज़रते निज़ामी^{१६}

“जाये कि बुज़ुर्ग बायदत बूद
 फ़रज़न्दिये मन नदारदत सूद”^{१७}

(३)

मोमिन पे गिरां है ये शबो रोज़, दीनो दौलत कुमारबाजी^{१८}
 नापीद है बन्दए अमल मस्त, बाकी है फ़क़त नफ़स दराजी^{१९}
 हिम्मत हो अगर तो दूँद वह फ़क़^{२०} जिस फ़क़ की अस्ल है हिजाजी^{२१}
 इस फ़क़ से आदमो में पैदा अल्लाह की शाने बेनियाजी^{२२}
 कुजिहको^{२३} हमाम के लिए मौत है इसका मुक़ामे शाहबाजी^{२४}
 रोशन इससे ख़िरद की आँखे बे सुरमए बूअली ओ राजी^{२५}

१-त्रुटि २-शिकार ३-समझदार ४-पुरानी जाल बाजी ५-अमृत ६-प्यास
 ७-सच्चा मार्ग ८-बाज़ ९-तीतर १०-कथन ११-अनवरी और जामी फ़ार्सी
 साहित्य के दो सुप्रसिद्ध कवि १२-औकात १३-कथन की सत्यता १४-प्रतिष्ठित
 १५-सपुत्र १६-फ़ार्सी के एक कवि १७-जहाँ बड़ा होना चाहिए वहाँ मेरा बेटा
 होना कोई लाभ न देगा १८-जुआ १९-सास खींचना २०-फ़कीरी २१-अरब
 से २२-बेपरवाही २३-चिड़िया २४-अरबी के दो विचारवान ।

हासिल इसका शिकोहे महमूद फ़ितरत^१ में अगर न हो अयाज़ी
तेरी दुनिया का ये सराफ़ील^२ रखता नहीं ज़ौके नैनवाज़ी
है इसकी निगाहे आलम आशोब दर परदा तमाम कारसाज़ी
यह फ़क़े ग़यूर जिसने पाया बे तेग़ां सिनां है मर्दे शाज़ी
मोमिन की इसी में है अमीरी अल्लाह से मांग यह फ़कीरी

एक सवाल

कोई पूछे हक़ीमे योरुप से हिन्दो यूनां हैं जिसके हलका बग़ोश^३
क्या यही है माआशरत^४ का क़माल मर्द बेकार जन तही आग़ोश^५

आजादी निसवाँ

इस [ब]हस का कुछ फ़ैसला मैं कर नहीं सकता
गो खूब समझता हूँ कि यह ज़ह है वह कन्द
क्या फ़ायदा कुछ कहके दूंगू और भी मातूब^६
पहले ही ख़फ़ा मुझसे हैं तहज़ीब के फ़रजन्द
इस राज़ को औरत की बसीरत^७ ही करे फ़ाश^८
मजबूर है माज़ूर है मर्दाने ख़िरदमन्द
क्या चीज़ है आरायशो कीमत में ज्यादा
आजादिए निसवाँ के ज़मुरद का गुलूबन्द

इबलीस^९ का फरमान अपने सियासी फरजिन्दों के नाम

लाकर ब्राह्मनों को सियासत के पेच में
जुझारियों^{१०} को दैरे कुहन^{११} से निकाल दो
वह फ़ाका कश की मौत से डरता नहीं ज़रा
रूहे मुहम्मद इसके बदन से निकाल दो

१-प्रकृति २-नाद ३-गुलाम ४-रहना सहना ५-महिला खाली गोद ६-गुस्से का पात्र ७-दृष्टि ८-प्रत्यक्ष ९-शैतान १०-जनेऊधारी ११-पुराने मन्दिर ।

फ़िकरे अरब को देके फरंगी तख्त्युलात^१
 इसलाम को हिजाजो यमन^२ से निकाल दो
 अफगानियों की गैरते दीं का है यह इलाज
 मुल्ला को इनके कोहो दमन^३ से निकाल दो
 अहले हरम से इनकी रवायात^४ छीन लो
 आहू को मरगज़ारेख़ुतन से निकाल दो
 इक़बाल के नफ़स से है लाले की आग तेज़
 ऐसे ग़ज़लसरा को चमन से निकाल दो

बाले जबरील

फूल की पत्ती से कट सकता है हीरे का जिगर
 मर्दे नादां^५ पर कलामे नर्मो नाजुक बे असर : भर्तृहरि :

×

×

×

मेरी नवाये शौक से शोर हरीमे जात में
 गलग़ला हाय अलअमां बुतकदए सिफ़ात में
 हरो फ़रिश्ता है असीर^६ मेरे तख्त्युलात में
 मेरी निगाह से खलल तेरी तजल्लियात^७ में
 गर्चे है मेरी जुस्तजू^८ देरो हरम की नक्शबन्द
 मेरी फुगां^९ से रुस्तख़ेज^{१०} काबाओ सोमनात में
 गाह मेरी निगाहे तेज़ चीर गई बिले वुजूद
 गाह उलझ के रह गई मेरे तवहमात^{११} में

१-विचारों २-अरब के दो देश ३-पर्वत और वादी

४-परम्परा

५-मूर्ख ६-कैदी ७-प्रतिभा ८-खोज ९-फ़रयाद

१०-कयामत

११-अम ।

तूने ये क्या ग़ज़ब किया मुझको भी फ़ाश कर दिया
मैं ही तो एक राज था सीनए कायनात^१ में

× × ×

तेरे शीशे में मय बाकी नहीं है, बता क्या तू मेरा साकी नहीं है
समुन्दर से मिले प्यासे को शबनम, बख़्शीली^२ है यह रज्जाकी^३ नहीं

× × ×

अगर कजरौ^४ है अंजुम आसमां तेरा है या मेरा ?
मुझे फ़िकरे जहाँ क्यों हो जहाँ तेरा है या मेरा ?
अगर हंगामाहाये शौक से है लामकां ख़ाली,
ख़ता किसकी है यारब लामकां तेरा है या मेरा ?
उसे सुबहे अज़ल इनकार की ज़ुरत हुई क्योंकर ?
मुझे मालूम क्या वह राज़दां^५ तेरा है या मेरा ?
मुहम्मद भी तेरा जबरील भी क़ुरआन भी तेरा
मगर यह हरफ़े शीरीं^६ तर्जुमां^७ तेरा है या मेरा ?
इसी कौकब^८ की ताबानी^९ से है तेरा जहाँ रौशन
जवाले^{१०} आदमे खाकी ज़ियां^{११} तेरा है या मेरा ?

(५)

गेसुये ताबदार^{१२} को और भी ताबदार कर
होशो ख़िरद शिकार कर क़लबो नज़र शिकार कर
इश्क़ भी हो हिजाब^{१३} में हुस्न भी हो हिजाब में
या तो खुद आशकार^{१४} हो या मुझे आशकार कर

१-सृष्टि २-कंजूसी ३-क़बालुता ४-टेढ़ी चाल चलने वाले ५-भेद जानने वाला ६-मीठा ७-प्रतिनिधि ८-सितारा ९-चमक १०-अवनति ११-हानी १२-पेच वाले (घुघुरवाले) बाल १३-परदे १४-ज़ाहिर ।

तू है मुहीते बेकिरां^१, मैं हूँ जरा सी आबजू^२
 या मुझे हमकिनार^३ कर, या मुझे बेकिनार^४ कर
 मैं हूँ सदफ़^५ तो तेरे हाथ मेरे गुहर की आबरू^६
 मैं हूँ खजफ़^७ तो तू मुझे गौहरे शाहवार^८ कर
 नगमए नौ बहार अगर मेरे नसीब में न हो
 इस दमे नीमसोज़ को तायरके^९ बहार कर
 बागे बहिश्त से मुझे हुकमे सफ़र दिया था क्यूं ?
 कारे जहाँ दराज है अब मेरा इत्तिज़ार^{१०} कर
 रोज़े हिसाब जब मेरा पेश हो दफ़्तरे अमल^{११}
 आप भी शर्मसार हो मुझको भी शर्मसार कर

×

×

×

जवानों को मेरी आहें सहर दे फिर इन शर्हीं बच्चों को बालो परदे
 खुदाया आरजू मेरी यही है, मेरा नूरे बसीरत आम कर दे

×

×

×

परीशां हो के मेरी खाक आखिर दिल न बन जाये
 जो मुश्किल अब है यारब फिर वही मुश्किल न बन जाये
 न कर दे मुझको मजबूरे नवः^१ फिरदौस मैं हूँ
 मेरा सोजे दरू^२ फिर गर्मिये महफ़िल न बन जाये
 कभी छोड़ी हुई मंजिल भी याद आती है राही को
 खटक सी है जो सीने में गमे मंजिल न बन जाये
 बनाया इश्क ने दरियाए नापेदा किरां^३ मुझको
 यह मेरी खुदनिगहदारी^४ मेरा साहिल न बन जाये

१-असीम सागर २-नहर ३-अपने साथ मिला ले ४-असीम ५-मीपी ६-इज्जत
 ७-ठीकरा ८-चमकता हुआ अमूल्य मोती ९-पक्षी १०-प्रतीक्षा ११-कर्म
 व्योरा १२-भीतर की आग १३-असीम १४-आत्म रक्षा ।

कहीं उस आलमे बे रंगो बू में भी तलब मेरी
वही अफसानए दुम्बालए महमिल^१ न बन जाये
अरूजे^२ आदमे खाकी से अंजुम सहमे जाते हैं
कि यह टूटा हुआ तारा महे कामिल^३ न बन जाये

(६)

दिगरगूं है जहां तारों की गदिश तेज है साकी
दिले हर ज़र्रा में ग़ौसाय^४ रस्ताखेज^५ है साक्की
मताए दीनो दानिश^६ लुट गयी अल्लाह वालों की
ये किस काफ़िर अदा का ग़मजये खूरेज है साक्की
वही देरीना बीमारी, वही नामहकमी^७ दिल की
इलाज उसका वही आबे निशात अंगेज^८ है साक्की
हरम के दिल में सोजे आरजू पैदा नहीं होता
कि पैदाई तेरी अब तक हिजाब आमेज है साक्की
न उट्टा फिर कोई रुमी अजम^९ के लालाज़ारों से
वही आबो गिले ईरां वही तबरेज है साक्की
नहीं है ना उमीद इक़बाल अपनी किशते वीरां^{१०} से
ज़रा नम हो तो यह मट्टी बहुत ज़रखेज है साक्की
फ़कीरे राह को बलशे गये असरारे^{११} मुलतानी
बहा^{१२} मेरी नवा की दौलते परवेज है साक्की

×

×

×

अपनी जौलांगाह^{१३} जेरे आसमां समझा था मैं
आबोगिल के खेल को अपना जहाँ समझा था मैं

१-ऊंटनी के पीछे भागने वाला लैला मजनू का किस्सा २-उन्नति ३-पूर्ण
चन्द्रमा ४-शोर ५-क्रयामत ६-विद्वत्ता ७-दुर्बलता ८-प्रसन्नता प्रदान
करने वाला पानी ९-ईरान १०-उजड़ी हुई खेती ११-भेद १२-मूल्य
१३-घूमने का स्थल ।

बेहिजाबी से तेरी टूटा निगाहों का तलिस्म^१
 इक रिदाये^२ नीलगूँ को आसमां समझा था मैं
 कारवां थक कर फ़िज़ा के पेचो ख़म में रह गया
 मेहरो माहो मुश्तरी को हमइनां^३ समझा था मैं
 इश्क की इक जस्त^४ ने तय कर दिया किस्सा तमाम
 इस ज़मीनों आसमां को बेकिरां समझा था मैं
 कह गयीं राज़े मुहब्बत परदादारी हाथ शौक
 थी फ़ुशां वह भी जिसे ज़बते फ़ुशां समझा था मैं
 थी किसी दरमांदा^५ राहरौ की सदाये^६ दर्दनाक
 जिसको आवाज़े रहीले^७ कारवां समझा था मैं

×

×

×

फिर चिरागे लाला से रौशन हुए कोहो दमन^८
 मुझको फिर नगमों पे उकसाने लगा मुग़ों चमन
 फूल है सहारा मे या परियां कतार अन्दर कतार
 ऊदे-ऊदे, नीले-नीले, पीले-पीले, पैरहन^९
 बरगे गुल पर रख गयी शबनम का मोती बादे मुबुह
 और चमकाती है इस मोती को सूरज की किरण
 हुस्ने बे परवा को अपनी बे नकाबी^{१०} के लिए
 हों अगर शहरों से बन प्यारे तो शहर अच्छे कि बन ?
 अपने मन में डूब कर पाजा मुरागे^{११} जिन्दगी
 तू अगर मेरा नहीं बनता न बन अपना तो बन
 मन की दुनिया मन की दुनिया सोजो मस्ती जज्बो शौक
 तन की दुनिया तन की दुनिया ? सूदो सौदा मको फ़न

१-जादू २-चादर परदा ३-साथी ४-छलाग ५-थके हुए ६-आवाज़
 ७-कूच ८-पहाड़ और वादी ९-वस्त्र १०-प्रदर्शनी और दिखलावा
 ११-पता ।

मन की दौलत हाथ आती है तो फिर जाती नहीं
 तन की दौलत छाओं है आता है धन जाता है धन
 मन की दुनिया में न पाया मैंने अफरंगी का राज
 मन की दुनिया में न देखे मैं ने शैखो बरहमन
 पानी पानी कर गई मुझको कलन्दर की यह बात
 तू झुका जब गैर के आगे न मन तेरा न तन

×

×

×

दिल सोज से खाली है निगह पाक नहीं है
 फिर इसमें अजब क्या कि तू बेबाक नहीं है
 हे जौके तजल्ली भी इसी खाक में पिन्हां^१
 गाफिल तू निरा साहिबे अदराक^२ नहीं है ।
 वह आँख कि है सुरमए अफरंग से रौशन
 पुरकारो^३ सुखन साज है नमनाक नहीं है
 क्या सूफियो मुल्ला को खबर मेरे जून की
 इनका सरे दामन भी अभी चाक नहीं है ।
 कब तक रहे सहकूमि^४ अजुम में मेरी खाक
 या मैं नहीं या गर्दिश अफ्लाक नहीं है
 बिजली हूँ नजर कोहो बियाबां पे है मेरी
 मेरे लिए शायं खसोखाशाक नहीं है
 आलम है फकत मोमिने जांबाज की मीरास
 मोमिन नहीं जो साहिबे लौलाक^५ नहीं है

×

×

×

जमिस्तानी^६ हवा में गरचे थी शमशीर की तेजी
 न छूटे मुझ से लन्दन में भी आदाबे सहर खेजी^७

१-झिरी हुई २-अकल ३-फरेव में भरी हुई ४-परतन्त्रता ५-बैलोकी

६-सर्द ७-प्रातः जागरण ।

कहीं सरमायए महफ़िल थी मेरी गर्म गुफ़्तारी
 कहीं सब को परीशां कर गई मेरी कम आमेजी^१
 जमामे^२ कार अगर मजदूर के हाथों में हो फिर क्या
 तरीके कोहकन में भी वही हीले है परवेजी^३
 जलाले बादशाही हो कि जमहरी^४ तमाशा हो
 जुदा हो दीं सियासत से तो रह जाती है चंगेजी^५
 सवाद^६ रूमतुल कबरा में दिल्ली याद आती है
 वही इबरत वही अजमत वही शाने दिल आवेजी^७

× × ×
 खिरद के पास खबर के सिवा कुछ और नहीं
 तेरा इलाज नजर के सिवा कुछ और नहीं
 हर इक मुकाम से आगे मुकाम है तेरा
 हयात जौके सफ़र के सिवा कुछ और नहीं
 गिरां बहा है तो हिफ़जे खुदी से है वरना
 गुहर में आबे गुहर के सिवा कुछ और नहीं
 रगों में गरदिशे खूं है अगर तो क्या हासिल
 हयात सोझे जिगर के सिवा कुछ और नहीं
 उरुसे लाला मुनासिब नहीं है मुझसे हिजाब
 कि मैं नसीमे सहर के सिवा कुछ और नहीं
 जिसे कसाद समझते हैं ताजराने करंग
 वह शं मताए हुनर के सिवा कुछ और नहीं
 बड़ा करीम है इकबाले बे नवा लेकिन
 अताए शोला शरर के सिवा कुछ और नहीं

× × ×
 खिरद ने मुझको अता की नजर हकीमाना
 सिखाई इश्क ने मुझको हदीस रिन्दाना

१-मिलने जुलने मे संकोच २-लगाम ३-मजदूर के कामों में भी साम्राज्य के ही ढंग है ४-गणतन्त्र ५-साम्राज्यवाद ६-शहर ७-दिल लुभाने वाला ।

न बादा है न सुराही न दौरे पैमाना
 फ़कत निगाह से रंगीं है बच्चे जानाना
 मेरी नवाय परीशां को शायरी न समझ
 कि मैं हूँ महरमे राजे बरूने मैखाना
 कली को देख कि है तिशनाए नसीमे सहर
 इसी में है मेरे दिल का तमाम अफ़साना
 कोई बताये मुझे यह गयाब है कि हज़ूर
 सब आशना हैं यहां एक मैं हूँ बेगाना
 फ़रंग में कोई दिन और भी ठहर जाऊँ
 मेरे जन्म को संभाले अगर यह वीराना
 मुक़ामे अक़ल से आसां गुज़र गया इकबाल
 मुक़ामे शौक में खोया गया यह फ़रजाना

×

×

×

ख़िरदमंदों से क्या पूछूं कि मेरी इब्तिदा क्या है
 कि मैं इस फ़िक्क में रहता हूँ मेरी इन्तिहा क्या है
 ख़ुदा को कर बुलन्द इतना कि हर तकदीर से पहले
 ख़ुदा बंदे से ख़ुद पूछे बता तेरी रज़्जा क्या है
 मुक़ामे गुफ़्तगू क्या है, अगर मैं कीमिया गर हूँ
 यही सोजे नफ़स है और मेरी कीमिया क्या है
 नज़र आई मुझे तकदीर की गहराइयां इसमें
 न पूछ ऐ हमनशां मुझसे वह चश्मे सुर्मासा क्या है
 अगर होता वह मजज़ूबे फ़रंगी इस ज़माने में
 तो इकबाल इसको समझाता मुक़ामे किबरिया क्या है
 नवाये सुबहगाही ने जिगर खूँ कर दिया मेरा
 ख़ुदाया जिस ख़ता की यह सज़ा है वह ख़ता क्या है

×

×

×

जब इश्क सिखाता है आदाबे ख़ुब आगाही
 खुलते हैं गुलामों पर असरारे शहिनशाही

अत्तार हो रूमी हो राजी हो गजाली हो
 कुछ हाथ नहीं आता बे आहें सहर गाही
 नौमीद न हो इनसे ऐ रहबरे फ़रजाना
 कमकोश तो हैं लेकिन बेजौक नहीं राही
 ऐ तायरे लाहूती इस रिज्क से मौत अच्छी
 जिस रिज्क से आती हो परवाज़ में कोताही
 दाराओ सिकन्दर से वह मर्दे फ़कीर ऊला
 हो जिसकी फ़कीरी में बूए असदुल्लाही
 आईने जवांमर्दा हक गोई व बेबाकी
 अल्लाह के शेरों को आती नहीं रोबाही

×

×

×

मुझे आहो फ़ुगाने नीम शब का फिर पयाम आया
 थम ऐ रहरो कि शायद फिर कोई मुश्किल मुक़ाम आया
 ज़रा तकदीर की गहराइयों में डूब जा तू भी
 कि इस जंगल से मैं बन के तेरे बेनियाम आया
 यह मिसरा लिख दिया किस शोख ने महराबे मसजिद पर
 यह नादां गिर गये सजदों में जब वक्ते कयाम आया
 चल ऐ मेरी गरीबी का तमाशा देखने वाले
 वह महफ़िल उठ गई जिस दम तो मुझ तक दौरे जाम आया
 दिया इकबाल ने हिंदी मुसलमानों को सोज़ अपना
 यह इक मर्दे तन आसां था तन आसानों के काम आया
 इसी इकबाल की मैं जुस्तजू करता रहा बरसों
 बड़ी मुद्त के बाव आखिर वह शाहीं जेरे दाम आया

×

×

×

सितारों से आगे जहाँ और भी हैं
 अभी इश्क के इम्तिहां और भी हैं
 तही ज़िन्दगी से नहीं यह फिज़ाएँ
 यहाँ संकड़ों कारवां और भी हैं

कनाअत न कर आलमे रंगोबू पर
 चमन और भी आशियां और भी हैं
 अगर खो गया इक नशेमन तो क्या राम
 मुकामाते आहो फुगां और भी है
 तू शाहीं है परवाज है काम तेरा
 तेरे सामने आसमां और भी हैं
 इसी रोज़ो शब में उलझ कर न रहज!
 कि तेरे जमानो मकां और भी हैं
 गए दिन कि तनहा था मैं अंजुमन मे
 यहाँ अब मेरे राज़दां और भी हैं
 × × ×

मुहब्बत का जुनूं बाकी नहीं है
 मुसलमानों में खूं बाकी नहीं है
 सफ़े कज दिल परीशां सिजदा बे जौक
 कि जज़बे अंदरूं बाकी नहीं है
 × × ×

रगों में वह लहू बाकी नहीं है
 वह दिल वह आरजू बाकी नहीं है
 नमाज़ो रोज़ा ओ कुर्बानी ओ हज
 यह सब बाकी है तू बाकी नहीं है

फ़रिश्तों का गीत

अज़ल है बे ज़माम अभी इश्क़ है बे मुकाम अभी
 नक्शगरे अज़ल तेरा नक्श है नातमाम अभी
 खल्के खुदा की घात में रिंदो फ़कीहो मीरो पीर
 तेरे जहाँ में है वही गर्बिशे सुबह शाम अभी

तेरे अभीर माल मस्त तेरे फकीर हाल मस्त
बंदा है कूचा गर्द अभी ख्वाजा बुलंद बाम अभी
दानिशो दीनो इल्मोफ़न बंदगिये हवस तमाम
इश्क की गिरह कुशाई का फ़ैज नहीं है आम अभी
जौहरे ज़िन्दगी है इश्क जौहरे इश्क है खुदी
आह कि है यह तेरो तेज पर्दगिये नयाम अभी

फ़रमाने खुदा (फ़रिश्तों से)

उटो मेरी दुनिया के गरीबों को जगा दो
काखे उमारा के दरो दीवार हिला दो
गरमाओ गुलामों का लहू सोजे यक़ीं से
कुंजिशके फ़िरोमाया को शाहीं से लड़ा दो
सुलतानिये जमहूर का आया है ज़माना
जो नज़्म कुहन तुमको नज़र आए मिटा दो
जिस खेत से देहकां को मुयस्सर नहीं रोज़ी
उस खेत के हर ख़ोशए गंडुम को जला दो
क्यों ख़ालिको मख़लूक में हायल रहें पदें
पीराने कलीसा को कलीसा से उठा दो
हक़ रा बसजूदे सनमां रा बतवाफ़े
बेहतर है चरागे हरमो दौर बुझा दो
मे नाख़ुशो बेजार हूँ मर मर की सिलों से
मेरे लिये मट्टी का हरम और बना दो
तहज़ीबे नवी कारगहे शीशा गरां है
आदाबे ज़नू शायरे मशरिक को सिखा दो

एक नौजवान के नाम

तेरे सोफ़े हें अफ़रंगी तेरे कालीं हें ईरानी
 लहू मुझको रुलाती है जवानों की तन आसानी
 अमारत क्या शिकोहे खुसरवी भी हो तो क्या हासिल
 न जोरे हैदरी तुझमें न इस्तग़नाय सलमानी
 न ढूँढ़ इस चीज़ को तहज़ीबे हाज़िर की तजल्ली में
 कि पाया मैंने इस्तग़ना में मेराजे मुसलमानी
 उकाबी रूह जब बेदार होती है जवानों में
 नज़र आती है इसको अपनी मनज़िल आसमानों में
 न हो नौमीद नौमीदी ज़वाले इल्मो इरफ़ां है
 उमीदे मर्वे मोमिन है खुदा के राज़दानों में

साकी नामा

हुआ	ख़मा	जन	कारवाने	बहार
इरम	बन गया	दामने	कोहसार	
गुलो	नरगिसो	सोसनो	निस्तरन	
शहीदे	अज़ल	लाला	खूनीं	कफ़न
जहाँ	छप गया	परदाए	रंग	में
लहू	की है	गरदिश	रगे	संग में
फ़िज़ा	नीली	नीली	हवा	में सरूर
ठहरते	नहीं	आशियां	में	तयूर
वह	जूये	कुहिस्तां	उचकती	हुई
अटकती	लचकती	सरकती	हुई	
उछलती	फिसलती	संभलती	हुई	
बड़े	पेच	खा कर	निकलती	हुई

रुके जब तो सिल चीर देती है यह
 पहाड़ों के दिल चीर देती है यह
 ज़रा देख ऐ साकिये लाला फ़ाम
 सुनाती है यह ज़िन्दगी का पयाम
 पिला दे मुझे वह मये परदा सोज़
 कि आती नहीं फ़स्ले गुल रोज़ रोज़
 वह मय जिससे रोशन ज़मीरे हयात
 वह मय जिससे है मस्तिये कायनात
 वह मय जिसमें है सोज़ो साज़े अज़ल
 वह मय जिस से खुलता है राज़े अज़ल
 उठा साकिया परदा इस राज़ से
 लड़ा दे ममोले को शहबाज़ से
 ज़माने के अन्दाज़ बदले गए
 नया राग है साज़ बदले गए
 हुआ इस तरह फ़ाश राज़े फ़रंग
 कि हैरत में है शीशा बाज़े फ़रंग
 पुरानी सियासतगरी ख़्बार है
 ज़मीं मीरो सुलतां से बेज़ार है
 गया दौरे सरमायादारी गया
 तमाशा दिखा कर मदारी गया
 गिरां ख़्वाब चीनी संभलने लगे
 हिमालय के चशमे उबलने लगे
 दिले तूरे सीना व फ़ारां बो नीम
 तजल्ली का फिर मुन्तज़िर है कलीम
 मुसलमां है तौहीद में गर्मजोश
 मगर दिल अभी तक है जुम्हारपोश
 तमुद्न तसव्वफ़ शरीयत कलाम
 बुताने अज़म के पुजारी तमास

हकीकत खुराफात में खो गई
 यह उम्मत रवायात में खो गई
 लुभाता है दिल को कलामे खतीब
 मगर लज्जते शौक से बे नसीब
 बयां इसका मंतक से सुलझा हुआ
 लुगत के बखेड़ों में उलझा हुआ
 वह सूफी कि था खिदमतें हक में मर्द
 मुहब्बत में यकता हमय्यत में फ़र्द
 अजम के ख्यालात में खो गया
 यह सालिक मुकामात में खो गया
 बुझी इश्क की आग अंधेर है
 मुसलमां नहीं राख का ढेर है
 शराबे कुहन फिर पिला साकिया
 वही जाम गर्दिश में ला साकिया
 मुझे इश्क के पर लगा कर उड़ा
 मेरी खाक जुगनू बना कर उड़ा
 खिरद को गुलामी से आजाद कर
 जवानों को पीरों का उसताद कर
 हरी शाखे मिल्लत तेरे नम से है
 नफ़स इस बदन में तेरे दम से है
 तड़पने फड़कने की तौफ़ीक दे
 दिले मुतिजा सोज सिद्दीक दे
 जिगर से वही तीर फिर पार कर
 तमन्ना को सीनों में बेदार कर
 तेरे आसमानों के तारों की खैर
 जमीनों के शब ज़िदावारों की खैर
 जवानों को सोजे जिगर बल्लश दे
 मेरा इश्क मेरी नज़र बल्लश दे

मेरी नाओ गरदाब से पार कर
 यह साबित है तू इसको सय्यार कर
 बता मुझको असरारे मर्गों हयात
 कि तेरी निगाहों में है कायनात
 मेरे दीदा ए तर की बे खाबियां
 मेरे दिल की पोशीदा बे ताबियां
 मेरे नालाए नीम शब का नयाज
 मेरी खलवतो अंजुमन का गुदाज
 उमंगें मेरी आरजूएं मेरी
 उमोदें मेरी जुस्तजूएँ मेरी
 मेरी फ़ितरते आईना रोज़गार
 गज़ालान अफ़कार का मर्गज़ार
 मेरा दिल मेरी रज्म गाहे हयात
 गुमानों के लशकर यकीं का सिबात
 यही कुछ है साकी मताए फ़कीर
 इसी से फ़कीरी में हूँ मैं अमीर
 मेरे काफ़ले में लुटा दे उसे
 लुटा दे ठिकाने लगा दे उसे
 दमा दम रवां है यमे ज़िन्दगी
 हर इक शै से पैदा रमे ज़िन्दगी
 इसीसे हुई है बदन की नमूद
 कि शोले में पोशीदा है मौजे दूद
 गिरां गरचे है सोहबते आबो गिल
 खुश आई इसे मेहनते आबो गिल
 यह साबित भी है और सय्यार भी
 अनासर के फंदों से बेजार भी
 यह वहदत है कसरत में हरदम असीर
 मगर हर कहीं बेचगूं बे नज़ीर

यह आलम यह बुतखानए शश जिहात
 इसी ने तराशा है यह सोमनात
 पसंद इसको तक्रार की खू नहीं
 कि तू मैं नहीं और मैं तू नहीं
 मनो तू से है अंजुमन आफरीं
 मगर ऐन महफल में खलबत नशीं
 चमक इसकी बिजली में तारे में है
 यह चान्दी मे सोने में पारे में है
 इसी के बियाबां इसी के बबूल
 इसी के हैं कांटे इसी के हैं फूल
 कहीं इसकी ताकत से कुहसार चूर
 कहीं इसके फंदे में जिबरीलो हर
 कहीं जुरा शाहीने सीमाब रंग
 लहू से चकोरों के आलूदा चंग
 कबूतर कहीं आशियाने से दूर
 फड़कता हुआ जाल में नासबूर
 फरेबे नज़र है सकूनो सिबात
 तड़पता है हर ज़र्राए कायनात
 ठहरता नहीं कारवाने वुजूद
 कि हर लहज़ा है ताज़ा शाने वुजूद
 समझता है तू राज है ज़िन्दगी
 फ़कत ज़ौके परवाज़ है ज़िन्दगी
 बहुत इसने देखे हैं पस्तो बुलंद
 सफ़र इसको मंज़िल से बढ़कर पसंद
 सफ़र ज़िन्दगी के लिए बर्गों साज़
 सफ़र है हकीकत हज़र है मजाज़
 उलझ कर सुलझने में लफ़्ज़त उसे
 तड़पने फड़कने में राहत उसे

हुआ जब इसे सामना मौत का
 कठिन था बड़ा थामना मौत का
 उतर कर जहाने मकाफात में
 रही जिन्दगी मौत की घात में
 मजाके दुई से बनी जौज जौज
 उठी दस्तो कुहसार से फ़ौज फ़ौज
 गुल इस शाख से टूटते भी रहे
 इसी शाख से फूटते भी रहे
 समझते हैं नादां इसे बे सिबात
 उभरता है मिटमिट के नकशे हयात
 बड़ी तेज जौलां बड़ी जूद रस
 अजल से अबद तक रमे यक नफ़स
 जमाना कि जंजीरे अय्याम है
 दमों के उलट फेर का नाम है
 यह मौजे नफ़स क्या है तलवार है
 खुदी क्या है तलवार की धार है
 खुदी क्या है राजे दरुने हयात
 खुदी क्या है बेदारिये कायनात
 खुदी जलवा बदमस्तो खलवत पसंद
 समुन्दर हैं इक बूंद पानी मे बन्द
 अंधेरे उजाले में है ताबनाक
 मनो तू में पैदा मनो तू से पाक
 अजल इसके पीछे अबद सामने
 न हद इस के पीछे न हद सामने
 जमाने के दरया में बहती हुई
 सितम इसकी मौजों के सहती हुई
 तजस्सुस की राहें बदलती हुई
 दमा दम निगाहें बदलती हुई

सुबुक इसके हाथों में संगे गिरां
 पहाड़ इसकी जबों से रेगे रवां
 सफ़र इसका अंजामो आगाज़ है
 यही इसकी तकवीम का राज है
 किरण चान्द में है शरर संग में
 यह बेरंग है डूब कर रंग में
 उसे वास्ता क्या कमो बेश से
 नशेबो फ़राज़ो पसो पेश से
 अज़ल से है यह कशमकश में असीर
 हुई खाके आदम में सूरत पज़ीर
 खुदी का नशेमन तेरे दिल में है
 फ़लक जिस तरह आँख के तिल मे है
 खुदी के निगहबां को है ज़हरे नाब
 वह नां जिस से जाती रही इसकी आब
 वही नां है इसके लिए अर्जमंद
 रहे जिससे दुनिया में गरदन बुलंद
 फ़रो फ़ाले महमूद से दर गुज़र
 खुदी को निगह रख अयाज़ी न कर
 वही सजदा है लायके एहतमाम
 कि हो जिससे हर सजदा तुझ पर हराम
 यह आलम यह हंगामे रंगो सौत
 यह आलम कि है ज़ेरे फ़रमाने मौत
 यह आलम यह बुत खाना ए चश्मो गोश
 जहाँ ज़िन्दगी है फ़कत खुदों नोश
 खुदी की है यह मंज़िले अव्वली
 मुसाफ़िर यह तेरा नशेमन नहीं
 तेरी आग इस खाकदां से नहीं
 जहाँ तुझसे है तू जहाँ से नहीं

बड़ेगा यह कोहे गिरां तोड़ कर
 तलिस्मे जमानो मकां तोड़ कर
 खुदी शोरे मौला जहां इसका सैद
 जमीं इसकी सैद आसमां इसका सैद
 जहां और भी है अभी बे नमूद
 कि खाली नहीं है जमीरे वुजूद
 हर इक मुन्तज़िर तेरी यलगार का
 तेरी शोखिये फ़िक्रो किर्दार का
 यह है मकसदे गर्दिशे रोज़गार
 कि तेरी खुदी तुझ पे हो आशकार
 तू है फ़ातहे आलमे खूबो ज़िश्त
 तुझे क्या बताऊं तेरी सर नविश्त
 हकीकत पे है जामा ए हर्फ़ तंग
 हकीकत है आईना गुफ़्तार जंग
 फ़रोज़ां है सीने में शमए नफ़स
 मगर ताबे गुफ़्तार कहती है बस
 “अगर एक सरे मूये बरतर परम
 फ़रोगे तजल्ली बिसोज़द परम”

जमाना

था नहीं है जो है न होगा यही है इक हर्फ़ महमाणा
 रीब तर है नमूद जिसकी उसी का मुश्ताक़ है जमाना
 ते सुराही से क़तरा क़तरा नए हवादिस टपक रहे हैं
 अपनी तसबीहे रोज़ो शब का शुमार करता हूँ दाना दाना
 एक से आशना हूँ लेकिन जुदा जुदा रस्मो राह मेरी
 त्सी का राकिब किसी का मरकब किसी को इब्रत का ताज़ियाणा

न था अगर तू शरीके महफिल कसूर मेरा है या कि तेरा मेरा तरीका नहीं कि रखलूं किसी की खातिर मए शबाना मेरे खमो पेच को नज्मी की आंख पहचानती नहीं है हदफ़ से बेगाना तीर उसका नज़र नहीं जिसकी आरिफ़ाना शफ़क नहीं मगरिबी उफ़क पर यह जूए खूं है यह जूए खूं है तलूए फ़र्दा का मुन्तज़िर रह कि बोशो इमरोज़ है फ़साना वह फ़िक्रे गुस्ताख़ जिसने उरियां किया है फ़ितरत की ताकतों को उसी की बेताब बिजलियों से ख़तर में है उसका आशियाना हवायें उनकी फ़िज़ायें उनकी समुन्दर उनके जहाज़ उनके गिरह भंवर की खुले तो क्योंकर, भंवर है तकदीर का बहाना जहाने नौ हो रहा है पैदा वह आलमे पीर मर रहा है जिसे फ़रंगी मकामरों ने बना दिया है कमार खाना हवा है गो तुन्दो तेज़ लेकिन चराग़ अपना जला रहा है वह मर्दे दरवेश जिसको हक़ने दिये हैं अंदाज़े खुसरवाना

—००—

फ़रिश्ते आदम को जन्नत से रुख़सत करते हैं

अता हुई है तुझे रोज़ो शब की बेताबी
ख़बर नहीं कि तू खाक़ी है या कि सीमाबी
सुना है खाक़ से तेरी नमूद है लेकिन
तेरी सरिश्त में है कौकबी व महताबी
जमाल अपना अगर ख़्वाब में भी तू देखे
हज़ार होश से ख़ुश्तर तेरी शकर ख़्वाबी
गिरांबहा है तेरा गिरयाए सहरगाही
इसी से है तेरे नख़ले कुहन की शादाबी
तेरी नवा से है बे पर्दा ज़िन्दगी का ज़मीर
कि तेरे साज़ की फ़ितरत ने की है मिज़राबी

रुहे अर्जी आदम का इस्तक़बाल करती है

खोल आँख जमीं देख फ़लक देख फ़िजा देख
मशरिक से उभरते हुए सूरज को ज़रा देख
इस जलवाए बेपर्दा को पर्दों में छुपा देख
अय्यामे जुदाई के सितम देख जफ़ा देख

बेताब न हो मारकए बीमो रिजा देख
है तेरे तसरफ़ में यह बादल यह घटाएँ
यह गुम्बदे अफ़लाक यह ख़ामोश फ़िजाएँ
यह क्रोह यह सहरा यह समुन्दर यह हवाएँ
थीं पेशे नज़र कल तो फ़रिश्तों की अदाएँ

आईनाए अय्याम मे आज अपनी अदा देख
समझेगा ज़माना तेरी आँखों के इशारे
देखेंगे तुझे दूर से गरदू के सितारे
नापेद तेरे बह्ले तख़य्युल के किनारे
पहुँचेंगे फ़लक तक तेरी आहों के इशारे

तामीरे खुदी कर असरे आहे रसा देख
खुरशीदे जहां ताब की जौ तेरे शरर मे
आबाद है इक ताज़ा जहाँ तेरे हुनर में
जचते नहीं बलशे हुए फ़िदौस नज़र में
जन्नत तेरी पिनहां है तेरे खूने ज़िगर में

ऐ पैकरे गुल कोशिशे पैहम की जज़ा देख
नालिन्दा तेरे ऊद का हर तार अज़ल से
तू जिन्से मुहब्बत का ख़रीदार अज़ल से
तू पीरे सनमख़ाना ए असरार अज़ल से
मेहनत कशो खूं रेज़ो कम आज़ार अज़ल से

है राकिबे तकदीरे जहाँ तेरी रज़ा देख

अपने पुत्र जावीद के नाम लंदन से एक पत्र

दियारे इश्क में अपना मुकाम पैदा कर
 नया जमाना नये सुबुह शाम पैदा कर
 खुदा अगर दिले फ़ितरत शनास दे तुझको
 सकूते लाला व गुल से कलाम पैदा कर
 उठा न शीशा गराने फरंग के अहसां
 सिफ़ाले हिन्द से मीना व जाम पैदा कर
 मैं शाख़ेताक हूँ मेरी गज़ल है मेरा समर
 मेरे समर से मये लाला फ़ाम पैदा कर
 मेरा तरीक़ अमीरी नहीं फ़कीरी है
 खुदी न बेच गरीबी में नाम पैदा कर

अरमुग़ाने हिजाज़ से

एक वृद्ध बलोच की शिक्षा अपने पुत्र को

हो तेरे बियाबां की हवा तुझको गवारा
 इस दश्त से बेहतर है न दिल्ली न बुख़ारा
 जिस सिम्त में चाहे सिफ़ते सैले रवां चल
 वादी यह हमारी है वह सह्रा भी हमारा
 शैरत है बड़ी चीज़ ज़हाने तगो दौ में
 पहनाती है दरवेश को ताजे सरे दारा
 हासिल किसी कामिल से यह पोशीदा हुनरकर
 कहते हैं कि शीशे को बना सकते हैं ख़ारा

अफराद के हाथों में है अकवाम की तकदीर
हर फ़र्द है मिल्लत के मुकद्दर का सितारा
महरूम रहा दौलते दरया से वह गव्वास
करता नहीं जो सुहबते साहिल से किनारा
दीं हाथ से देकर अगर आजाद हो मिल्लत
है ऐसी तिजारत में मुसलमां का खिसारा
दुनिया को है फिर मारकए रूहो बदन पेश
तहज़ीब ने फिर अपने दरिन्दों को उभारा
अल्लाह को पामरदिये मोमिन पे भरोसा
इबलीस को योरूप की मशीनों का सहारा
तकदीरे उमम क्या है कोई कह नहीं सकता
मोमिन की फ़िरासत हो तो काफ़ी है इशारा
इख़लासे अमल मांग नयागाने कुहन से
“शाहां चे अजब गर बिनवाज़न्द गदारा”

रुबाइयात

(चौपाइयाँ)

मेरी शाखे अमल का है समर क्या
तेरी तकदीर की मुझको खबर क्या
कली गुल की है मुहताजे कशूब आज
नसीमे सुबहे फ़र्दा पर नज़र क्या

फ़रागत दे इसे कारे जहाँ से
 कि छूटे हर नफ़स के इस्तिहां से
 हुआ पीरी से शैतां कुहना अंदेश
 गुनाहे ताज़ा तर लाय कहाँ से

दिगर गूं आलमे शामो सहर कर
 जहाने खुशको तर जेरो जबर कर
 रहे तेरी जुदाई दाग से पाक
 मेरे बे जौक सिजदों से हज़र कर
 गरीबी में हूँ महसूदे अमीरी
 कि ग़ैरत मंद है मेरी फ़कीरी
 हज़र इस फ़क्रो दरवेशी से जिसने
 मुसलमां को सिखा दी सर बज़ीरी

ख़िरद की तंग दामानी से फ़रयाद
 तजल्ली की फ़िरावानी से फ़रयाद
 गवारा है इसे नज़्ज़ारा ए ग़ैर
 निगाह की ना मुसलमानी से फ़रयाद

कहा इकबाल ने शैख़े हरम से
 तहे मेहराबे मसजिद सो गया कौन ?
 निदा मसजिद की दीवारों से आई
 फ़रंगी बुत कदे में खो गया कौन ?

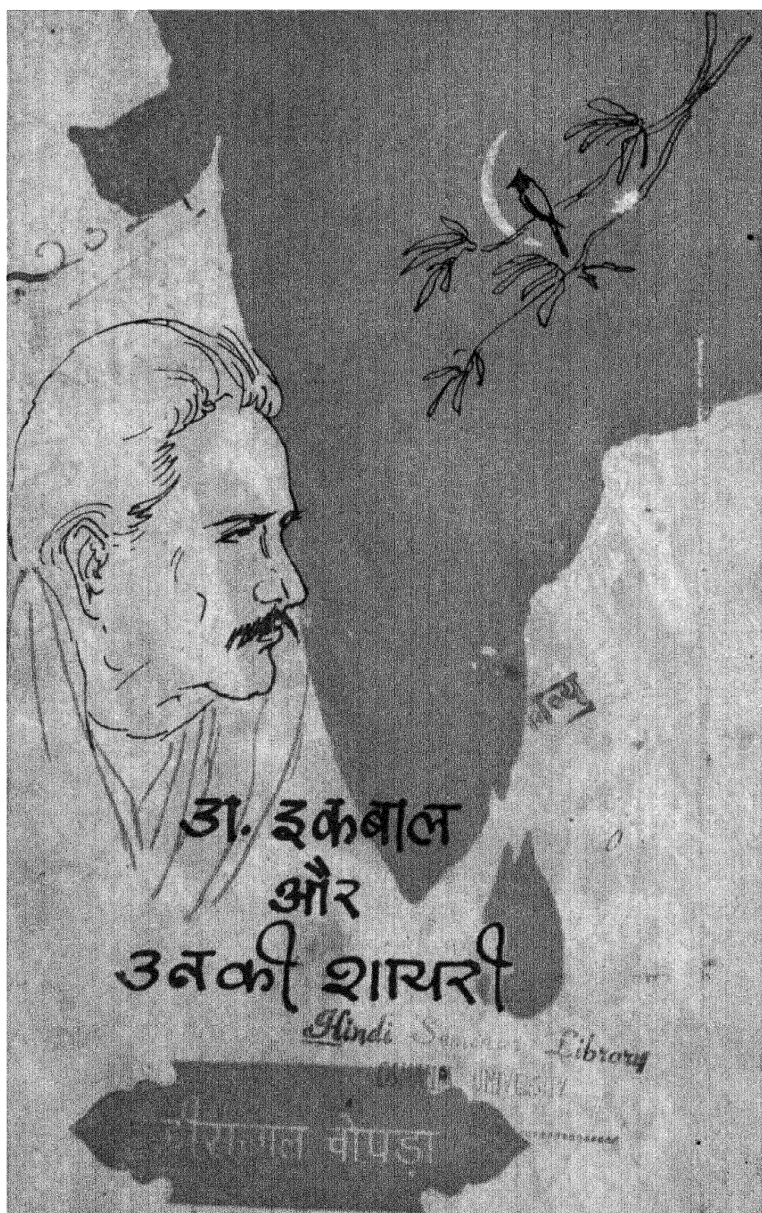
कुहन हंगामा हाथ आर्जू सर्व
 कि है मर्दे मुसलमां का लहू सर्व
 बुतों को मेरी लादीनी मुबारक
 कि है आज आतिशे अल्लाह हू सर्व
 हदीसे बंदा ए मोमिन दिल आवेज़
 जिगर पुर खूं नफ़स रौशन निगह तेज़

मुयस्सर हो सके दीदार इसका
 कि है वह रौनके महफिल कम आभेज
 तमीजे खारो गुल से आशकारा
 नसीमे सुबुह की रौशन जमीरी
 हिफाजत फूल की म्मकिन नहीं है
 अगर कांटे में हो खूए हरीरी
 न कर जिक्रे फिराको आशनाई
 कि अस्ले ज़िन्दगी है खुद नुमाई
 न दरया का जियां है नै गुहर का
 दिले दरया से गौहर को जुदाई
 तेरे दरयां में तूफां क्यों नहीं है
 खुदी तेरी मुसलमां क्यों नहीं है
 अबस है शिकवा ए तकवीरे यजदां
 तू खुद तकवीरे यजदां क्यों नहीं है
 खिरद देखे अगर दिल की निगह से
 जहां रौशन है नूरे ला इलाह से
 फ़कत इक गर्दिशे शामो सहर है
 अगर देखें फ़रोगे मेहरो माह से
 कभी दरिया से मिस्ले मौज उभर कर
 कभी दरिया के सीने में उतर कर
 कभी दरिया के साहिल से गुजर कर
 मुकाम अपनी खुदी का फ़ाशतर कर

सर अकबर हैदरी—मुख्य मंत्री हैदराबाद दक्कन के नाम

था यह अल्लाह का फ़रमां कि शिकोहे परवेज़
 दो कलन्दर को कि है इसमें मलूकाना सिफ़ात
 मुझसे फ़रमाया कि ले और शहिनशाही कर
 हुस्ने तदबीर से दे आनी व फ़ानी को सिबात
 मैं तो इस बारे अमानत को उठाता सरे दोश
 कामे दरवेश में हर तल्ल है मानिन्दे निबात
 गैरते फ़क्र मगर कर न सकी इसको कबूल
 जब कहा इसने यह है मेरी खुदाई की ज़कात

—:०:—



डा. इकबाल
और
उनकी शायरी

Hindi Sanskrit Library
UNIVERSITY

पौराणिक वीरपदा

